CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊँची अटरिया रंग भरी

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी

द्वारा स्वरलिपि एवं परिचय सहित
लोकगीत संग्रह

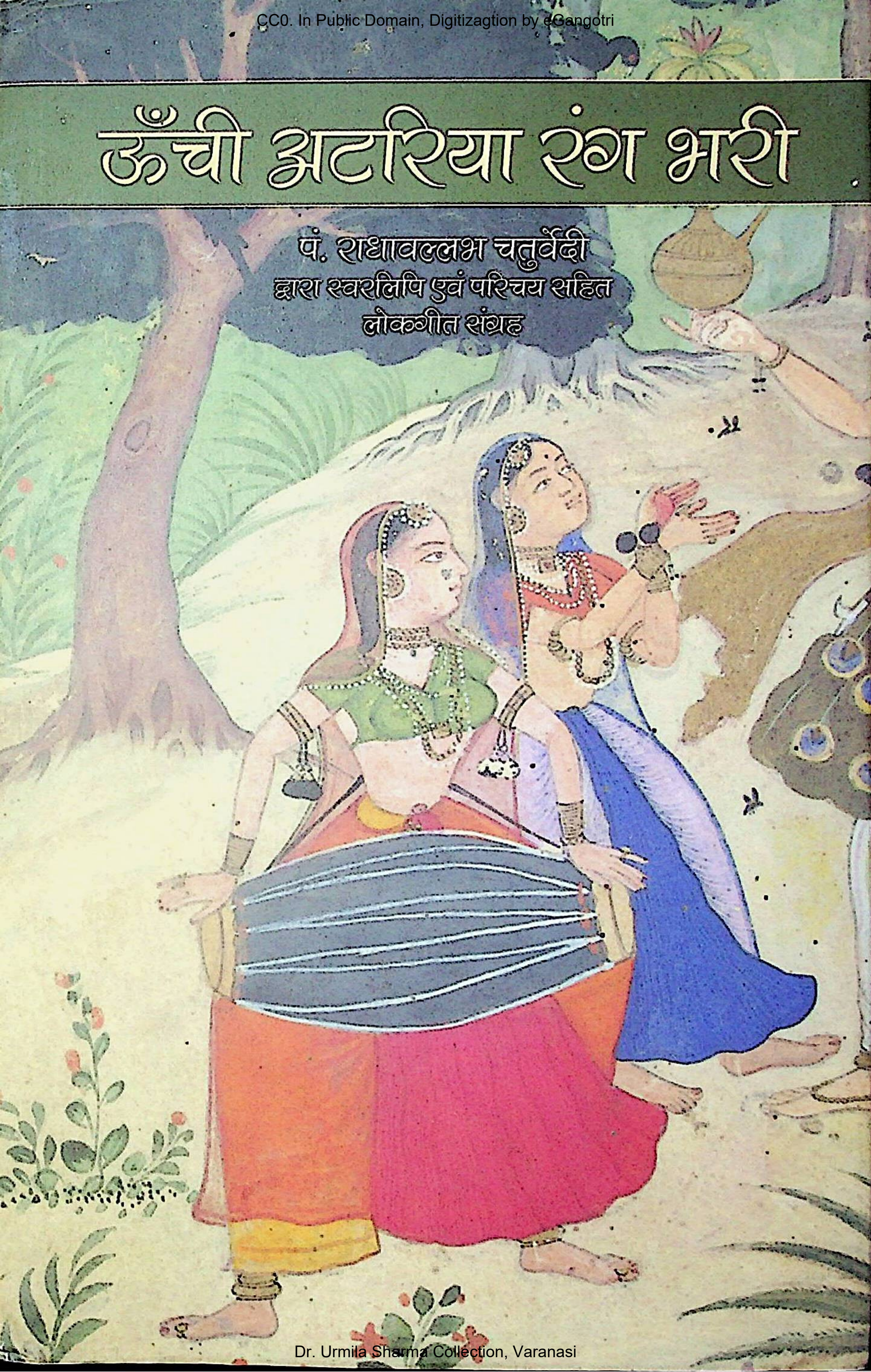

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

... Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकगीत संकलनकर्ता एवं उनकी धुनों की स्वरलिपि तैयार करने वाले संगीत शिल्पी पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी का जन्म 12 जनवरी, 1917 की सकट चौथ को मुरादाबाद में हुआ था। एक ओर पिता उन्हें पढ़ा–लिखाकर दरोग़ा बनाना चाहते थे, दूसरी ओर मां से विरासत में पाये संगीत के संस्कार वे निरंतर अपने खून में विकसित करते रहे। संगीत साधना के लिए उन्होंने किशोर उम्र में घर छोड़ दिया। लखनऊ आ गये।

लखनऊ में न केवल अपनी संगीत की शिक्षा पूरी की, बल्कि अपनी प्रतिभा के बल पर इसी शहर को अपना कार्यक्षेत्र भी बनाया। सुगम संगीत, लोकसंगीत एवं शास्त्रीय संगीत में वे समान रूप से पारंगत थे। परिमार्जित कंठ, शास्त्रीय संगीत का अगाध ज्ञान और शब्दों के भावानुसार शास्त्रीय स्वर देने में उन्हें महारत हासिल थी।

वर्ष 1940 में भातखंडे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ से संगीत विशारद की उपाधि पाकर भी लोकसंगीत के प्रति उनका मोह जारी रहा। इसी दौरान उनकी नियुक्ति आकाशवाणी लखनऊ में लोक संगीतकार के पद पर हुई। उन्होंने सुदूर ग्रामीण अंचलों से दुर्लभ लोकगीत और लोकधुनों की खोज की। आकाशवाणी लखनऊ में उनका संग्रह किया। उनके निर्देशन में निर्मित एवं प्रसारित 'पंचायत घर' कार्यक्रम अवधी भाषा का बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम था। कुछ लोकगीतों में तो उन्होंने शास्त्रीय संगीत का बहुत सुंदर समावेश किया। इनमें घाटो, चैती, बिदेसिया आदि लोकगीत उल्लेखनीय हैं।

अपनी सूक्ष्म दृष्टि से राधावल्लभ जी ने लोकधुनों को उनके शुद्ध रूप में श्रोताओं के सम्मुख रखकर उन्हें उनका उचित स्थान प्रदान किया। अवध के लोकगीतों पर उन्होंने विशेष रूप से चिंतन व मनन किया और उन्हें स्वरबद्ध करके आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भी कर दिया।

...arma Collection, Va...nasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5·5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊँची अटरिया रंग भरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊँची अटरिया रंग भरी

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी

द्वारा

स्वरलिपि एवं परिचय सहित लोकगीत संग्रह

संगीत नाटक अकादेमी
नयी दिल्ली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊँची अटरिया रंग भरी

राघावल्लभ चतुर्वेदी (संकलनकर्ता एवं लिपिकार)

UNCHI ATARIYA RANG BHARI

Radhavallabh Chaturvedi (Writer & Compiler)

ISBN: 978-81-931657-8-2

प्रथम संस्करणः उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, 1977

नया संस्करणः संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली, 2018

प्रकाशक

संगीत नाटक अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35 फ़िरोज़ शाह रोड
नयी दिल्ली 110 001
फ़ोनः + 91 11 23387246, 23387248
फैक्सः + 91 11 23382659
email: mail@sangeetnatak.gov.in

© संगीत नाटक अकादेमी, नयी दिल्ली, 2018

मूल्यः ₹ 625/-

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

जैनेसिस प्रिंटर्स, ओखला, नयी दिल्ली 110019 में मुद्रित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकीय
(नया संस्करण)

संगीत नाटक अकादेमी श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी की पुस्तक 'ऊँची अटरिया रंग भरी' के नये संस्करण को प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करती है।

लोकगीत एक तरह से किसी भी देश के अलिखित दस्तावेज़ होते हैं। लोकजीवन का दुख-दर्द, हर्ष-उल्लास लोक संगीत का प्राण तत्व रहा है। कला समीक्षक लोक-कलाओं को शास्त्रीय कलाओं की जननी मानते हैं। उनके अनुसार शास्त्र का आधार ही लोक होता है। दरअसल लोकगीतों में देहात के नगण्य, दलित और अभावग्रस्त स्त्री-पुरुषों का वह जीवन-दर्शन नत्थी होता है जो किसी कला के शास्त्रीय स्वरूप में नहीं होता।

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने लोकगीतों पर विशेष रूप से चिंतन-मनन किया। एक शोधार्थी की तरह दूर-दूर तक ग्रामीण अंचलों की यात्रा की। वहां के लोकगायकों को मनोयोग से सुना और लोकगीतों का संग्रह किया।

स्वभाव से रूढ़िभंजक पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी का वास्तविक कार्यक्षेत्र लोकगीतों का आदिम संसार बना। एक ओर भातखंडे संगीत महाविद्यालय से संगीत विशारद होने के साथ वे ध्रुपद, धमार, ख़याल, ठुमरी, ग़ज़ल जैसी शैलियों के निष्णात गायक थे, दूसरी ओर लोकगीतों को रागबद्ध करने में शास्त्रीय निपुणता की एक बड़ी आवश्यकता को उन्होंने पूरा किया।

लोकगीतों को संकलित व स्वरलिपिबद्ध करके संगीत शिल्पी पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत के मध्य सेतु बांधकर उन्हें भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

पुस्तक का नाम एक बुंदेली विवाह गीत की प्रथम पंक्ति के आधार पर 'ऊँची

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अटरिया रंग भरी' रखा गया। इसमें पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने विधिवत लोकगीतों का वर्गीकरण किया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के लोकगीतों का संकलन स्वरलिपि समेत इस पुस्तक में शामिल है।

एक शताब्दी पहले जन्मे पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने वर्षों पहले लोकगीतों के संरक्षण का जो बीड़ा उठाया उस क्षेत्र में उनका एकाधिकार आज भी सर्वमान्य एवं निर्विवाद है।

श्री चतुर्वेदी की पुस्तक का पहला संस्करण 1977 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था जिसका पाठकों द्वारा स्वागत किया गया। आशा है कि इस पुस्तक के नये संस्करण का भी उसी तरह स्वागत किया जायेगा।

दिनांक 15 फरवरी, 2018

शेखर सेन
अध्यक्ष
संगीत नाटक अकादेमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशकीय
(प्रथम संस्करण)

अपने देश के विभिन्न प्रदेशों के लोकगीतों में, भारत के जनमानस का उल्लास और उसकी आकांक्षाएं बहुत भावपूर्ण रीति में चित्रित हुई हैं। काव्य की दृष्टि से जो सहज, सुबोध और मार्मिक भावों की धारा उनके द्वारा प्रवाहित हुई है वह अनुपम है। स्वर और लय की दृष्टि से भी ये गीत बहुत ही मनमोहक हैं। इन गीतों में हमारे अभिजात संगीत के बीज का भी अंशतः दर्शन होता है।

काव्य की दृष्टि से तो इन गीतों का कुछ अध्ययन हुआ है और अंशतः इनके कुछ संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं, परन्तु संगीत की दृष्टि से इनपर बहुत कम कार्य हुआ है। श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी, आकाशवाणी, लखनऊ में लोकसंगीत के प्रसार का कार्य कई वर्षों से कर रहे थे। उन्हें उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीत के गायकों को सुनने और उनके गीतों को प्रसारित करने का अपूर्व अवसर प्राप्त था। वह केवल प्रसारक के पद के उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते थे, वह लोकगीत के मर्मज्ञ और प्रेमी भी थे। अतः लोकगीत के जो भी अच्छे गायक आकाशवाणी में प्रसारण के लिये आते थे, उनके गीतों का वह सुरुचिपूर्ण चयन करते थे और उन्हें स्वरलिपि में भी निबद्ध करते थे। हमारी यह बड़ी इच्छा थी कि इस संग्रह को हम उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से प्रकाशित करें। दुर्भाग्यवश श्री राधावल्लभ चतुर्वेदी का निधन हो चुका था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रम्भा चतुर्वेदी और उनकी आत्मजा कुमारी नीलम चतुर्वेदी के सहयोग से यह संग्रह हमें मिला और उन दोनों की इसके प्रकाशन की अनुमति भी हमें प्राप्त हो गयी। हम इन दोनों के बहुत आभारी हैं कि उन्होंने इस सुन्दर रचना को प्रकाशित करने के लिये अकादमी को अपनी अनुमति दी है। यह रचना ''ऊंची अटरिया रंग भरी'' प्रसिद्ध गाने के शीर्षक से प्रकाशित हो रही है। इसमें सरिया, सोहर, अन्नप्राशन, मूंड़न,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ, विवाह, द्वारचार, कलेवा, जेवनार, विदाई, चकिया, पनघट, कजरी, चौमासा, चैती, सोहनी, झूला, झूमर, रसिया इत्यादि कई प्रकार के गीत स्वरलिपि में प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रत्येक प्रकार के गीत का पहले संक्षिप्त वर्णन किया गया है, उसके बाद वह गीत स्वर और लय में मुद्रित किया गया है।

आशा है संगीत प्रेमी इस संग्रह का स्वागत करेंगे।

—जयदेव सिंह

अध्यक्ष

उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी

दिनांक 5 फरवरी, 1977

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे चाचा

जिसका जीवन न संगीत की तरह ललित रहा हो और न लोकगीतों की तरह स्वाभाविक, ऐसे कलाकार की जीवनी किसी सीमित लेख में अंकित कर पाना मेरे ऐसे सामान्य व्यक्ति के लिए अत्याधिक कठिन है।

लोकगीत संकलनकर्ता एवं उनकी धुनों को स्वरलिपि देने वाले संगीत शिल्पी राधावल्लभ के पिता पण्डित टीकाराम चतुर्वेदी अंग्रेज़ों के ज़माने में नाज़िर थे। फ़रमान बरदारी के लिए वे जितने विनम्र थे, उतने ही घर के सदस्यों पर अपनी सत्ता और अधिकार को जताने के लिए खूंख़ार भी।

पण्डित टीकाराम चतुर्वेदी की छठी सन्तान के रूप में बालक राधावल्लभ का जन्म 12 जनवरी, 1917 को मुरादाबाद में हुआ था। स्कूल की उम्र से ही उनकी पीठ पर पिता के कोड़े ऐसे पड़ने लगे, मानो किसी घोड़े को ज़िन्दगी के मैदान में उतरने की ट्रेनिंग दी जा रही हो। छात्र राधावल्लभ को किताबों और पिता से समान भय लगता था। वे अपने पिता को परिवार का दरोगा समझते थे। पिता उन्हें पढ़ा-लिखाकर दरोगा बनाना भी चाहते थे। पिता को अपने पुत्र की यह उद्दण्डता पसन्द नहीं थी कि वह 'संगीत' जैसी औरताना चीज़ क़ी ओर बचपन से ही लपक जाते।

स्व. राधावल्लभ के स्वर में बेहद मर्दानगी थी। मां से विरासत में पाये संगीत के संस्कार, वे निरन्तर अपने खून में विकसित करते रहे। पढ़ाई-लिखाई उनके सामने सज़ा की तरह रखी गयी थी। इसलिए, वे किताबों से भरे बस्ते को सज़ा में पाया हुआ बोझ समझते थे। इधर-उधर की किताबें पढ़ने में उनकी रुचि अधिक थी। अपनी रुचि के अनुसार पढ़ी किताबों से स्वाध्याय तो प्रबल हुआ, लेकिन वे कोई बड़ी डिग्री नहीं ले सके। घर में उन्हें अपना दम घुटता नज़र आया तो 18 वर्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की अवस्था में घर छोड़कर लखनऊ भाग आये। भागने के पीछे पिता की निर्मम मारपीट और संगीत के प्रति अतिरिक्त अनुराग, कारण बनकर उन्हें जोखिम उठाने की ताक़त दे रहे थे।

राधावल्लभ के अन्दर सदैव ही एक रुढ़िभंजक, विद्रोही प्रकृति का मनुष्य मचला करता था। अपनी साफ़गोई और ईमानदारी के कारण वे प्रारम्भ में तो प्रत्येक मिलने वाले को अत्याधिक विचलित कर देते थे किन्तु, जो उनको एक बार पहचान लेता था, वह सदैव के लिए उनका प्रियपात्र बन जाता था। लखनऊ जैसे नगर में, जहां के 'लखनौव्वा' मिजाज़ की पर्तों के भीतर असलियत पहचाननी मुश्किल हो जाती है, उन्होंने न केवल अपनी संगीत की शिक्षा पूरी की, बल्कि अपनी प्रतिभा के बल पर इसी नगर को अपना कार्यक्षेत्र भी बनाया। आगे चलकर उनका वास्तविक कार्य क्षेत्र 'लोकगीतों' का 'आदिम संसार' बना। किन्तु, लखनऊ पर वे चारों जानिब से फ़िदा थे।

राधावल्लभ के पिता की मृत्यु के बाद, युवा भाइयों के (एक भाई को छोड़ कर) परिवार में कन्या-पक्ष प्रबल रहा। उनके साथ दुर्भाग्य इस कदर संलग्न रहा कि भाइयों की धड़ाधड़ अकाल मृत्यु होती रही। भाइयों की विधवाओं, उनकी नादान कन्याओं, अपनी उन बहिनों को जिन्होंने शादी नहीं की, या जिन्होंने शादी की लेकिन उनके बच्चे नहीं हुए, उन सबको उन्होंने अपनी सीमित आय में, असीमित सुख पहुंचाने के निरन्तर प्रयास में, अपनी पत्नी तथा अपनी एकमात्र पुत्री (इन पंक्तियों की लेखिका) को सदा हाशिये पर रखा।

विशाल परिवार के लिए राधावल्लभ जी का संगीत, रोटी, कपड़ा, जूते, स्कूली फ़ीस, सिनेमा तथा खाने-पीने की चटपटी चीज़ों के अलावा कुछ नहीं था। जबकि वे खुद, केवल संगीत को एक सामाजिक सार्थकता देने के लिए, अपने ज़िन्दा रहने को ज़रूरी समझते थे। वे दूसरों की चिन्ता में इतने खोये से रहते थे कि अपने बारे में सोचने का उन्हें कोई वक़्त ही नहीं मिला।

मुझे (इन पंक्तियों की लेखिका को) पिता जी (राधावल्लभ जी) हमेशा 'बेटा' ही समझते रहे। मैं यह कमी सदैव महसूस करती रही कि 'पिता' का जैसा प्यार मुझे मिलना चाहिए था—वह नहीं मिला। क्योंकि, मैं उन्हें 'पिता' भी नहीं कहती थी। 'चाचा' कहकर जीवन भर काम चलाया। परिवार में बड़ी दीदियों के कारण, मैं उन्हें 'चाचा' कहकर ही अपने ज़्यादा क़रीब पाती थी। 'पिता' कहते ही या तो शेष परिवार से मैं अलग हो जाती थी या फिर वे 'सम्बन्धों के समाजवाद' में गड़बड़ पाते थे। इसलिए, दीदियों का दिया हुआ 'चाचा' सम्बोधन, आज भी मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'पिता' से भी अधिक स्फुरण देता है। भले ही दीदियों के लिए चाचा का मतलब सिर्फ 'चाचा' हो।

शरारती वे (चाचा) मरते दम तक रहे। मुझे ऐसा लगता है, जैसे 'चाचा' (राधावल्लभ जी) की मृत्यु भी, उनके द्वारा मां के और मेरे साथ की गयी एक शरारत है। वे देवताओं का सारा श्रेय किसी इन्सान को देना चाहते थे। इससे चीज़ों और सम्बन्धों को समझने के उनके भिन्न दृष्टिकोण का पता चलता था।

बचपन में एक बार मेरे दादाजी ने 'चाचा' को ठाकुर जी की पूजा का काम सौंपा। जाड़ों के दिन थे। पेड़ धीरे-धीरे अपने पत्तों को त्यागते जा रहे थे। दादाजी चाहते थे कि अपने कुछ संस्कार पुत्र पर त्यागता जाऊं—सो भगवान की प्रतिमा को नहलाने, आरती उतारने और भोग लगाने तक का सारा काम 'चाचा' के भरोसे छोड़ दिया गया। जिस दिन जाड़ा कस कर पड़ रहा होता वे दादाजी से पूछते—'क्या आज भी भगवान को नहलाकर आरती उतारूं?'

प्रश्न सुनकर मूर्तिपूजक दादा जी के मन पर बहुत ठेस पहुंचती। वे चाचा को 'मूर्ख' और 'नास्तिक' कहकर फटकारते। एक ऐसी ही किसी ठण्डी-सी हड्डियां कंपाने वाली सुबह को 'चाचा' ने आरती उतारकर जलती हुई बत्तियों सहित भगवान की आलमारी को पूरी तरह बन्द कर दिया। थोड़ी देर में घर भर में आग लगने का हल्ला हो गया। आलमारी जलकर पूरी तरह राख हो गयी। क्रोधी दादा जी के क्रोध का पारावार नहीं था। 'चाचा' की पिटाई हुई। पिटते हुए उन्होंने कहा "मैंने तो, देवताओं को जाड़ा न लगे, इसलिए जलती हुई आरती छोड़कर आलमारी बन्द की थी।"

हर बात के लिए 'चाचा' का एक अलग ही तर्क हुआ करता। वे सही अर्थों में आदमी होने को बहुत अहमियत देते थे। इसीलिए उनके मित्रों में, उनके शिष्यों और परिचितों में, उनके प्रति आज भी अपार स्नेह भाव व श्रद्धा है। उनके सुख-दुख के प्रति रुचि लेने में कई प्रतिष्ठित लोग रहे हैं जिन्हें वे मित्र व हितैषी के रूप में आदर की दृष्टि से देखते थे। वे गुणियों की कृपा और स्नेह से प्रभावित होते थे तथा दुष्टों की 'प्रियवाणी' से अत्यन्त भयाकुल। उन्होंने अनेक निर्धन छात्रों को अपनी ट्यूशनों के पैसों से चुपके-चुपके सहायता पहुंचायी। इस बात का पता शेष परिवार को तब लगा जब उनकी मृत्यु के बाद, इस तरह के सर्वथा अज्ञात अपरिचित छात्र संवेदना प्रकट करने, हमारे पास आये। वे अपनी सामर्थ्य से अधिक दयालु प्रकृति के थे, शायद इसीलिए वे कभी अव्यावहारिक व कड़वे नहीं देखे गये।

खाने-पीने की चीज़ों का 'चाचा' को भारी शौक़ था। मेहमानवाज़ी उनकी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कमज़ोरी थी। उद्दाम शालीनता से रहने का उन्हें मर्ज़ था। आत्मविश्वास उनमें ग़ज़ब का था। किसी की भी बुद्धि और गुण के वे बड़े क़ायल थे। कुनबा जोड़ने का उन्हें बेहद शौक़ था।

'चाचा' के सहकर्मी और अवधी के सुप्रसिद्ध कवि एवं व्यंग्यकार श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' के शब्दों में—

"राधावल्लभ जी की नियुक्ति आकाशवाणी लखनऊ के 'पंचायतघर' में लोक संगीतकार के पद पर हुई थी। इस प्रकार हम एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में आये। मैं उन्हें लोक रचनायें देता और वे उन्हें लोक स्वर देकर प्रसारित करते।

सुगम संगीत तथा लोक संगीत में तो राधावल्लभ जी प्रवीण थे ही, शास्त्रीय संगीत में भी पारंगत थे। उनके संरक्षण में 'पंचायत घर' के लोकगीतों की धूम मच गयी। नये पुराने लोकगीत कभी एकल स्वर में, कभी युगल गान तथा कभी सामूहिक गान के रूप में प्रस्तुत किये जाते थे। परिमार्जित कंठ और शास्त्रीय संगीत के अगाध ज्ञान के कारण भी उनकी कला में चार चांद लग गये थे। शब्दों के भावानुसार शास्त्रीय स्वर देने में, उन्हें महारत हासिल थी। 'जय-जय लछिमी गनेस', 'नाचत नटराज आज', 'बाजत बांसुरी मृदंग' इत्यादि मेरे द्वारा रचित ध्रुव पदों को, जो स्वर उन्होंने प्रदान किये थे, वे अब भी बहुत से श्रोताओं तथा कलाकारों के कानों में गूंजते रहते हैं। उनके गाये हुए गीत जब भी आकाशवाणी से प्रसारित होते हैं सम्पूर्ण व्यक्तित्व समेटे हुए उनकी काया परिचितों के मध्य साकार हो उठती है। शास्त्रीय संगीत के वे ऐसे पण्डित थे कि बड़े-बड़े नामी कलाकारों का एक भी स्वर ग़लत लगने पर, वह रिहर्सल के समय स्टूडियो में ही, उन्हें टोक देते थे। याद्दाश्त इतनी अच्छी थी कि वर्षों पूर्व गाये हुए गाने भी उनके स्मृति-पटल पर अंकित रहते थे।

जितने अच्छे कलाकार थे, उतने ही अच्छे वे इन्सान भी थे। राधावल्लभ जी स्पष्टवादी, परिश्रमी, संवेदनशील, हंसमुख तथा विनोदप्रिय व्यक्ति थे। कुछ वर्षों पूर्व, जब मैं अस्वस्थ पड़ा था, तब वे स्वयं अस्वस्थ होते हुए भी, मुझे देखने आते और देव, बिहारी, पद्माकर, रत्नाकर तथा अनेक कवियों शायरों की ललित रचनाएं सुनाकर, मुझे मानसिक स्वस्थता प्रदान करने का मांगलिक प्रयास किया करते थे।

उनके निधन से आकाशवाणी ने एक ऐसा कलाकार खो दिया है, जिसकी पूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। मित्र मण्डली से एक अच्छा मित्र, कलाकारों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से एक अच्छा सहयोगी और इन्सानों से एक अच्छा इन्सान बिछुड़ गया है।''

'चाचा' के जीवन काल में ही, उनकी प्रतिभा को गांवों की जनता और शहरों के संस्कारित श्रोताओं की प्रियता प्राप्त हो गयी थी। अपनी संगीत साधना पर उन्होंने कभी भी भौतिक साधनहीनता को हावी नहीं होने दिया। कभी-कभी अपनी आर्थिक विपन्नता में, जिस रईसी का बोध वे परिवार पर छिड़कते थे, उस वजह से उनकी परेशानियां अच्छी ख़ासी बढ़ जाती थीं। लेकिन, उनके व्यक्तित्व का सबसे मज़ेदार पहलू भी यही था कि वे कष्ट और बेचैनियों में से ही अपने धैर्य की खुराक वसूलते थे। मन में संगीत की समृद्धि और उदात्तता को संजोये हुए, 'लालकुआं' के जिस फटीचर इलाक़े में, उन दिनों वे रहते थे, उसके सम्बन्ध में लखनऊ से प्रकाशित होने वाली, तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्रिका 'वर्तिका' में ''लोक कलाकार राधावल्लभ'' शीर्षक से स्व. नन्दराम जी ने एक लेख लिखा था, जिसके एक अंश को मैं यहां उद्धरित कर रही हूं। इससे उनकी तात्कालिक स्थिति का ज्ञान पाठकों को हो जायेगा।

''आज के समाज में अभी भी गायकों को जितना ऊंचा दर्जा दिया जाना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है।

संगीत, कोई 4-6 दिन में पारंगत कर देने की कला नहीं है। साधक, मन-प्राण से, रागों की गहरायी में डूबकर उसकी थाह लेता है। किन्तु, इतना सब करने के बाद भी सितम क्या होता है। कलाकार को गुज़ारे के लिए, कला के साथ बलात्कार करना पड़ता है। पूंजीवादी व्यवस्था के सामने जाकर, दरवाज़े पर भीख मांगनी होती है, और कलाकार राधावल्लभ भी इसके शिकार हैं।

यह सही है कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से लेकर फ़कीर तक ने इस जन कलाकार को सुना और सिर धुना है। लेकिन, इससे राधावल्लभ की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हुई है। इसी कारण वह लखनऊ नगर में, लालकुएं की एक गन्दी गली में, दो कमरों में पूरी गृहस्थी के साथ जीवन यापन के लिए विवश हैं। कभी उस गली को पार कर उनके घर जाइए, तो उत्तर भारत का यह श्रेष्ठ लोक संगीतज्ञ क्षमा मांगते हुए कहेगा—'भाई माफ़ कीजिएगा, मेरे यहां बैठने को यह टूटा तख़्त है, ज़रा पीछे होकर आराम से बैठ जाइए।' क्षण भर के लिए उस जगह की कल्पना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कीजिए जहां लड़कों का हुड़दंग, मेहतरों की कांय-कांय और मोटरों की पों-पों से रियाज़ करते कलाकार की सारी तन्मयता टूक-टूक हो जाती है।

लेकिन कठिनाईयों से जूझना राधावल्लभ जी की अपनी विशेषता है, अपना व्यक्तित्व रहा है। भयंकर आर्थिक संकटों और अड़चनों के बावजूद, राधावल्लभ 'बल्लभी सारंग' को सिद्ध करने के संकल्प में लगे हैं। एक ओर आर्थिक भार का दबाव, मजबूरियां और कला को अपने उच्च स्थान से गिराकर बाज़ारू बना देने का चौतरफ़ा दबाव, दूसरी ओर संगीत की महान परम्परा को निर्भीकतापूर्वक ऊंचा और ऊंचा ले जाने की तमन्ना, उनके नेत्रों में बेचैनी की लपट बन कर जलती रहती है। यही कारण है कि वे खोये-खोये से रहते हैं। वह बड़े-बड़े जलसों में गाते हैं, रेडियो पर गाते हैं और सीलोनी कलाकारों के आमंत्रण पर सीलोन जाने की भी सोच रहे हैं। लेकिन, उनको सन्तोष नहीं है। कितने दुख की बात है कि वर्तमान उत्तर-प्रदेश की सरकार इस सिरमौर गायक के महत्व की ओर ध्यान नहीं दे रही है।

जब कभी आप उनके घर जायेंगे, तब नीलम अपनी तोतली भाषा में उत्तर देगी 'ताता दी है नहीं, तहीं दये हैं...... ।' और कोई नहीं कह सकता कि वे कहां गये हैं। आपको यही सोचकर सन्तोष करना पड़ेगा कि कहीं महफ़िल जुड़ गयी होगी और अब चौबे जी को न दिन की सुधि और न रात की।

40 वर्ष में राधावल्लभ जी को अपने उस भविष्य पर विश्वास है, जब मनुष्य मुक्त होगा, कला पूंजी की दासी न होगी और गायक नये विहान का गौरव मुक्त गीत गायेगा।.....लेकिन ऐसा कब होगा.......???"

'चाचा' के अनेक शिष्य हैं। वे आज भी बड़ी श्रद्धा और लगन से उनसे प्राप्त शिक्षा का उपयोग करने की दिशा में सचेष्ट हैं। उन्हीं में से एक योग्य शिष्य श्री श्याम किशोर रस्तोगी भी हैं। उन्होंने बताया—

"राधावल्लभ जी का संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ से संगीत विशारद की उपाधि पाकर भी लोक-संगीत के प्रति उनका मोह जारी रहा। उन्होंने अथक परिश्रम करके उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का संकलन किया। अपनी सूक्ष्म दृष्टि से लोकधुनों को उनके शुद्ध रूप में श्रोताओं के सम्मुख रखकर, उन्हें, उनका उचित स्थान प्रदान किया। अवध के लोकगीतों पर उन्होंने विशेष रूप से चिन्तन व मनन किया था और उन्हें स्वरबद्ध करके आगामी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भी कर दिया है। यूं तो राधावल्लभ जी ध्रुपद, धमार, ख़याल, ठुमरी, ग़ज़ल आदि सभी शैलियों में निष्णात गायक रहे, किन्तु लोकगीतों के क्षेत्र में उनका एकाधिकार सर्वमान्य एवं निर्विवाद है।

संगीत के सिद्धान्त-पक्ष पर एक सर्वजन सुलभ किन्तु सूक्ष्मग्राही एवम् प्रामाणिक ग्रन्थ 'सा रे ग म' लिखकर, विषय प्रतिपादन की दृष्टि से, राधावल्लभ जी ने एक ऐसा स्तुत्य प्रयास किया है, जिसकी सराहना सभी समीक्षकों ने मुक्तकंठ से की है। 'सा रे ग म' संगीत शिक्षा के क्षेत्र में उनकी एक सुंदर उपलब्धि है।''

संगीत की शास्त्रीयता और उसकी जटिलता की खराद पर 'चाचा' हमेशा खुद को तराशते रहे। लोकगीतों को रागबद्ध करने में, शास्त्रीय निपुणता की एक बड़ी आवश्यकता को उन्होंने पूरा किया। इस कार्य के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को झोंक देने की लगन, अन्य किसी कलाकार में उस समय नहीं थी।

लोकगीतों में उस समय न धन था, न प्रतिष्ठा थी। लेकिन, जिस मानवीय सच्चाई और रिश्तों की गर्मी का आभास उन्हें लोकगीतों के सटीक प्रस्तुतीकरण में होता था, उसकी तुलना, इतिहास के उस क्षण से की जा सकती है, जब 'बुद्ध' को अपनी बात प्रकट करने के लिए, 'संस्कृत' की अपेक्षा 'पाली' जैसी जनभाषा, माध्यम के रूप में ज़्यादा उचित लगी थी। क्योंकि, लोकगीतों में देहात के नगण्य, दलित और अभावग्रस्त स्त्री-पुरुषों का वह जीवन-दर्शन नत्थी होता है, जो किसी भी कला के शास्त्रीय स्वरूप में नहीं होता। अतः लोकगीतों में वह 'आदिम ऊष्मा' भाषा के ताज़ा और यथार्थ कलेवर में आज भी मौजूद है, जो 'जनभाषा' के स्वरूप को पनपाने के लिए खाद, पानी का काम करती है।

लोकगीत एक तरह से किसी भी देश के अलिखित दस्तावेज़ों की तरह होते हैं। उनमें घटनाओं का बड़ा ही कलात्मक और अतिरंजित वर्णन होता है। लेकिन, वे यथार्थ से कभी भी कटे हुए नहीं होते।

उत्तर-प्रदेश के लोकगीतों की ग्रामीण संवेदना को, अपने तर्ज़े-बयां से 'चाचा' ने इतना व्यापक बनाया कि लोक कलाकारों की प्रतिष्ठा और उनके योगदान के प्रति जनता में चेतना पैदा हुई।

अन्त में सशक्त रूप से यह कटु सत्य कहा जा सकता है कि चाचा को रुचि के आत्मिक सुख के अलावा जीवन में और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। जबकि, स्वयं लोकगीतों को उनसे बहुत कुछ प्राप्त हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुझे खुशी है कि 'चाचा' द्वारा लिपिबद्ध और स्वरबद्ध लोकगीतों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का यह जो सतप्रयास उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने किया है, उससे उनकी आकांक्षाओं को एक सही आकार मिलेगा तथा लोकगीतों के प्रेमी संगीतज्ञों एवं छात्रों को लोकगीतों की धुनों को कण्ठ में उतारने का स्वर्णिम अवसर भी।

—नीलम चतुर्वेदी
(आत्मजा—स्व. राधावल्लभ चतुर्वेदी)
ई-मेल : chatn.ddk@gmail.com

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय (नया संस्करण) v
प्रकाशकीय (प्रथम संस्करण) vii
मेरे चाचा ix

संस्कार गीत

1. सरिया
परिभाषा सरिया 1
1. गीत—हँसत खेलत घर आये 2
स्वरलिपि " " " 3

2. सोहर
परिभाषा सोहर 4
1. गीत—कोई कोठे से उतरी भवजिया मनरजना 5
स्वरलिपि " " " 6
2. गीत—गंगा जमुना के बीच तिवैया एक तप करै 7
स्वरलिपि " " " 8
3. गीत—धिया बिन कोख न सोहै 9
स्वरलिपि " " " 10
4. गीत—चलौ गयौ लखिया बन कूँ 12
स्वरलिपि " " " 13
5. गीत—चैतहि के तिथि नौमी त नौबत बाजे हो 14
स्वरलिपि " " " 15
6. गीत—छापक पेड़ छेउलिया से पतवन गहबर हो 16
स्वरलिपि " " " 17

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7. गीत—मोरे आंगन राजा चन्दन के बिरवा रे 18
स्वरलिपि " " " 19
8. गीत—राजा हम कोई का मनावै न जैबै 20
स्वरलिपि " " " 21

3. अन्नप्राशन
परिभाषा अन्नप्राशन 22
1. गीत—आज मोरे लीपन पोतन और अन्नप्राशन हो 23
स्वरलिपि " " " 24

4. मूड़न
परिभाषा मूड़न गीत 25
1. गीत—झगरै नऊआ मूड़न की बेरिया 26
स्वरलिपि " " " 27

5. जनेऊ
परिभाषा जनेऊ गीत 28
1. गीत—आओ सखी सब मंगल गायें 29
स्वरलिपि " " " 30
2. गीत—गंगा के नीरे रे तीरे छिड़ल केरा बिरवा रे 31
स्वरलिपि " " " 32
3. गीत—नदिया किनारे बरुआ फिरै 34
स्वरलिपि " " " 35
4. गीत—हाथ दुनैया कुस पैंती 37
स्वरलिपि " " " 38

6. विवाह गीत
परिभाषा विवाह गीत 39
1. गीत—(बुन्देल खण्डी) ऊँची अटरिया रंग भरी 40
स्वरलिपि " " " 41
2. गीत—बाजंत आवैला ढोल दमामा 43
स्वरलिपि " " " 44
3. गीत—मामा सुघर बर ढूंढ़ो रे मामा 46
स्वरलिपि " " " 47
4. गीत—सावन सुगना मैं घीयु गुर पालेयु 49
स्वरलिपि " " " 50
5. गीत—हरे हरे बाँस कटाओ मोरे बाबुल 52
स्वरलिपि " " " 53

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7. बन्ना
परिभाषा बन्ना 55
1. गीत—केसरिया बन्ना बागों में आया 56
स्वरलिपि " " " 57
2. गीत—परदे भीतर कर लो री 59
स्वरलिपि " " " 60
3. गीत—इन गलियन हैके लैयो जी 61
स्वरलिपि " " " 62
4. गीत— बन्ना पैहने बसंती चीरा रे 63
स्वरलिपि " " " 64
5. गीत—बन्ने के नैना जादू बान 65
स्वरलिपि " " " 66
6. गीत—राम पै जदुआ कोई मत डारो 67
स्वरलिपि " " " 68
7. गीत—श्याम बने हैं बन्ना दुलहा जी 69
स्वरलिपि " " " 70
8. गीत—सिया समाज सुहाग सुन्दरी 72
स्वरलिपि " " " 73
8. टोना
परिभाषा टोना 74
1. गीत—माई री मैं टोना करिहौं 75
स्वरलिपि " " " 76
9. द्वारचार
परिभाषा द्वारचार 77
1. गीत—द्वार पै आयी बरात सखी री 78
स्वरलिपि " " " 79
10. कलेवा
परिभाषा कलेवा 81
1. गीत—आये करन कलेवा चारों कुँवर राजा जनकपुरी 82
स्वरलिपि " " " 83
2. गीत—कीरत गोद गोपाल लिये मुख चूमत 84
स्वरलिपि " " " 85

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11. गारी
परिभाषा गारी 87
1. गीत—घर घर बाजत बधउआ आये हैं लाला 88
स्वरलिपि " " " 89
2. गीत—जनकपुरी के नर नारी श्री हरि को गावै गारी जी 90
स्वरलिपि " " " 91

12. ज्यौनार
परिभाषा ज्यौनार 93
1. गीत—जब ही गोपाल चले मधुबन को 94
स्वरलिपि " " " 95

13. बिदा-गीत
परिभाषा बिदा गीत 96
1. गीत—अरी अरी बेटी पियारी रानी 97
स्वरलिपि " " " 98
2. गीत—खाय लेहु खाय लेहु दहिया सेरे भात 100
स्वरलिपि " " " 101
3. गीत—निबिया कै पेड़ जिन काटेउ मोरे बाबुल 103
स्वरलिपि " " " 104
4. गीत—हमरी दुलारी हो बेटी आँखी केरी पुतरिया 106
स्वरलिपि " " " 107

14. सुहाग-गीत
परिभाषा सुहाग-गीत 109
1. गीत—आज सुहाग की रात चन्दा तुम उइहौ 110
स्वरलिपि " " " 111

दिनचर्या गीत

15. खेत रखवाली-गीत
परिभाषा खेत रखवाली गीत 113
1. गीत—अपने सिवनवाँ में रचल्यू मचनवाँ 114
स्वरलिपि " " " 115

16. चकिया-गीत
परिभाषा चकिया गीत 117
1. गीत—गैले बिदेसवा ककस जिया बोधबि हो 118
स्वरलिपि " " " 119

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17. पनघट गीत

परिभाषा पनघट गीत	121
1. गीत—(बुन्देलखण्डी) नदिया लौं हमारे सँग चलौ	122
स्वरलिपि " " "	123
2. गीत—(बुन्देलखण्डी) ननद भौजइया दोऊ पनियाँ कौं निकरीं	124
स्वरलिपि " " "	125

18. सीला बीनने का गीत

परिभाषा सीला बीनना	127
1. गीत—सासू की बीनी डलरिया रे	128
स्वरलिपि " " "	129

ऋतु सम्बन्धी गीत

19. कजरी

परिभाषा कजरी	130
1. गीत—अरे रामा सावन मास सुहावन	131
स्वरलिपि " " "	132
2. गीत—कान्हा तोरी बाँकी चितवनियां	134
स्वरलिपि " " "	135
3. गीत—कैसे खेलै जैबू सांवन मां कजरिया	136
स्वरलिपि " " "	137
4. गीत—कौन रंग मुंगवा कवन रंग मोतिया	138
स्वरलिपि " " "	139
5. गीत—घेरि घेरि आई सावन की बदरिया ना	140
स्वरलिपि " " "	141
6. गीत—नहीं आये सजना हमार	143
स्वरलिपि " " "	144
7. गीत—बदरिया बरसै रस कै बूंद	146
स्वरलिपि " " "	147
8. गीत—सखियाँ झूलन चलीं फुलबगियन	149
स्वरलिपि " " "	150

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

20. चौमासा

परिभाषा चौमासा 151

1. गीत–प्रथम मास असाढ़, हे सखी 152

स्वरलिपि " " " 153

21. चन्द्रावली

परिभाषा चन्द्रावली 154

1. गीत–ननद भावज पानी कूं गयी रे 155

स्वरलिपि " " " 158

22. चैती

परिभाषा चैती 159

1. गीत–हथवा लगत कुम्हलाय गैलो रामा 160

स्वरलिपि " " " 161

23. मल्हार

परिभाषा मल्हार 163

1. गीत–अरी भैना उठी है घटा घनघोर 164

स्वरलिपि " " " 165

24. राछौर

परिभाषा राछौर 167

1. गीत–कहाँ से उमही रे कारी बदरिया 168

स्वरलिपि " " " 169

25. सावन

परिभाषा सावन 170

1. गीत–अबकी सावन सैंया घर से न निकसो 171

स्वरलिपि " " " 172

26. सोहनी

परिभाषा सोहनी 175

1. गीत–एक सुधि आई गैले नैहर की रे 176

स्वरलिपि " " " 177

27. हिंडोला

परिभाषा हिंडोला (झूला) 179

1. गीत–झूला धीरे से झुलावो, सुकुमारी सिया हैं 180

स्वरलिपि " " " 181

2. गीत–पड़े रे हिंडोले नौलख बाग में जी 183

स्वरलिपि " " " 184

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्सव गीत

28. उलारा

परिभाषा उलारा 186

1. गीत—गिरधारी लाल गिरधारी लाल नख पै गिरधर गिरा धरे 187

स्वरलिपि " " " 188

29. कहरा

परिभाषा कहरा 190

1. गीत—पिया ऊंची रे अटरिया तोरी देखन चली 191

स्वरलिपि " " " 192

2. गीत—बालू रेतिया डगरिया चलब कैसे 194

स्वरलिपि " " " 195

3. गीत—मोरे मालिक श्री भगवान, सोच मन काहे का करी 197

स्वरलिपि " " " 198

4. गीत—हो कजरवा काहे दिये हो, नैना कजरारे 200

स्वरलिपि " " " 201

30. घाटौ

परिभाषा घाटौ 203

1. गीत—रामा चैइत अयोध्या 204

स्वरलिपि " " " 205

31. चौताल

परिभाषा चौताल 211

1. गीत—दृग रेख कजर धोइ डारौ बिना मदुराई 212

स्वरलिपि " " " 213

32. झूमर

परिभाषा झूमर 216

1. गीत—कंहवाँ ते आवैलै कुँवर कन्हैया ऐ झूमर हो 217

स्वरलिपि " " " 218

2. गीत—मचौ फाग घनघोर आज होरी झूमरी 220

स्वरलिपि " " " 221

33. देवी गीत

परिभाषा देवी गीत 222

1. गीत—उड़ि जाऊ रे सुगनवाँ गंगा पार 223

स्वरलिपि " " " 224

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2. गीत—कामना पूरन करौ माई	226
स्वरलिपि " " "	227
3. गीत—कैसे के दरशन पाऊँ री माई संकरी दुअरिआ	228
स्वरलिपि " " "	229
4. गीत—झूमत झूमत मैया अइली देव घरवा	230
स्वरलिपि " " "	231
5. गीत—निबिया कै डार मैया डालैली हिंडोलवा	233
स्वरलिपि " " "	234
6. गीत—भुइयाँ मनाबन चली मलिनियाँ	236
स्वरलिपि " " "	237
7. गीत—मइया के गढ़ पै बेला	238
स्वरलिपि " " "	239
8. गीत—मोर महरानी विंध्याचल की रानी	240
स्वरलिपि " " "	241
9. गीत—लिख लिख चिठिया जे असुरा पठावै	242
स्वरलिपि " " "	243
34. धमार	
परिभाषा धमार	245
1. गीत—आयो रे रितुराज आज ये होरी खेलन आयो	246
स्वरलिपि " " "	247
2. गीत—जमुना तट श्याम खिलैं होरी	250
स्वरलिपि " " "	251
3. गीत—बाजै बाजै बंसी, मुरचंग, संख	253
स्वरलिपि " " "	254
35. डेढ़ताल	
परिभाषा डेढ़ताल	256
1. गीत—सखी फागुन मास नियराये	257
स्वरलिपि " " "	258
36. मेला गीत	
परिभाषा मेला गीत	262
1. गीत—आज मोहे रघुबर की सुधि आयी	263
स्वरलिपि " " "	264
2. गीत—मैया की ऊँची नीची सुन्दर लहरिया	265
स्वरलिपि " " "	266

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	3. गीत—मैं तो चली बद्रीनाथ	267
	स्वरलिपि " " "	268
	4. गीत—रघुबर संग जाब, हम ना अवध मा रहिबै	269
	स्वरलिपि " " "	270
37. रसिया		
	परिभाषा रसिया	272
	1. गीत—अपनौं बृज देखन कौ आय जैयो	273
	स्वरलिपि " " "	274
	2. गीत—आज बिरज मै होरी है, रे रसिया	276
	स्वरलिपि " " "	277
	3. गीत—छूम छूम छन नन छन नन ननन	278
	स्वरलिपि " " "	279
	4. गीत—जसोदा तेरे लाला नै माटी खायी	281
	स्वरलिपि " " "	282
	5. गीत—तेरी अधिक अनोखी चाल, नन्द के छल बलिया	283
	स्वरलिपि " " "	284
	6. गीत—बन गये नन्दलाल लिलहारी	286
	स्वरलिपि " " "	287
	7. गीत—बिन विद्या भारत देस	290
	स्वरलिपि " " "	291
	8. गीत—मति मारो दृगन की चोट रसिया	293
	स्वरलिपि " " "	294
	9. गीत—मोसौं मोहन प्यारे बोल	296
	स्वरलिपि " " "	297
	10. गीत—मोपै कैसी रे मोहनी डारी रे	299
	स्वरलिपि " " "	300
	11. गीत—राधा की छवि देख मचल गयौ साँवरिया	302
	स्वरलिपि " " "	303
38. लंगुरिया		
	परिभाषा लंगुरिया	305
	1. गीत—फिर कबहू न मैली होय लंगुरिया	306
	स्वरलिपि " " "	307

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

39. होली

परिभाषा होली 309

1. गीत—डगर मोरी छोड़ो श्याम 310

स्वरलिपि " " " 311

2. गीत—ब्रज मै हरि होरी मचायी 313

स्वरलिपि " " " 314

3. गीत—मैं तो खेलूँगी कान्हा तोसैं होरी बरजोरी 317

स्वरलिपि " " " 318

4. गीत—मोरी भीजै रेशम चूनर हो 320

स्वरलिपि " " " 321

5. गीत—रंग डारी गिरधारी चुनरिया 324

स्वरलिपि " " " 325

6. गीत—लाला तुम रोको न बाट हमारी 327

स्वरलिपि " " " 328

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया

'सरिया' अवध की एक अत्यन्त लोकप्रिय धुन है। इसमें गाये जाने वाले गीतों का मुख्य विषय मां बनने वाली स्त्री की प्रसव पीड़ा है।

प्रसव पीड़ा से लेकर, सन्तान उत्पन्न होने तक के काल का कभी करुण और कभी कटाक्षपूर्ण वर्णन के साथ ही इन गीतों में आने वाली सन्तान के स्वागत की उल्लासपूर्ण ललक, 'सरिया' का विशिष्ट आकर्षण है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया

हंसत खेलत घर आये, कहां सरि खेलि आयेऊ मोरे लाल।
एक पग धरिऊ देहिरि पर, दूसर पलंग पर,
लीन्है गरवा लगाय, कहौं घना बेदना मोरे लाल।।
लाज शरम केरी बात, सकुच केरी बात पुरुष आगे,
कहा कहौं मोरे लाल।
बाम अंग मोरा फरकै, दाहिन मोरा कसकै
मरहू पैजरवा कै पीर, सुघर दाई चाहिए मोरे लाल।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरिया (कहरवा)

स्थाई

—	म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	हंस	त	खे	ल	त	घ	र	आऽ	ऽऽ	ये	क	हां	ऽ	स	रि
×				0				×				0			
—	रे	—	म	ग	ग	रे	रे	सा	—	सा	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	खे	ऽ	लि	आ	येऽ	मो	रे	ला	ऽ	ल	क	हां	ऽ	स	रि
×				0				×				0			
—	रे	—	म	ग	ग	रे	रे	सा	—	—	सा	—	—	—	—
ऽ	खे	ऽ	लि	आ	येऽ	मो	रे	ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			

अन्तरा

—	सा	सा	सा	ऩी	सा	रे	सा	रे	—	रे	सा	ऩी	सा	रे	सा
ऽ	एक	प	ग	ध	रि	न	दे	हे	री	प	र	दू	स	र	प
×				0				×				0			
रे	रे	रे	सा	—	म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	सा
लं	ग	प	र	ऽ	ली	न्हैं	ऽ	ग	र	वा	ल	गाऽ	ऽऽ	य	क
×				0				×				0			
ऩी	सा	रे	रे	—	रे	—	म	ग	—	रे	रे	सा	—	—	सा
हौं	ऽ	घ	ना	ऽ	बे	ऽ	द	ना	ऽ	मो	रे	ला	ऽ	ऽ	ल
×				0				×				0			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

'सरिया' की ही भांति 'सोहर' भी अवध की एक प्रमुख लोकधुन है, जिसे बालक के जन्म के अवसर पर गाया जाता है। इसे स्त्रियां समेवत् स्वरों में गाती हैं। इसमें सन्तान के जन्म के अवसर पर होने वाले उछाह का वर्णन रहता है। भाषा में आंचलिक परिवर्तनों के होते हुए भी मूलभाव सर्वत्र एक ही रहता है—आनन्द और उल्लास का भाव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर मनरजना

कोई कोठे से उतरी भवजिया मनरजना।
कोई छोटी ननद मुख हेरे।। अहो मनरजना
भाभी जो तेरे हुइहै होरिलवा। मनरजना
तब कहा हमै तुम दैहो।। अहो मनरजना
ऐ बीबी जो तोरे हुइहै भतीजा। मनरजना
तोहे दूंगी गले की तिलरी।। अहो मनरजना
कोई भोर होत पौ फाटै। मनरजना
कोई होरिल शब्द सुनावै।। अहो मनरजना
राजा धीरे शहनाई बजवैयो। मनरजना
मोरी छोटी ननद नहीं जानै।। अहो मनरजना
कोई द्वारे पै ठाढ़ी ननदिया। मनरजना
भाभी लाओ गले की तिलरी।। अहो मनरजना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर मनरजना (कहरवा)

														ग	म
														को	ई
प	प	—	नि	ध	प	—	धप	म	ग	प	—	—	—	नी	नी
को	ठे	ऽ	से	उत	री	ऽ	भऽ	व	जि	या	ऽ	ऽ	ऽ	को	ई
×				0				×				0			
ध	नी	—	सा	नी	ध	—	प	म	ग	प	—	—	—	म	प
को	ठे	ऽ	से	उत	री	ऽ	भ	व	जि	या	ऽ	ऽ	ऽ	म	न
×				0				×				0			
म	ग	म	—	—	—	सा	नी	सा	ग	—	सा	ग	म	प	धप
र	ज	ना	ऽ	ऽ	ऽ	को	ई	छो	टी	ऽ	न	न	द	मु	खऽ
×				0				×				0			
म	ग	—	ग	रे	—	म	ग	रे	रे	सा	—	—	—		
हे	रे	ऽ	अ	हो	ऽ	म	न	र	ज	ना	ऽ	ऽ	ऽ		
×				0				×				0			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

गंगा जमुनवा के बीच तिवैया एक तप करै हो,
गंगा अपनी लैहर हमै देतिऊ तौ मझधार डूबित हो।।
की तोहे सास ससुर दुख नैहर दूर बसै,
तेवई की तोरे हरि परदेस कवन दुख है हौ,
ना मोहे सास ससुर दुख नाही नैहर दूर बसै गंगा।।
ना मोरे हरि परदेस कोख दुख डूबौ हो।।
जाऊ तिवैया घर अपनै हम ना लैहर देबै हौ,
आज के नवमे महिनवा होरिल तोरे हुइहै हौ।।
गहबर पियरी चढ़ैबै होरिल जब हुइहै हौ,
देहु भगीरथ पूत जगत जस गावै हौ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

स्थाई

—	म	म	म	ग	म	प	मं	प	—	प	म	ग	म	प	प
ऽ	गं	गा	ज	मु	न	वा	के	बी	ऽ	च	ति	वै	या	ऐ	क
×				0				×				0			
प	ध	प	म	ग	—	सा	सा	—	सासा	सा	रे	ग	ग	म	ग
त	प	क	रै	हौ	ऽ	गं	गा	ऽ	अप	नी	लै	ह	र	ह	मैं
×				0				×				0			
म	—	म	म	रे	म	ध	प	ग	—	रे	रे	सा	—	—	—
दे	ऽ	तिऊ	तौ	म	झ	धा	र	डू	ऽ	बि	त	हौ	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			

अन्तरा

—	प	प	ध	नी	—	सां	नी	सां	—	सां	रें	नी	—	ध	प
ऽ	की	तो	हे	सा	ऽ	स	स	सु	र	दु	ख	नै	ऽ	ह	र
×				0				×				0			
ग	म	प	ध	प	—	प	प	—	प	प	प	प	नी	ध	प
दू	ऽ	र	ब	से	ऽ	ऐ	हो	ऽ	की	तो	रे	ह	रि	प	र
×				0				×				0			
म	—	म	ग	रे	रे	ग	म	ग	—	रे	—	सा	—	—	—
दे	ऽ	स	क	व	न	दु	ख	डू	ऽ	बै	ऽ	हौ	ऽ	ऽ	ऽ
	×				0				×				0		

नोट : गीत की शेष पंक्तियां अन्तरे की तरह गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (बुन्देलखंडी)

धिया बिन कोख न सोहै,
ललन बिन सोहर रे महाराज।।

ललना तो भये हैं ससुर जू के भागे,
सासू जू के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज।।

ललना तो भये हैं जेठ जू के भागे,
जिठानी के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज।।

ललना तो भये हैं देवर जू के भागे,
दिवरानी के भागे,
हमारौ जामै का लागै महाराज।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (बुन्देलखंडी) दादरा

स्थाई

ध़	सा	—	सा	सा	—	सा	रे	—	ग	—	म	रे	ग	सा
धि	या	ऽ	बि	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	ख	ऽ	न	सो	ऽ	है
×			0			×				0		×		
—	—	रे	ग	म	ग	रे	सा	—	—	ध	धनी	सा	—	रे
ऽ	ऽ	ल	ल	न	ऽ	बि	न	ऽ	ऽ	सो	हर	रे	ऽ	ऽ
0			×			0				×		0		
ग	रे	—	सा	—	—	ग	—	ग	ग	म	ग	रे	सा	—
म	हा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ल	ल	न	ऽ	बि	न	ऽ
×			0			×				0		×		
—	ध	धनी	सा	—	रे	ग	रे	—	सा	—	—	—	—	—
ऽ	सो	हर	रे	ऽ	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज
0			×			0				×		0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध़	ध़	सा	—	सा	—	रे	रे	ग	—	म	—
ल	ल	ना	ऽ	तो	ऽ	भ	ये	हैं	—	स	—
×			0			×			0		
म	ग	ग	सा	सा	—	रे	—	ग	—	म	—
सु	र	जू	ऽ	के	ऽ	भा	ऽ	गे	ऽ	सा	ऽ
×			0			×			0		
म	ग	ग	सा	सा	—	रे	—	ग	—	म	—
सू	—	जू	ऽ	के	ऽ	भा	ऽ	गे	ऽ	ह	ऽ
×			0			×			0		
ग	म	ग	रे	सा	—	—	नी़	ध	ध़	सा	नी़
मा	रौ	ऽ	जा	मै	ऽ	ऽ	का	ऽ	ला	ऽ	ऽ
×			0			×			0		
सा	—	रे	ग	रे	—	सा	—	—	ग	—	ग
गे	ऽ	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ह
×			0			×			0		

नोट : गीत के शेष अंतरे उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (ब्रज) कहरवा

चलौ गयौ लखिया बन कूं,
सोबड़ मैं छोड़ी अपनी नार। चलौ गयौ......

लाल तेरे चाचा मै बुलाय दऊं
जौ तक आवै तेरो बाप।। चलौ गयौ......

लाल तेरे ताऊ मै बुलाय दऊं,
जौ तक आवै तेरो बाप।। चलौ गयौ........

लाल तेरे मामा मै बुलाय दऊं,
जौ तक आवै तेरो बाप।। चलौ गयौ.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (ब्रज) कहरवा

स्थाई

															रे
															च
रे	–	रे	ग॒	रे	सा	रे	ग॒	रे	सा	सा	–	–	–	–	–
लौ	ऽ	ग	यौ	ल	खि	या	ऽ	ब	न	कूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			
–	–	सा	नी	सा	सा	रे	ग॒	रे	सा	रे	ग॒	रे	सा	सा	–
ऽ	ऽ	सो	ऽ	ब	ड़	मै	ऽ	छो	ऽ	ड़ी	ऽ	अ	प	नी	ऽ
×				0				×				0			
सा	प़	–	रे	रे	–	रे	ग								
ना	र	ऽ	च	लौ	ऽ	ग	यौ								
×				0											

नोट : शेष गीत उपरोक्त स्वरों में गाया जायेगा।
यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (चाचर)

चैतहि के तिथि नौमी त नौबत बाजै हो।।
बाजे दशरथ राज दुआर कौशिल्या रानी मंगल हो।।

सुनहु रे सखियां सहेलरी मिलजुल चालहु हो।
जहां राज के जन्मैं हैं राम करिया न्यौछावर हो।

जो ये मंगल गाय से गाय सुनावै हो।
से तो तुलसी जगत तर जाय अमर पद पावै हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (चाचर)

म	—	—	म	—	म	—	रे	म	—	प	—	ध॒	—
चै	ऽ	ऽ	त	ऽ	ही	ऽ	के	ऽ	ऽ	ति	ऽ	थि	ऽ
×			2				0			3			
प	म	—	प	—	म	—	रे	म	—	प	—	ध॒	—
नौ॒	ऽ	ऽ	मी	ऽ	त	ऽ	नौ	ऽ	ऽ	ब	ऽ	त	ऽ
×			2				0			3			
प	म	—	प	—	म	—	ग॒	रे	सा	रे	—	ग॒	—
बा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	इ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	बा	ऽ	जे	ऽ
×			2				0			3			
रे	सा	—	रे	—	सा	—	ध॒	सा	—	रे	—	ग॒	—
द	श	ऽ	र	ऽ	थ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	दु	ऽ
×			2				0			3			
रे	सा	ऽ	रे	—	सा	—	ध़	सा	—	रे	—	ग॒	—
आ	ऽ	ऽ	र	ऽ	कौ	ऽ	शि	ल्या	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ
×			2				0			3			
रे	सा	—	रे	—	सा	—	सा	—	—	—	—	—	—
मं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ल	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (दूसरा प्रकार)

छापक पेड़ छेउलिया से पतवन गहबर हो।
एहो तेहि तर ठाढ़ी हरिनिया, हरिना बाट जोहत हो।।
चरतै चरत हरिनवा, तौ हरिनी से पूछै हो।
हरनी, का तोर चरहा झुरान कि पानी बिन मुरझै हो।।
ना मोर चरहा झुरान, न पानी बिन मुरझहु हो।
हरिना, आज राजा जी कै छटी, तुहै मार डरिहै हो।।
मचिया बैठी कौसिल्या रानी, हरनी अरज करै हो।
रानी मसुआ तो सिजई रसौइया, खलरिया हमै दैतिऊ हो।।
पेड़वा से टगबै खलरिया, तौ मन समुझाइब हो।
रानी हेर फेर देखब खलरिया, जमुक हरना जीतैइ हो।।
जाहु हरिनी घर अपनै, खलरिया नाहीं देबै हो।
हरिनी खलरी कै खंजरी मंड़ैहौ, तो रामा मोरे खेलिहै हो।।
जब-जब बाजै खंजरिया, सबद सुन अनकै हो।
हरिनी ठाढ़ी ढ़कुरिया कै बीच, हरिनका बिसूरै हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (दूसरा प्रकार) कहरवा

—	ऩी	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे	—	नीनी	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे
ऽ	छ	प	क	पे	ऽ	ड़	छे	ऽ	उलि	या	से	प	त	व	न
×				0				×				0			
—सासा		रे	ऩी	सा	—	ग	ग	म	पम	ग	मग	रे	सा	ग	ग
ऽ	गह	ब	र	हो	ऽ	ऐ	हो	ते	हिऽ	त	रुऽ	हा	ऽ	ए	हो
×				0				×				0			
म	पम	ग	मग	रे	ऩी	सा	रे	—	नीऩी	सा	ऩी	ध	ऩी	सा	रे
ते	हिऽ	त	रुऽ	ठा	ऽ	ड़ी	ह	ऽ	रिनि	या	ह	रि	ना	बा	ट
×				0				×				0			
सा	रे	नी	सा	—	—	—	—								
जो	ह	त	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
×				0											

नोट : सम्पूर्ण गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

मोरे आंगन राजा चंदन के बिरवा रे।

ओहि चढ़ि बोले हो कागा से बचन सुहावन हो।
एहो की तोहे माय पठायो कै सगे बीरनवा हो।।

ना हम हरिजी पठावा न नैहर ते आवा हो।
आज के नवमै महिनवा होरिल तोरे हुइहै हो।।

चुप रहु कागा तू चुप रहु बैरिन न सुनै हो।
ऐहो एक तो बिटिया मोरे कोख, दूजै हरि दारुन हो।।

आठ-नौ मास लागे होरिल जनम भये हो।
एहो बाजन लागे आनन्द बधैया, उठन लागे सोहर हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

स्थाई

—	सा	सा	सा	नी़	सा	रेग	म	गरे	रे	ग	रे	सा	सा	रेग	म
ऽ	मो	रे	आं	ग	न	राऽ	जा	ऽऽ	चं	दन	कै	बि	र	वाऽ	रे
×				0				×				0			

अन्तरा

गरे	रेरे	रे	गरे	सा	—	रेग	म	गरे	रे	रे	गरे	सा	सा	रेग	म
ऽऽ	ओही	च	ढ़िऽ	बो	ऽ	लेऽ	हो	ऽऽ	का	गा	सेऽ	ब	च	नऽ	सु
×				0				×				0			
गरे	रे	ग	रे	सा	नी़ध	ध़नी़	सा	—	ध	नी़	ध़	प	—	ध़नी़	सा
ऽऽ	ह्या	व	न	हो	ऽऽ	ऐऽ	हो	ऽ	की	तो	हे	मा	ऽ	यऽ	प
×				0				×				0			
—	ध़	नी़	ध़	प	—	ध़नी	सा	नीध	ध	नी	ध	प	—	—	—
ऽ	ठा	यो	कै	स	—	गेऽ	बी	ऽऽ	र	न	वा	हो	ऽ	ऽ	ऽ
×				0				×				0			

नोट : गीत के शेष अंतरे भी उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर

राजा हम कोई का मनावै ना जैबे,

सासू जो अैहै चरुआ चढ़ैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै ना करिबै,

रिसाय चलि जैहैं मनावै न जैबै॥

जिठानी जो अैहै पियरी पिसैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै ना करबै,

रिसाय चलि जैहैं मनावै न करबै।।

ननदी जो अैहै सतिया धरैहै,
उई नेग चार मंगिहै हम देबै न करबै।।

रिसाय चलि जैहैं मनावै न जैबै।।

देवरा जो अैहे बंसिया बजैहै,
उई नेग चार मंगिहै, हम देबै न करबै।।

रिसाय चलि जैहैं मनावै न करबै।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहर (कहरवा)

स्थाई

															ध़ रा
									रे						
सा	सा	ग	—	मप	प	—	म	म	ग	—	सा	रे	—	रे	—
ऽ	जा	हम	ऽ	कोई	का	ऽ	म	ना	वै	ऽ	न	जै	ऽ	बै	ऽ
×				0				×				0			

अन्तरा

			।					।	।						
सा	ग	—	म	प	—	प	—	म	म	—	रे	म	—	ग	म
सा	सू	ऽ	जो	अै	ऽ	है	ऽ	चरु	ऽ	आ	च	ढ़ै	ऽ	है	उई
×				0				×				0			
म	म	म	ग	मप	प	—	म	म	ग	—	सा	रे	—	रे	ध़
ने	ऽग	चा	ऽर	मंगि	है	ऽ	हम	दे	बै	ऽ	न	कर	बै	ऽ	रि
×				0				×				0			
सा	सा	ग	ग	मप	प	—	म	म	ग	—	सा	रे	—	रे	—
सा	य	च	लि	जैऽ	हैं	ऽ	म	ना	वै	ऽ	ना	जै	ऽ	बै	ऽ
×				0				×				0			

नोट : पूरे सोहर की अगली पंक्तियां अन्तरे के ही स्वर में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन

यह एक प्रमुख संस्कार गीत है। यह अन्नप्राशन के अवसर पर गाया जाता है। जब बच्चा पांच-छः महीने का होता है, तब ससमारोह उसे खीर चखायी जाती है। इस संस्कार को अन्नप्राशन कहते हैं। उत्सव के बाद बच्चे को अन्न से बनी चीज़ें चखाई जाती हैं। यह धुन प्रायः सभी स्थानों पर समान रूप से लोकप्रिय है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन

आज मोरे लीपन पोतन और अन्नप्राशन हो।।
सासू अरगन नेवतेहू परगन, नैहर सासुर हो।।

अरगन आयेनि परगन और, ननिआउरि और, आजियाउरि हो।।
सासू एक नाहीं आये, बिरन भैया कैइस जियरा बोधब हो।।

सासू भैटिहि आपन भैया, ननद आपन देवरा हो।।
सासू छतिया जे मोरी फहरानि, मैकेहि उठि भैटो हो।।

झमक के चढ़ल्यू अटरिया, खिरिकियन झांकेउ हो।।
ननदी जनु भैया आवै, पहुनैया पगड़िया फैहरावै हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्नप्राशन (कहरवा)

–	ऩी	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे	–	ऩी	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे
ऽ	आज	मो	रे	ली	ऽ	प	न	ऽ	पो	त	न	औ	र	अ	न्न
×				0				×				0			
–	सा	रे	ऩी	सा	–	ग	ग	म	पम	ग	मग	रे	सा	ग	ग
ऽ	प्रा	श	न	हो	ऽ	सा	सू	अ	रुऽ	ग	नऽ	हां	ऽ	सा	सू
×				0				×				0			
म	पम	ग	मग	रे	नी	सा	रे	–	ऩीऩी	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे
अ	रुऽ	ग	नऽ	न्यौ	ऽ	ते	हू	ऽ	पर	ग	न	नै	ऽ	ह	र
×				0				×				0			
सा	रे	नी	सा	–	–	–	–								
सा	सु	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
×				0											

नोट : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत

यह भी एक संस्कार गीत है। इसे स्त्रियां सामूहिक रूप से गाती हैं। जब पहली बार बालक के सिर से बाल उतारे जाते हैं, तब यह गीत गाया जाता है। बाल उतारने से पहले नाई अपने नेग के लिए आत्मीयता पूर्ण आग्रह करता है—झगड़ता है। उस्तरा चलाते समय बच्चा रोये नहीं, इसलिए उसके मुंह में लड्डू दे दिया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत

झगरै नऊआ मूड़न की बेरिया।।
नाज भरी डलिया न छुइहौं, हाथे से ना लैहौं, एको पउआ।।
चांदी कै छुरा, कटौरी कांसे की, तिहिया डारौ रुपैया।।
पांय पैजनिया, कमर करधनिया, सोहै सोनै के खड़ुआ।।
विलम्ब होत लखि लाल मगन भये, खांय दुनैया कै लड़ुआ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूड़न गीत (कहरवा)

स्थाई

रेग	सारे	ग	म	मग	रेग	—	रे	सा	ऩी	ध़	प़	ध़	सा	सा	—
हाँऽ	ऽऽ	झग	ड़े	नऊ	ऽऽ	आ	मू	ड़	न	की	ऽ	बे	रि	या	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

ध़	—ऩी	ध़	प	धसा	सा	—	सा	रेग	सारे	ग	म	मग	रेग	सा	—
ना	ऽज	भ	री	डलि	या	ऽ	न	छुई	ऽऽ	हौं	हा	ऽऽ	थेऽ	से	ऽ
×				×				×				×			
प	प	—	प	प	ध	म	ग	गरे	ग	—	सा	रेग	सारे	ग	म
ना	लै	ऽ	हौं	ए	ऽ	कौ	ऽ	पऊ	आ	ऽ	हा	झऽ	गऽ	ड़े	ऽ
×				×				0				0			
मग	रेग	—	रे	सा	ऩी	ध़	प़	ध़	सा	सा	—				
नऊ	ऽऽ	आ	मू	ड़	न	की	ऽ	बे	रि	या	ऽ				
×				×				×							

नोट : मध्यम को स्वर मानकर इस गीत की शेष पंक्तियां (अन्तरे) गानी चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

यह गीत बालक के जनेऊ के अवसर पर गाया जाता है। जनेऊ संस्कार "यज्ञोपवीत संस्कार" के नाम से भी जाना जाता है। इस अवसर पर बटुक विधिवत जनेऊ धारण करता है। प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही बालक विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल काशी को प्रस्थान करता था। इस संस्कार गीत को स्त्रियां सामूहिक रूप से गाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

आवो सखी सब मंगल गायें, आयी जनेऊ की बेला।।
काशी चारौ वेद पढ़न को बरुआ चला अकेला।।

सुंदर वेदी आंगन सोहत, लहलहात हैं केला।।
यज्ञ घूम रहो पूर भवन मैं, मैहकत हैं जूही बेला।।

कांधे जनेऊ, गले मृगछाला, बरुआ बना अलबेला।।
आंगन गायन, बाहर बाजन, चहु दिश लाग्यो है मेला।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (कहरवा)

स्थाई

				म											
—	रे	ऩी	सा	रे	म	प	प	—	ध	म	प	ग	—	रे	सा
ऽ	आ	वो	स	खी	ऽ	स	ब	ऽ	मं	ग	ल	गा	ऽ	यें	ऽ
×				0				×				0			
—	ग	रे	ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	—	सा	—	सारे	ग	रेग	म
ऽ	आ	यी	ज	ने	ऽ	ऊ	की	बे	ऽ	ला	—	होऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				0				×				0			
—	ग	रे	ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	—	सा	—				
ऽ	आ	यी	ज	ने	ऽ	ऊ	की	बे	ऽ	ला	—				
×				0				×							

• गीत की अगली पंक्ति भी इसी प्रकार गायी जायेगी।

अन्तरा

													रे		
—	ध	ध	धप	पध	नी	ध	प	—	ध	प	म	ग	ग	म	म
ऽ	सुं	द	रुऽ	बेऽ	ऽ	दी	ऽ	ऽ	आं	ग	न	सो	ऽ	ह	त
×				0				×				0			
—	ग	रे	ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	—	सा	—	सारे	ग	रेग	म
ऽ	ल	ह	ल	हा	ऽ	त	हैं	के	ऽ	ला	ऽ	होऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				0				×				0			
—	ग	रे	ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	—	सा	—				
ऽ	ल	ह	ल	हा	ऽ	त	हैं	के	ऽ	ला	ऽ	॥ आवो सखी ॥			
×				0				×							

नोट : गीत के आगे के अन्तरे भी इसी स्वरलिपि में गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

गंगा के नीरे रे तीरे, छिड़ल केरा बिरवा रे।।
तातर ठाड़ी सीतल देई मनमा बिसूरै रे।।

बारा बरसि केरे लव कुश लागे, परम मनोहर रे।।
अपनै बाबुल अनुहार, जनेऊ के जोग भये रे।।

ना हियां रानी कौशिल्या, नहिन राजा दशरथ रे।।
सखिया सहिलिया अयोध्या, भिक्षा का डारै रे।।

कुटिया से निकसे मुनि बालमीक, सिया समझावै रे।।
सिया हम डरबै भीख, मनमाख जिन मान्हु रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

स्थाई

म													
रे	म	—	रे	—	सा	—	नी	—	—	ध़	नी़	प़	ध़
गं	ऽ	ऽ	गा	ऽ	के	ऽ	नी	ऽ	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ
×			2				0			3			
सा	—	—	सा	—	—	—	—	—	—	—	—	सा	—
ती	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छि	ऽ
×			2				0			3			
रे	—	—	म	—	म	—	ध	ध	—	ध	—	पध	नी
ड़	ल	ऽ	के	ऽ	रे	ऽ	बि	र	ऽ	वा	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			2				0			3			
ध	—	—	—	—	—	—	म	—	—	रे	—	सा	—
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

• दूसरी पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	–	–	ध	–	ध	–	ध	नी	–	ध	प	प	ध
बा	ऽ	ऽ	रै	ऽ	ब	ऽ	रि	स	ऽ	के	ऽ	रे	ऽ
×			2				0			3			
म	प	–	प	–	प	–	प	म	–	ध	–	ध़	–
ल	व	ऽ	कु	ऽ	श	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	गै	ऽ
×			2				0				3		
ध	ध	–	ध	नी	ध	प	प	म	–	ध	–	प	–
प	र	ऽ	म	ऽ	म	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ
×			2				0			3			
म	रे	–	–	–	–	–							
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			2										

नोट : गीत की अन्य पंक्तियां स्थाई की तरह ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत

नदिया किनारे बरुआ फिरै, केऊ पार उतारै हो।।
पठै देऊ नाव नवरिया, बरुआ चढ़ि आवै हो।।

ना मोरे नाव नवरिया, नाहीं घर खेवट हो।।
जेकर जनेउआ कै साध, पैइर नदिया आवै हो।।

नदिया किनारे बरुआ फिरै, केऊ पार उतारै हो।।
पठै देऊ बाबा नवरिया, बरुआ चढ़ि आवै हो।।

ना मोरे नाव नवरिया, नाहीं घर खेवट हो।।
जेकर जनेऊआ कै साध, पैइर नदिया आवै हो।।

नोट : इसी प्रकार छठी पंक्ति में 'बाबा' शब्द के स्थान पर चाचा, ताऊ, मामा इत्यादि के नाम, एक के बाद एक लेकर, गीत बढ़ाकर पूरा किया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

जनेऊ गीत (चाचर)

स्थाई

म़	प़	—	ऩी	—	ऩी	—	ऩी	—	—	सा	—	ऩी	—
न	दि	ऽ	या	ऽ	कि	ऽ	ना	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ब	ऽ
0			3				×			2			
सा	सा	सा	सा	—	सा	—	सा	—	ऩी	रे	—	रे	—
रु	आ	ऽ	फि	ऽ	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऊ	ऽ
0			3				×			2			
रे	—	—	रे	—	ग॒	रे	सा	—	—	रे	—	सा	—
पा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	उ	ता	ऽ	ऽ	रै	ऽ	ई	ऽ
0			3				×			2			
ऩी	प़	—	—	—	—	—							
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
0			3										

• दूसरी पंक्ति भी स्थाई की ही तरह गायी जायेगी।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	—	—	रे	—	रे	—	रे	—	—	रे	—	रे	म
ना	ऽ	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ
0			3				×			2			
रे	रे	—	सा	—	—	—	—	—	नी़	रे	—	—	—
व	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
0			3				×			2			
रे	—	—	रे	—	ग॒	रे	सा	—	—	सा	नी़	रे	सा
ही	ऽ	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ	खे	ऽ	ऽ	व	ऽ	ट	ऽ
0			3				×			2			
नी़	प़	—	—	—	—	—							
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
0			3										

नोट : स्थाई के स्वरों में आगे का भी भाग गाया जायेगा तथा इसी प्रकार पूरा गीत गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

हाथ दुनैया कुस पैंती, त बरुआ बराम्हन,
ठाड़े बनारस जाय त भिक्षा देउ आजी।

इतना बुझाय नही पहि हौ, त बरुआ बराम्हन,
बाबा के गोत बताउ, तौ भिक्षा पहि हौ।।

गोत तो हमरा बम्हन केरा और पंडित केरा,
कहां गये बाबा हमार त जनेऊ दिवावै।।

नोट : इसी प्रकार चौथी पंक्ति में प्रयुक्त 'बाबा' शब्द के स्थान पर चाचा-चाची, दादा-दादी, मामा-मामी आदि का गोत्र पूछा जाता है और गीत बढ़ता चला जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनेऊ गीत (चाचर)

प़	ध़	—	सा	—	सा	—	सा	रे	—	ग	—	रे	—
ह्रा	ऽ	ऽ	थ	ऽ	दु	ऽ	नै	या	ऽ	कु	ऽ	स	ऽ
×			2				0			3			
सा	ध़	—	ध़	—	ध़	—	सा	रे	—	ग	—	रे	—
पै	ऽ	ऽ	ती	ऽ	त	ऽ	ब	रु	ऽ	आ	ऽ	ब	ऽ
×			2				0			3			
सा	ध़	—	ध़	—	ध़	—	ध़	सा	—	सा	—	सा	—
रा	ऽ	ऽ	म्ह	ऽ	न	ऽ	ठ	ऽ	ऽ	ड़े	ऽ	ब	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	ग	—	म	—	ग	—	—	रे	—	सा	—
ना	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	ऽ	जा	ऽ	ऽ	य	ऽ	त	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	ग	—	म	ग	सा	रे	—	रे	—	—	—
भि	क्षा	ऽ	दे	ऽ	उ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0				3		

नोट : पूरा गीत इन्हीं स्वरों में गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

विवाह गीत के अन्तर्गत विभिन्न वैवाहिक संस्कारों के समय गाये जाने वाले गीत आते हैं, जैसे द्वारचार, कलेवा, ज्यौनार, गारी आदि।

'विवाह गीत' शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले गीतों में बेटी के लिए मां-बाप द्वारा वर ढूंढ़ने की चिन्ता के अतिरिक्त, विवाह के अवसर पर बारात के आने और उसके स्वागत आदि के समय की रौनक, उत्साह, उमंग और शोर-शराबे का सुन्दर चित्रण मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (बुंदेलखंडी)

ऊंची अटरिया रंग भरी
चंदन जरी रे किवरिया।।

तापै मामुल राजा पौड़ियो
माई ढुरै बिजनियां।।

जौनौ लाड़ली बेटी चढ़ि गयी
मामुल सोऔ कि जागौ।।

हम का सोवैं बेटी लाड़ली
हमै सोच तुम्हारौ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (बुंदेलखंडी) (रूपक)

स्थाई

सा	रे	—	ऩी	—	सा	—	रे	म	—	प	ध	म	ग
ऊं	ऽ	ऽ	ची	ऽ	अ	ऽ	ट	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
रे	—	—	रे	ग	सा	ऽ	सारे	गम	म	म	—	म	ग
ऽ	ऽ	ऽ	रं	ग	भ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽ	चं	ऽ	द	न
×			2		3		×			2		3	
सा	रे	—	ग	मग	सा	सा	सा	सा	—	सा	—	—	—
ज	री	ऽ	रे	ऽऽ	कि	ऽ	व	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

• दूसरी कड़ी भी इसी प्रकार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	ध	—	ध	—	ध	—	ध	ध	नी	ध	—	प	—
जौ	ऽ	ऽ	नौ	ऽ	ला	ऽ	ड़	ली	ऽ	बे	ऽ	टी	ऽ
×			2		3		×			2		3	
—	—	—	प	ध	प	—	म	ग	रे	रे	ग	सा	—
ऽ	ऽ	ऽ	च	ढ़ि	ग	ऽ	ई	ऽ	ऽ	मा	ऽ	मु	ल
×			2		3		×			2		3	
सा	रे	—	ग	मग	सा	सा	सा	—	—	सा	—	—	—
सो	औ	ऽ	ऽ	ऽऽ	के	ऽ	जा	ऽ	ऽ	गौ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	

नोट : अन्तरे की अन्य कड़ियां स्थाई की तरह गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

बाजत आवैला ढोल दमामा,
उड़त आवैला निशान है।।

झूमत आवैले इसर महादेउ,
बैइल पर असवार है।।

आगे परीछै गैली सासू मदागिन,
सरप छोड़ैला फुंकार है।।

अइसन बउरवा कै गौरा न देबै,
बलू गौरा रहै कुआर रे।।

धीया लैके उड़बी, धाया लैके बुडबी,
धीया लैके खेलब पताल हे।।

अैसन बउरवा कै गौरा न देबै,
बलू गौरा रहै कुआर रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चाचर)

स्थाई

सा	–	–	सा	–	सा	–	रे	सा	–	सा	–	सा	–
बा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	त	ऽ	आ	ऽ	ऽ	वै	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			
रे	म	–	म	–	म	–	प	म	–	म	–	म	–
ढो	ऽ	ऽ	ल	ऽ	द	ऽ	मा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ध	ध	–	ध	–	ध	–	ध	–	–	ध	–	ध	म
उ	ड़	ऽ	त	ऽ	आ	ऽ	वै	ऽ	ऽ	ला	ऽ	नि	ऽ
×			2				0			3			
म	प	–	–	–	प	धनीध	म	–	–	–	–	–	–
शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽऽऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

• दूसरी एवं तीसरी पंक्ति भी इसी प्रकार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	ध	—	ध	—	ध	—	ध	ध	—	ध	—	ध	म
आ	ऽ	ऽ	गे	ऽ	प	ऽ	री	छै	ऽ	गै	ऽ	ली	ऽ
×			2				0			3			
म	प	—	प	—	प	ध	म	—	—	म	—	प	—
सा	ऽ	ऽ	सू	ऽ	म	ऽ	दा	ऽ	ऽ	गि	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
नी̱	नी̱	—	नी̱	—	सां	रें	ध	ध	—	म	—	प	—
स	र	ऽ	प	ऽ	छो	ऽ	ड़ै	ला	ऽ	फुं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ध	ध	—	प	—	प	ध	म	—	—	—	—	—	—
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : आगे की पंक्ति स्थाई की प्रथम पंक्ति की तरह ही गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

मामा सुघर बर ढूंढ़ो रे मामा,
माई लैंगी कन्यादान, लाड़ो नै केस सुखाये॥
मामा सुघर वर ढूंडन जैहै,
जैहै देस बिदेसु, लाड़ो नै केस सुखाये॥

चाचा सुघर बर ढूंड़ो रे चाचा,
चाची लैंगी कन्यादान, लाड़ो ने केस सुखाये॥
चाचा सुघर बर ढूंडन जैहै,
जैहै सागर पार, लाड़ो नै केस सुखाये॥

बाबा सुघर बर ढूंड़ो रे बाबा,
दादी लैंगी कन्यादान, लाड़ो नै केस सुखाये॥
बाबा सुघर बर ढूंडके लाये,
बेटी के अनुहार, लाड़ो नै केस सुखाये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (कहरवा)

स्थाई

														सा	—
														मा	ऽ
रे	ग	म	ग	रे	म	ग॒	रे	सा	रे	सा	ऩी	सा	रे	रे	—
मा	ऽ	ऽ	सु	घ	र	ब	र	ढूं	ऽ	ड़ो	रे	मा	ऽ	मा	ऽ
×				×				×				×			
—	—	ध	—	नी॒	ध	प	म	—	ग	प	मग	रे	म	ग॒	रे
ऽ	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लैं	ऽ	गीऽ	क	ऽ	न्या	ऽ
×				×				×				×			
सा	—	—	—	सा	सा	सा	ऩी	सा	रे	सा	ऩी	सा	रे	रे	—
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽन	ला	ड़ो	नै	के	ऽ	स	सु	खा	ऽ	ये	ऽ
×				×				×				×			
—	—	सा	—	म	—										
ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ										
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

														प	–
														मा	ऽ
ध	नी॒	सां	नी॒	ध	सां	नी॒	ध	प	ध	प	म	प	प	प	–
मा	ऽ	ऽ	सु	घ	र	ब	र	ढूं	ऽ	ड	न	जै	ऽ	है	ऽ
×				×				×				×			
–	म	ध	प	ग॒	–	रे	ग॒	रे	सा	–	–	–	सा	सा	ऩी
ऽ	जै	ऽ	है	दे	ऽ	स	बि	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽस	ला	ड़ो	नै
×				×				×				×			
सा	रे	सा	ऩी	सा	रे	रे	–								
के	ऽ	स	सु	खा	ऽ	ये	ऽ								
×				×											

नोट : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चाचर)

सांवन सुगना मैं घीयु गुड़ पालेयु,
चैत चना केरी दार रे।।

अब सुगना तू भयउ सुजुगवा,
बेटी के बर हेर लायहु रे।।

उड़त-उड़त तू जाये डरे सुगना,
बैठेउ डरिया उनाय रे।।

डरिया उनाय बैठा पखना फुलाये,
चितिया नजरिया घुमाय रे।।

जेबर सुगना तू देखेउ सुन्दर,
मैहर-मैहर मुंह जोत रे।।

जे घर सुगना तू सम्पत देखेउ,
तेहि घर रचेउ बियाहु रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चाचर)

स्थाई

सा	—	—	सा	—	प	—	प	प	—	प	—	प	ध़
सां	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	सु	ग	ऽ	ना	ऽ	मैं	ऽ
×			2				0			3			
प	प	म	म	—	म	ध़	प	—	—	ग़	—	—	—
घी	यु	ऽ	गु	ऽ	ड़	ऽ	पा	ऽ	ऽ	लेयु	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
म	—	—	म	—	म	ध़	प	—	—	ग़	—	रे	—
चै	ऽ	ऽ	त	ऽ	च	ऽ	ना	ऽ	ऽ	के	ऽ	री	ऽ
×			2				0			3			
ग	—	—	रे	—	ग़	रे	सां	—	—	—	—	—	—
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग̲	ग̲	—	ग̲	—	ग̲	—	रे	सा	—	म	—	ध̲	—		
अ	ब	ऽ	सु	ऽ	ग	ऽ	ना	ऽ	ऽ	तू	ऽ	ऽ	ऽ		
×			2				0			3					
प	प	—	ग̲	—	ग̲	रे	सा	सा	—	नी̲	—	—	—		
भ	ये	ऽ	हू	ऽ	सु	ऽ	जु	ग	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ		
×			2				0			3					
ग̲	रे	—	ग̲	—	म	—	ग̲	रे	—	सा	—	रे	—		
बे	ऽ	ऽ	टी	ऽ	के	ऽ	ब	र	ऽ	हे	ऽ	र	ऽ		
×			2				0			3					
ग̲	—	—	रे	ग̲	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—		
ला	ऽ	ऽ	य	ऽ	हु	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
×			2				0			3					

नोट : गीत के शेष अन्तरे अर्थात् पूरा गीत इसी प्रकार गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत

हरे-हरे बांस कटाओ मोरे बाबुल,
ऊंची छावों चौपाल रे।

सागर ताल खुदाओ मोरे बाबुल,
हाथी पिये जल नीर रे।।

जैसे जंगल की चिड़िया हो बाबुल,
रात बसै दिन उड़ि चलै।

बाबुल घर हम धीयर बिहायी,
रात बसै दिन उड़ि चलै।।

छोटे बीरन मोरी पकरी पलकिया,
मोरी बैहन कहां जाउरे।

छाड़ो बिरन तुम हमरी पलकिया,
हम परदेसी लोग रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह गीत (चाचर)

सा	सा	—	सा	—	प	—	प	—	—	प	—	प	ध̲
ह	रे	ऽ	ह	ऽ	रे		बां	ऽ	ऽ	स	ऽ	क	ऽ
×			2				0			3			
प	—	म	म	—	म	ध̲	प	—	—	ग̲	—	ग̲	ऽ
टा	ऽ	उ	मो	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
म	—	—	म	—	म	ध̲	प	—	—	ग̲	—	रे	—
ऊं	ऽ	ऽ	ची	ऽ	छा	ऽ	वों	ऽ	ऽ	चौ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ग̲	—	—	रे	—	ग̲	रे	सा	—	—	—	—	—	—
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध़	नी़	—	सा	—	ग	—	ग	—	—	ग	—	ग	—
सा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ल	ऽ	खु	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	—	म	—	प	—	ग	—	—	म	—	म	—
दा	ओ	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
म													
रे	—	—	म	—	म	—	प	ध॒	—	म	—	प	—
हा	ऽ	ऽ	थी	ऽ	पी	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
ग॒	—	—	रे	ग॒	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—
नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ना नगर क्षेत्र का लोकगीत है। यह ग्राम क्षेत्रों में बहुत कम गाया जाता है। आजकल इस लोकगीत की थोड़ी बहुत प्रथा गांवों में भी चल गयी है; क्योंकि यह मुगलकाल की देन है, जैसा कि 'बन्ना' शब्द से मालूम पड़ता है। इसलिए इसमें खड़ी बोली अधिक मात्रा में आती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

केसरिया बन्ना बागों में आया।
आवो जी, आवो जी। होऽ

मेरे हाथ फूलों की डाली, मैं तो
मालिन बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी। होऽ

मेरे हाथ चौमुखी दियना, मैं तो
ज्योति बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी। होऽ

मेरे हाथ पानौं के बीड़े, मैं तो
लाली बनकर आयी,
आवो जी, आवो जी। होऽ

नोट : 'आवो जी' के स्थान पर 'आवो री' भी गाया जा सकता है, क्योंकि गायन में दोनों का प्रचलन है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

—	ध़	ध	नी॒	|	सा	—	सा	सा	|	सारे	गम	म	म	|	मग	रेग	सा	—
ऽ	के	स	रि	|	या	ऽ	ब	न्ना	|	बाऽ	ऽऽ	गौं	में	|	आऽ	ऽऽ	या	ऽ
×				|	×				|	×				|	×			
—	प	—	पध	|	म	—	म	ग	|	रे	ग	ग	सा	|	सारे	ऩीसा	ध़ऩी॒	पध
ऽ	आ	ऽ	वोऽ	|	जी	ऽ	आ	ऽ	|	वो	ऽ	जी	ऽ	|	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
×				|	×				|	×				|	×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	प	प	प	—	ध	म	—	मप	धप	म	ग	गम	मग	गप	प
ऽ	मे	रे	हा	ऽ	थ	फू	ऽ	लौंऽ	ऽऽ	की	ऽ	डाऽ	लीऽ	मैंऽ	तो
×				×				×				×			
—	गम	गरे	सा	सारे	—	ग	मग	सारे	—	सा	—	—	प	—	पध
ऽ	माऽ	ऽलि	न	बन	ऽ	क	रुऽ	आऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	आ	ऽ	वोऽ
×				×				×				×			
म	—	म	ग	रे	ग	ग	सा	सारे	नी̣सा	ध̣नी̣	प̣ध̣	—	नी̣	ध	नी̣
जी	ऽ	आ	ऽ	वो	ऽ	जी	ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	के	स	रि
×				×				×				×			

नोट : गीत के शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (बुंदेलखण्डी) (दादरा)

परदे भीतर कर लो री,
लगि जैहै नजरिया।।

जे बनरा बाबुल जू के प्यारे,
अम्मां के नैयनौं के तारे री।। लगि जैहै–

जे बनरा आजुल जू के प्यारे,
आजी के नैयनौं के तारे री।। लगि जैहै–

जे बनरा काका जू के प्यारे,
काकी के नैयनौं के तारे री।। लगि जैहै–

नोट : इसी प्रकार अन्य सम्बन्धियों का नाम ले लेकर गीत को और बढ़ाया जा सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (दादरा)

स्थाई

—	—	ग	ग	ग	म	रे	ग	—	सा	—	—
ऽ	ऽ	प	र	दे	ऽ	भी	ऽ	ऽ	तर	ऽ	ऽ
×			0			×			0		
—	—	ग	रे	ग	—	म	—	—	ग	ग	—
ऽ	ऽ	क	ऽ	ल्लो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ल	ग	ऽ
×			0			×			0		
सा	सा	रे	—	—	सा	—	ऩी	ध़	ऩी	सा	—
जै	ऽ	है	ऽ	ऽ	न	ऽ	ज	ऽ	रि	या	ऽ
×			0			×			0		

अन्तरा

											ऩी
											जे
सा	ध़	ऩी	सा	—	—	ग	—	—	म	म	—
ऽ	ब	न	रा	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ल	ऽ
×			0			×			0		
ग	—	रे	सा	—	गरे	सा	ऩी	सा	ऩी	सा	ऩी
जू	ऽ	के	प्या	ऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जे
×			0			×			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	ध़	ऩी	सा	—	—	ग	—	—	म	म	—
ऽ	ब	न	रा	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ल	ऽ
×			0			×			0		
ग	—	रे	सा	—	गरे	सा	ऩी	सा	सा	प	प
जू	ऽ	के	प्या	ऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	अ	ऽ	म्मा
×			0			×			0		
			रे								
—	प	ध	म	ग	—	सा	सा	—	—	—	ग
ऽ	के	ऽ	नै	ऽ	ऽ	नौं	के	ऽ	ऽ	ऽ	ता
×			0			×			0		
रे	ग	—	म	म	—	ग	ग	—	सा	—	रे
ऽ	रे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ल	गि	ऽ	जै	ऽ	है
×			0			×			0		
—	सा	—	ऩी	ध़	ऩी	सा	—	—	—	—	ग
ऽ	न	ऽ	ज	ऽ	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
×			0			×			0		

नोट : शेष अन्तरे भी उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (बुंदेलखण्डी) (दादरा)

इन गलियन हैके लैयो जी रघुनाथ बना कौं।।

शीश सोहै रेशम की पगिया,
कलगी मैं अतर लगैयो जी।। रघुनाथ–

कान बनै के कुण्डल सोहै,
चुन्नी पै अतर लगैयो जी।। रघुनाथ–

अंग बनै के जामा सोहै,
पटकै मैं अतर लगैयो जी।। रघुनाथ–

हाथ बनै के कंगना सोहै,
लटकन पै अतर लगैयो जी।। रघुनाथ–

नोट : यह बन्ना 'परदे भीतर कर लो री' बन्ने की धुन पर गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ना पैहने बसंती चीरा रे।

शीश सोहै रेशम की पगिया,
कलगी मैं लागे मोती हीरा रे।

कान बनै के कुण्डल सोहै,
कुण्डल मैं लागे मोती हीरा रे।

अंग बनै के जामा सोहै,
पटके मैं लागे मोती हीरा रे।

हाथ बनै के कंगना सोहै,
लटकन मैं लागे मोती हीरा रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

— — रे म	ग॒ सा — ऩी॒	ध़ ऩी॒ सा रे	ग — म —
ऽ ऽ ब न्ना	पैह ने ऽ ब	सं ऽ ती ऽ	ची ऽ रा ऽ
×	×	×	×
— रेग सा रे			
ऽ रेऽ ऽ ऽ			
×			

अन्तरा

— सा — ऩी॒	ध़ ऩी॒ सा रे	ग ग म —	ग॒ ग॒ सा —
ऽ शी ऽश सो	है ऽ रे ऽ	श म की ऽ	प गि या ऽ
×	×	×	×
— प प म	पध मध प म	— ग — सा	सारे गम म म
ऽ कल गी मैं	लाऽ गेऽ मो ती	ऽ ही ऽ रा	रेऽ ऽऽ मो ती
×	×	×	×
— ग — सा	सारे गम रे म		
ऽ ही ऽ राऽ	रेऽ ऽऽ ब न्ना		
×	×		

नोट : गीत की अन्य पंक्तियां (अन्तरे) इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

बन्ने के नैना जादू बान, मैं वारी जाऊं।

शीश सोहै रेशम की पगिया,
मोर पंखा की फैहरान। मैं वारी जाऊं.......।

कान बनै के कुण्डल सोहै,
मोतियन की चमकान।। मैं वारी जाऊं.......।

श्याम बदन पर पियरो जामा,
मुनि मन हरत लुभान।। मैं वारी जाऊं......।

संग सोहै राजौ की बेटी,
रुकमिन वाम बखान।। मैं वारी जाऊं......।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

—	ग	ग	ग	ग	सारे	ग	म	मग	रेग	सासा	सानी	सा	रेग	नी	सा
ऽ	ब	न्नै	के	नै	नाऽ	जा	दू	बाऽ	ऽऽ	ऽन	मैंऽ	वा	रीऽ	जा	ऊं
×				×				×				×			
सानी	धनी	ध	नी	सा	रेग	नी	सा								
हांऽ	ऽऽ	ऽ	मैं	वा	रीऽ	जा	ऊं								
×				×											

अन्तरा

—	ध	-,ध	-,नी	सा	रेग	नी	सा	—	ग	-,ग	-,म	मग	रेग	नी	सा
ऽ	शी	ऽश	ऽसो	है	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	शम	ऽकी	ऽऽ	पऽ	गिऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
—	ग	ग	ग	ग	सारे	ग	म	मग	रेग	साम	सानी	सा	रेग	नी	सा
ऽ	मो	र	पं	ख	कीऽ	फै	है	राऽ	ऽऽ	ऽ,न	मैंऽ	वा	रीऽ	जा	ऊँ
×				×				×				×			
सानी	धनी	ध	नी	सा	रेग	नी	सा								
हांऽ	ऽऽ	ऽ	मैं	वा	ऽरी	जा	ऊं								
×				×											

नोट : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।
मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

राम पै जदुआ कोई मत डारो।

खड़ी खड़ी बरजे रानी सुनैना,
सब सखी सैना निवारो।।

दुलहिन सिया रूप गुन आगरि,
बन्ना जग उजियारो।।

गौतम नारी अहिल्या तारी,
मुनिमख को रखवारो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

															सा
															रा
	ग														
सा	रे	सा	ऩी	—	प़	ऩी	ऩी	सा	सा	रेग	म	ग	—	सा	—
ऽ	म	पै	ऽ	ऽ	ज	दु	आ	को	ई	मऽ	त	डा	ऽ	रो	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

—	—	—	—	ग	ग	ग	म	प	प	प	—	ध	म	—	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ख	ड़ी	ख	ड़ी	ब	र	जे	ऽ	रा	नी	ऽ	सु
×				×				×				×			
मध	पम	गम	रेग	ग	ग	ग	ग	ग	म	—	पम	ग	—	सा	—
नैऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽऽ	स	ब	स	खी	सै	ना	ऽ	निऽ	वा	ऽ	रो	—
×				×				×				×			

नोट : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

श्याम बने हैं बन्ना दुलहा जी,
रुकमिन दुलहिन बन आयी।।

रतन खम्ब से परत भांवरी,
सुरन बधू मंगल गायी।।

मंगल कलश द्वार पै साजे,
बाज रही है शहनायी।।

कान्हा के सोहे पीत पीताम्बर,
रुकमिन कै चुनरी लैहरायी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (चाचर)

स्थाई

सा	ग	—	म	—	प	—	ग	म	—	ग	—	सा	—
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	ब	ऽ	ने	हैं	ऽ	ब	ऽ	न्ना	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	रे	—	ऩी	—	सा	—	—	—	—	—	—
दु	ल	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प	सां	—	सां	—	प	—	प	ध	—	प	—	म	—
रु	क	ऽ	मि	ऽ	न	ऽ	दु	ल	ऽ	हि	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
					म	म							
म	प	—	ग	—	ग	—	प	—	—	—	—	—	—
ब	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	—	प	—	प	—	प	ध॒	—	प	—	म	—
र	त	ऽ	न	ऽ	ख	ऽ	ऽ	म्ब	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
म	प	—	ग॒	—	सा	—	ग॒	ग॒	—	प	—	—	—
प	र	ऽ	त	ऽ	भां	ऽ	ऽ	व	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प	सां	—	सां	—	प	—	प	ध॒	—	प	—	म	—
सु	र	ऽ	न	ऽ	ब	ऽ	धू	ऽ	ऽ	मं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
म	प	—	ग॒	—	ग॒	—	प	—	—	—	—	—	—
ग	ल	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना

सिया समाज सुहाग सुन्दरी,
रघुबर आये जनक की नगरी।।

जुरि आयीं रनिवास जनक के,
एक से एक रूप गुन आगरि।।

मिथिलापुर तोरन से शोभित,
धाम-धाम धरे कंचन घट री।।

मोर मुकुट सिर लसत मनोहर,
अलकावलि मुख शशि पर बिखरी।।

रूप अनूप लखौं रघुबर को,
थकित भयी सब नवल नागरी।।

श्याम गौर लखि सुन्दर जोड़ी,
रानी सुनैना मोह लयी री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बन्ना (कहरवा)

स्थाई

सा	रे	सा	ग	ग	—	ग	ग	ग	म	प	प	प	ध	म	ग
सि	या	ऽ	स	मा	ऽ	ज	सु	हा	ऽ	ग	सु	ऽ	न्द	री	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	प	प	प	ध	पध	नीसां	नी	नी	ध	म	प	ध	म	ग
र	घु	ब	र	आं	ऽ	येऽ	ऽऽ	ज	न	क	की	न	ग	री	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

नी	नी	नी	नी	नी	—	नी	प	पध	नीसां	सां	सां	ऩी	रेंगं	सां	—
जु	रि	आ	ऽ	यीं	ऽ	र	न	वाऽ	ऽऽ	स	ज	न	क	के	ऽ
×				×				×				×			
नी	—	नी	प	प	ध	नी	सां	नी	नी	ध	म	प	ध	म	ग
ए	ऽ	क	से	ए	ऽ	क	रू	ऽ	प	गु	न	आ	ऽ	ग	रि
×				×				×				×			

नोट : गीत के शेष अन्तरे अर्थात् आगे की पंक्तियां भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना

यह घुड़चढ़ी और कलेवा के समय गाया जाता है। इसे स्त्रियां सामूहिक रूप से गाती हैं। तरह-तरह के टोनों का वर्णन करके, इस बात पर बल दिया जाता है कि वर परायी स्त्रियों की ओर न जाये और अपनी पत्नी से ही प्रेम करे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना (बुंदेलखण्डी)

माई री मैं टोना करिहौं।
कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन री।।
इन तीनन को तबीज बनैगो, बांधौ बनै के नैन री।। मैं टोना.....
नैनन में बांध, बना नैन ना चलैहै, तके न पराई नार री।। मैं टोना.....

कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन री।। मैं टोना....
इन तीनन कौ तबीज बनैगो, बांधौ बनै के हाथ री।। मैं टोना......
हाथन मैं बांध बन्ना हाथ न चलैहै, छुये न पराई नार री॥ मैं टोना.....

कौआ की जीबैं, कबूतर के पखना, उड़त चिरैया के नैन री।। मैं टोना....
इन तीनन कौ तबीज बनैगौ, बांधौ बनै के पांय री।। मैं टोना.......
पायन मैं बांध बन्ना पांय न चलैहै, चढ़े न पराई सेज री।। मैं टोना.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टोना (कहरवा)

स्थाई

—	ग	रे	ग	म	—	ग	—	सा	—	रे	—	ऩी	—	सा	—
ऽ	मा	ऽ	ई	री	ऽ	मैं	ऽ	टो	ऽ	ना	ऽ	क	रि	हौं	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

ऩी	सा	ध़	ऩी	सा	—	ग	ग	म	—	ग	रे	सा	गरे	सा	—
कौ	ऽ	आ	की	जी	ऽ	बैं	क	बू	ऽ	तर	के	प	खऽ	ना	ऽ
×				×				×				×			
प	प	प	धप	मग	रेग	सा	सा	—	ग	रे	ग	म	—	ग	—
उ	ड़	त	चिऽ	रैऽ	ऽऽ	या	के	ऽ	नै	ऽ	न	री	ऽ	मैं	ऽ
×				×				×				×			
सा	—	रे	—	ऩी	—	सा	—								
टो	ऽ	ना	ऽ	क	रि	हौं	ऽ								
×				×											

नोट : शेष गीत इसी प्रकार के स्वरों में गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारचार

यह उस समय का गीत है जब बारात वधू के द्वार पर पहुंचती है। इसमें बारात के स्वागत में दौड़-दौड़ कर किये जाने वाले आयोजनों और दूल्हे को देखने को लालायित स्त्रियों की मनोदशा का वर्णन मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारचार

द्वार पै आयी बरात सखी री,
सब मिलि गावो द्वारचार री।।

मंगल चौक पुरावो सखी री,
कंचन कलश धरावो सखी री।।

चौमुख दियना जरावो सखी री,
दुलहा की आरती उतारो सखी री।।

ई समधी का दुआर से निकार री,
टुक-टुक चितवै हमार गली आयके।।

खोखन-खोखन दुधवा पियाई री,
नीकी तरह राखेऊ हमार बेटी बारी री।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारचार (चाचर)

स्थाई

प	—	—	प	—	ध	प	म	ग	—	रे	—	सा	—
द्वा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	पै	ऽ	आ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ब	ऽ
×			2				0			3			
रे	सा	—	सा	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	ग	—
रा	ऽ	ऽ	त	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
रे	रे	—	रे	—	सा	—	रे	सा	—	ऩी	—	प़	—
स	ब	ऽ	मि	ऽ	लि	ऽ	गा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ध़	सा	—	सा	—	सा	—	रे	रे	—	सा	—	—	—
द्वा	ऽ	ऽ	र	ऽ	चा	ऽ	ऽ	र	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की दूसरी कड़ी भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	—	—	ध	—	नी	—	ध	—	—	प	—	ध	प
चौ	ऽ	ऽ	मु	ऽ	ख	ऽ	दि	य	ऽ	ना	ऽ	ज	ऽ
×			2				0			3			
म	ग	—	रे	—	सा	—	रे	ग	—	म	—	ग	—
रा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
रे	रे	—	रे	—	सा	—	रे	सा	—	ऩी	—	प़	—
दु	ल	ऽ	ह्य	ऽ	की	ऽ	आ	र	ऽ	ती	ऽ	उ	ऽ
×			2				0			3			
ध़	सा	—	सा	—	सा	—	रे	रे	—	सा	—	—	—
ता	ऽ	ऽ	रो	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : अन्तरे की शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

विवाह के बाद जब वर अपने सहबोला के साथ कलेवा करने आता है, तब स्त्रियां समवेत् स्वरों में यह गीत गाती हैं। इसमें वर-वधू के सौंदर्य का सरस एवं परिहासपूर्ण वर्णन होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

आये करन कलेवा चारों कुंवर राजा जनकपुरी।
राम लछमन सोहै भरत शत्रुहन पै चवर ढुरी।।
सोभा बनैइ न बरनत जनकपुरी लागै इन्द्रपुरी।
राजा जनक परोसै रानी लिये झारी रतन जड़ी।।
धन्य भाग जनक के प्रेम मगन सुध बुध बिसरी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा (चाचर)

												रे	
म	–	म	ग	सा	रे	–	म	–	म	ग	रे	सा	–
आ	ऽ	ये	ऽ	क	र	ऽ	न	ऽ	क	ऽ	ले	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
सा	–	–	–	–	–	–	म	–	म	–	म	प	धप
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	क	र	ऽऽ
3				×			2				0		
ग	–	म	–	प	ध	–	पध	नी	ध	नी	प	ध	–
न	ऽ	क	ऽ	ले	ऽ	ऽ	वाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
प	ध	ग	–	म	म	–	प	–	म	–	प	प	–
रों	ऽ	कुं	ऽ	व	र	ऽ	रा	ऽ	जा	ऽ	ज	न	ऽ
3				×			2				0		
प	ध	ग	–	म	–	–							
क	ऽ	पु	ऽ	री	ऽ	ऽ							
3				×									

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा

कीरत गोद गोपाल लिए मुख चूमत,
मोद बढ़ायो कि हां जी।

रूप की राशि मयंक मुखी, मोरी राधा के रूप
लजायो कि हां जी।

नाम तो उनके सुनौ घनश्याम कि, जबसे गरब
घर आयो कि हां जी।

नाम तो हमनै सुनै वसुदेव कहां तोरे,
आंगन आयो कि हां जी।

गोरस सिंधु बहे घर भीतर, दौनों
हाथ लुटायो कि हां जी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलेवा (चाचर)

स्थाई

ग	म	—	प	प	म	—	ग॒	—	—	सा	—	सा	रे
की	ऽ	ऽ	र	ऽ	त	ऽ	गो	ऽ	ऽ	द	ऽ	गो	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	—	—	सा	—	ऩी	—	सा	—	—	प़	—	प़	—
पा	ऽ	ऽ	ल	ऽ	लि	ऽ	ए	ऽ	ऽ	मु	ऽ	ख	ऽ
×			2				0			3			
म़	प़	—	ऩी	—	ऩी	—	सा	—	—	सा	—	सा	—
चू	ऽ	ऽ	म	ऽ	त	ऽ	मो	ऽ	ऽ	द	ऽ	ब	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	सा	—	सा	ऩी	सा	—	—	ग	—	—	—
ढ़ा	ऽ	ऽ	यो	ऽ	कि	ऽ	हां	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की दूसरी कड़ी भी इसी तरह गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	—	—	प	—	प	—	प	ध	—	म	—	म	—
ना	ऽ	ऽ	म	ऽ	तो	ऽ	उ	न	ऽ	के	ऽ	सु	ऽ
×			2				0			3			
म	प	ध	म	—	ग	—	म	—	ग	प	—	प	—
नौ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	न	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ
×			2				0			3			
म	प	ध	म	—	ग	—	म	—	ग	प	—	प	—
नौ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	न	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	कि	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	—	ग	—	ग	—	ग	ग	—	म	ग	म	—
ज	ब	ऽ	से	ऽ	ग	ऽ	र	ब	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ
×			2				0			3			
रे	म	—	ग॒	—	सा	—	रे	ऩी	—	सा	—	—	—
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	के	ऽ	हां	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

'गारी' बहुत ही प्रचलित और प्रसिद्ध लोकगीत है। यह ज्यौनार के समय गायी जाती है। वर तथा उसके सगे-सम्बन्धियों को चुन-चुन कर गालियां दी जाती हैं। 'गारी' गाने वालियों के साथ-साथ 'गारी' सुनने वाले भी इसमें विशेष रस लेते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

घर घर बाजत बधउआ आये हैं लाला,

सगरे बरतिया जैवन बैठे,
ढाई सेर के खउआ।। आये हैं लाला........

मड़ये तर समधी जी बैठे
जैसे बरात के नउआ।। आये हैं लाला........

समधी हमरे ऐसे बोलैं,
जैसे बोलै कउआ।। आये हैं लाला..........

हमरे समधी ऐसे लागैं,
जैसे लागै हउआ।। आये हैं लाला........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी (ताल-कहरवा)

स्थाई

—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	घर	घ	र	बाऽ	जऽ	त	ब	धउ	आ	ऽ	आ	ये	हैं	ला	ला
×				×				×				×			

अन्तरा

—	रेरे	रे	सा	रे	म	म	—	—	म	म	म	म	—	रेग	—
ऽ	सग	रे	ब	र	ति	या	ऽ	ऽ	जै	व	न	बै	ऽ	ठेऽं	ऽ
×				×				×				×			
—	रेरे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा	ऩी	सा	रे	रे
ऽ	ढा	ई	से	ऽऽ	रुऽ	के	ऽ	खउ	आ	ऽ	आ	ये	हैं	ला	ला
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे की तरह ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी

जनकपुरी के नर नारी श्री हरि को गावै गारी जी,
सिया राम से बनी।।
बड़ भागी राजा दशरथ जी, तिनके पुत्र तुम चारी जी,
सिया राम से बनी।।
कैसे बांट बनै हरि प्यारो, मइया तीन तिहारी जी,
सिया राम से बनी।।
गोरे दशरथ गोरी कौशिल्या, गोरे सब सरदारी जी,
सिया राम से बनी।।
लछमन भरत कुटुंभ से न्यारे, कैसी सूरत कारी जी,
सिया राम से बनी।।
राजकुंवरि राजन संग जावै, बनी जगत की रीती जी,
सिया राम से बनी।।
रिशियन के क्यों संग सिधारी भगिनी बुआ तुम्हारी जी,
सिया राम से बनी।।
क्रोधवंत ह्व लक्ष्मण बोले, कर अंखियां रतनारी जी,
सिया राम से बनी।।
जनकपुरी मै आये राम नै नीची करी हमारी जी,
सिया राम से बनी।।
हंस हंस रामचन्द्र समुझावैं, सुन लछमन व्रतधारी जी,
सिया राम से बनी।।
इन गारिन कौ विलग न मानौ, गारी प्रेम पियारी जी,
सिया राम से बनी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गारी (कहरवा)

स्थाई

म	म	म	म	म	—	म	—	ग	म	ग	रे	रे	प	प	म
ज	न	क	पु	री	ऽ	के	ऽ	न	र	ना	ऽ	री	ऽ	श्री	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	सा	ऩी
ह	रि	को	ऽ	गा	ऽ	वै	ऽ	गा	ऽ	री	ऽ	जी	ऽ	सि	या
×				×				×				×			
ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	—	—								
रा	ऽम	से	ब	नी	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	प	प	प	—	प	म	म	ध	ध	प	ग	प	म	—
ब	ड़	भा	ऽ	गी	ऽ	रा	ऽ	जा	ऽ	द	श	र	थ	जी	ऽ
×				×				×				×			
म	म	म	ग	रे	ग	रे	ग	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	सा	ऩी
ति	न	के	पु	ऽ	त्र	तु	म	चा	ऽ	री	ऽ	जी	ऽ	सि	या
×				×				×				×			
ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	—	—								
रा	ऽम	से	ब	नी	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×				×				×			
म	—	म	—	म	—	म	म	ग	म	ग	रे	रे	प	प	म
कै	ऽ	से	ऽ	बां	ऽ	ट	ब	नै	ऽ	ह	रि	प्या	ऽ	रो	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	सा	ऩी
म	इ	या	ऽ	ती	ऽ	न	ति	हा	ऽ	री	ऽ	जी	ऽ	सि	या
×				×				×				×			
ऩी	सा	रे	ग	रे	—	—	—								
रा	ऽम	से	ब	नी	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे की तरह गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार

बरातियों सहित वर जब खाना खाने कन्यापक्ष के यहां आता है, तब यह गीत स्त्रियां सामूहिक रूप से गाती हैं। इसमें विविध व्यंजनों की संख्या एवं स्वाद का अतिरंजित वर्णन होता है। विवाह के अवसर पर यह लोकगीत प्रायः सभी अंचलों में गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार

जब ही गोपाल चले मधुबन को, घर अंगना न सुहाये जी।
हो लाला घर अंगना न सुहाये जी।।

नाव नाव गोपिन चढ़ि आयीं, कृष्ण गरुड़ चढ़ि आये जी।
हो लाला कृष्ण गरुड़ चढ़ि आये जी।।

उतर पड़े जमना जी के तीरे, द्वादश तिलक लगाये जी।
हो लाला द्वादश तिलक लगाये जी।।

छप्पन भोग छत्तीसौ व्यंजन, लुचई और सुहारी जी।
हो लाला लुचई और सुहारी जी।।

दाल-भात, मैदा की पूरी, चटनी और अचारी जी।
हो लाला चटनी और अचारी जी।।

रामजी जैवैं लखन जी से पूछैं, कैसी बनी तरकारी जी
हो लाला कैसी बनी तरकारी जी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यौनार (कहरवा)

—	रेरे	रे	रे	सा	नी़	ध़	प़	ध	सा	सा	सा	रे	रे	सा	—
ऽ	जब	ही	गो	पा	ऽ	ल	च	ले	ऽ	म	धु	ब	न	को	ऽ
×				×				×				×			
—	ध़	सा	रे	ग	—	सा	रे	ग	मग	रे	सा	सा	—	—	—
ऽ	घर	अं	ग	ना	ऽ	न	सु	हा	ऽऽ	ये	ऽ	जी	हो	ला	ला
×				×				×				×			
—	पध	ध	प	म	ग	सा	रे	ग	मग	रे	सा	सा	—	—	—
ऽ	घर	अं	ग	ना	ऽ	ना	सु	हा	ऽऽ	ये	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत

बेटी की विदा के समय गाया जाने वाला यह गीत बड़ा ही मर्मस्पर्शी है।

लाड़-प्यार से पाली गयी बेटी के अपनी आंखों से दूर चले जाने की कल्पना से, विह्वल मां-बाप की मनोदशा के साथ-साथ, विदा होती हुई बेटी के मन की व्यथा का भी मार्मिक चित्रण इन गीतों की अपनी विशेषता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत

अरी अरी बेटी पियारी रानी, तोरी बोली भली,
तोरी बचन भली।।
ऐसे बपैया घर छोड़ के बेटी कैहवां चली,
हो बेटी कैहवां चली,

जैसे बनाकी कोयलिया उड़ बांगा गयी,
फुल बगिया गयी।
तैसे बपैया घर छोड़के अब मैं ससुररिया चली।
ससुररिया चली।।

छोड़वा चढ़ै भैया आगे खड़े, हाथे तीर कमान।
हाथे तीर कमान।
रोके बहन की डगरिया, बहन मोरी कैहवा चली,
बहन कैहवां चली।

जानै दे मैया जानै दे, बाबा लगन धरी।
अम्मा साज करी।।
ऐहौं में काज पिरोजन, बिरन तोरे बेटा भये,
तोरे बेटा भये।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (चाचर)

स्थाई

सा	सा	—	सा	—	सा	प	प	—	—	सा	—	सा	प		
अ	री	ऽ	अ	ऽ	री	ऽ	बे	ऽ	ऽ	टी	ऽ	पि	ऽ		
×			2				0				3				
प	—	—	म	—	ग	—	रे	सा	—	सा	—	सा	रे		
या	ऽ	ऽ	री	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	तो	ऽ	री	ऽ		
×			2				0				3				
म	ग	—	रे	—	सा	—	ऩी	ध॒	—	सा	—	सा	रे		
बो	ऽ	ऽ	ली	ऽ	भ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	तो	ऽ	री	ऽ		
×			2				0				3				
ग	म	ग	रे	—	सा	—	सा	—	—	—	—	—	—		
ब	च	न	ऽ	ऽ	भ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
×			2				0				3				

नोट : गीत की अगली पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	—	—	ध	—	ध	—	ध	नी॒	—	सां	—	सां	रें		
जै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ब	ऽ	ना	ऽ	ऽ	की	ऽ	को	ऽ		
×			2				0				3				
ध	सां	—	नी॒	—	ध	—	प	—	—	ध	—	नी॒	—		
य	ली	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	ऽ	ड़	ऽ		
×			2				0			3					
धप	ध	—	ग	—	म	—	प	—	—	म	—	ग	—		
बांऽ	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ग	ऽ	यी	ऽ	ऽ	फु	ऽ	ल	ऽ		
×			2				0			3					
रे	ग	—	म	—	प	—	प	—	—	—	—	—	—		
ब	गि	ऽ	या	ऽ	ग	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
×			2				0			3					

नोट : अन्तरे की दूसरी कड़ी स्थाई की तरह गायी जायेगी। शेष गीत उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत

खाय लेहु खाय लेहु दहिया सेरे भात,
तोहरी बिदा हो बेटी बड़ी भिनसार।।

बिरना कलेउआ अम्मा हंसी खुसी देउ,
हमरा कलेउआ अम्मा दीन्हेउ रिसियाय।।

हम और बिरना अम्मा जन्मैं एक संग,
खेलऊ एक संग अम्मा खायेऊ एक साथ,

बिरना के दीन्हेउ अम्मा बाबा केरे राज,
हमका बिहायेऊ अति बड़ी दूर।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (चाचर-14 मात्रा)

स्थाई

ध़	नी	—	ध़	—	प	—	ध़	सा	—	सा	—	सा	रे
खा	य	ऽ	ले	ऽ	हु	ऽ	खा	य	ऽ	ले	ऽ	हु	ऽ
×			2				0			3			
गग	म	ग	रे	ग	रे	सा	सा	—	—	सा	—	सा	रे
दहि	या	ऽ	से	ऽ	रे	ऽ	भा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त
×			2				0			3			
म	म	—	म	—	म	प	म	ग	—	सा	—	सा	रे
तो	ऽ	ऽ	री	ऽ	बि	ऽ	दा	हो	ऽ	बे	ऽ	टी	ऽ
×			2				0			3			
ग	म	ग	रे	ग	सा	—	सा	—	—	—	—	—	सा
ब	ड़ी	ऽ	भि	ऽ	न	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	—	प	—	प	ध	मम	म	—	म	—	म	प
बि	र	ऽ	ना	ऽ	क	ऽ	लेउ	आ	ऽ	अम्	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			
ग	म	ग	सा	—	सा	रे	ग	—	—	—	—	—	रे
हं	सी	ऽ	खु	ऽ	सी	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ
×			2				0			3			
म	म	—	म	—	म	प	मम	ग	—	सा	—	सा	रे
ह	म	ऽ	रा	ऽ	क	ऽ	लेउ	आ	ऽ	अम्	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			
ग	म	ग	रे	ग	सा	—	सा	—	—	—	—	सा	—
दी	न्हे	उ	रि	ऽ	सि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
×			2				0			3			

गीत : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदागीत

निबिया कै पेड़ जिन काटेउ मोरे बाबुल।
निबिया चिरैया कै बसेर।।

बिटियउ केउ जिन दुख देउ बाबुल।
बिटिया चिरैया की नाई।

जैसे जंगल की चिड़या हो बाबुल,
राति बसै दिन उड़ि चलै,

बाबुल घर हम धियर बिहानी।
राति बसै दिन उड़ि चलैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (चाचर)

सा	सा	—	सा	—	प	—	प	प	—	सा	—	प	—
नि	बि	ऽ	या	ऽ	के	ऽ	पे	ड़	ऽ	जि	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
	ध												
प	प	—	म	—	ग	—	रे	सा	—	सा	—	म	—
का	टो	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
म	म	—	म	—	म	प	म	ग	—	रे	—	ग	—
नि	बि	ऽ	या	ऽ	चि	ऽ	रै	या	ऽ	कै	ऽ	ब	ऽ
×			2				0			3			
ग	रे	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	रे
से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	सा	—	ध़	—	सा	—	सा	सा	—	म	—	म	—
बि	टि	ऽ	य	ऽ	उ	ऽ	के	उ	ऽ	जि	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
म	म	—	म	—	ग	—	रे	—	—	सा	—	—	—
दु	ख	ऽ	दे	ऽ	उ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	बु	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
म	म	—	म	—	म	—	म	ग	—	रे	—	ग	—
बि	टि	ऽ	या	ऽ	चि	ऽ	रै	ऽ	ऽ	या	ऽ	की	ऽ
×			2				0			3			
रे	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई
×			2				0			3			

नोट : गीत का शेष अंश उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (बिहार राज्य का)

हमरी दुलारी हो बेटी आंखी केरी पुतरिया।
आज छोड़िहै हो बेटी अपनी नगरिया।।

रोवत माई हो बाबा अपना रे दुअरवा।
आज सपन भैले बेटी तोहरी रे सुरतिया।।

रोवत लहुरे हो भैया आंखी धर बहियां।
कैसे देख बहिनी तोहरी सुरतिया।।

रोवत सखिया सहेलिया ओही पनघटवा।
कैसे भरबा सखी तोहरे बिन गगरिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिदा गीत (रूपक)

स्थाई

म	म	—	म	—	म	ग
ह	म	ऽ	री	ऽ	दु	ऽ
×			2		3	
म	प	धप	म	—	म	ग
ला	री	होऽ	बे	ऽऽ	टी	ऽ
×			2		3	
म	प	—	गप	मग	रे	सा
आं	खी	ऽ	केऽ	रीऽ	पु	ऽ
×			2		3	
रेप	म़	ग	रे	—	—	—
तऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3	

• गीत की दूसरी पंक्ति भी उपरोक्त स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध	—	—	ध	—	ध	—
रो	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
×			2		3	
म	म					
प	प	धनी	म	—	म	ग
मा	ई	होऽ	बा	ऽ	बा	ऽ
×			2		3	
म	प	—	गप	मग	रे	सा
अ	प	ऽ	नाऽ	रेऽ	दु	ऽ
×			2		3	
रेप	म	ग	रे	—	—	—
अऽ	र	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3	

नोट : अन्तरे की दूसरी पंक्ति स्थाई की तरह गायी जायेगी। शेष पंक्तियां अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग गीत

इन गीतों का मुख्य भाव वधु के ससुराल पहुंचने पर प्रिय से प्रथम मिलन का औत्सुक्य, सुखानुभूति की कल्पना, आकांक्षापूर्ण उछाह, आशंकाजनित भाव भी है। प्रेम, रोमांच, आकांक्षा, आशंका और अधीरता आदि भावों की इन्द्रधनुषी छवियों का बड़ा ही मोहक वर्णन इस तरह के गीतों में मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग-गीत

आज सुहाग की रात चन्दा तुम उइहौ।।
चंदा तुम उइहौ सरूज निज उइहौ।।
आज करहू बड़ी रात।।

मेरे हिरदै विरस जिन किहौ, मुरुग जिन बोलेऊ।।
मोरी छतियां बिरहजिन जायेऊ, तू पांनहि फाटेऊ।।
आज करहू बड़ी रात।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुहाग गीत (कहरवा)

स्थाई

—	नी	नी	नी	नी	—	सां	रें	सांनी	(सां)	—	नी	ध	प	म	ग
ऽ	आ	ज	सु	हा	ऽ	ग	की	राऽ	ऽ	ऽत	चं	दा	ऽ	तु	म
×				×				×				×			
म	प	प	नी	ध	प	म	ग	म	प	प	—	धनी	धप	धनी	सां
उई	हौ	ऽ	चं	दा	ऽ	तु	म	उ	इ	हौ	ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
×				×				×				×			
—	—	—	नी	नी	—	नी	नी	नी	सां	—	सा	प	नी	सां	रें
ऽ	ऽ	ऽ	चं	दा	ऽ	तु	म	उई	हौ	ऽ	स	रू	ज	नि	ज
×				×				×				×			
नी	ध	प	—	धनी	धप	धनी	सां	—	नी	नी	नी	नी	नी	सां	रे
उ	ई	हौ	ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	क	र	हू	ब	ड़ी
×				×				×				×			
सांनी	(सां)	—	नी	ध	प	म	ग	म	प	प	—	धनी	धप	धनी	सां
राऽ	ऽ	ऽत	चं	दा	ऽ	तु	म	उई	ऽ	हौ	ऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	—	नी	नी	नी-	नी	—	नी	ध	सां	नी	ध	प	प	—	नी
ऽ	ऽ	मो	रे	हिर	दै	ऽ	बि	र	स	जि	न	कि	हौ	ऽ	मु
×				×				×				×			
ध	प	म	ग	म	प	—	नी	ध	प	म	ग	म	प	प	—
रु	ग	जि	न	बो	ले	ऊ	मु	रु	ग	जि	न	बो	ऽ	ले	ऊ
×				×				×				×			

गीत की दूसरी पंक्ति भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

धनी	धप	धनी	सां	—	नी	नी	नी	नी	नी	सां	रें	सांनी	(सां)	—	नी
हांऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	क	र	हू	ब	ड़ी	राऽ	ऽ	ऽत	चं
×				×				×				×			
ध	प	म	ग	म	प	प	—								
दा	ऽ	तु	म	उ	इ	हौ	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखवाली गीत

यह गाना खेत में खड़े अनाज की रखवाली करते समय गाया जाता है। पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड खेत में जब दाना चुगने के लिए आते हैं, तब ख़ाली टीन ज़ोर से बजा कर उन्हें भगाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखवाली गीत

अपने सिवनवा में रचल्यू मचनवां,
नित उठ पैहरा देऊं रे।।

जो कोई होतै हमरा संघाती,
बारी-बारी पैहरा देतिउ रे।।

लहरा पै लहरा आवै गिलैरा,
चिड़िया चुन-चुन जाती रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खेत रखाने का गीत (कहरवा)

स्थाई

सां	सां	सां	सां	सां	—	सां	सां	नी	सांनी	ध	प	ध	नी̲	ध	—
अ	प	नै	सि	व	न	वाँ	में	र	चऽ	ल्यू	म	च	न	वां	ऽ
×				×				×				×			
ध	नी̲	ध	प	म	ग	रे	सा	रे	सा	सा	—	—	—	—	—
नि	त	उ	ठ	पै	ह	रा	ऽ	दे	ऊं	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
ध	—	—	नी̲	प	नी̲	ध	प	ध	नी̲	ध	प	म	ग	रे	सा
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	त	उ	ठ	पै	ह	रा	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	सा	—	—	—	—	—								
दे	ऊं	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सां	–	–	–	रें	गं	–	–	रें	सां	नी	प	ध	प	–	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
ध	–	ध	ध	ध	नी	प	–	ध	नी	सां	रे	सां	नी	सां	–
जो	ऽ	को	ई	हो	ऽ	ते	ऽ	ह	म	रा	सं	घा	ऽ	ती	ऽ
×				×				×				×			
नी	सां	नी	सां	ध	नी	ध	प	प	नी	ध	–	–	–	–	–
बा	री	बा	री	पै	ह	रा	ऽ	दे	तिउ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
सां	–	–	–	रें	गं	–	–	रें	सां	नी	प	ध	प	–	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत

यह गीत, गांवों की स्त्रियां अपने घर में या किसी के यहां मज़दूरी पर चक्की पीसते समय गाती हैं। गीत के शब्दों, भावों एवं स्वरों में इतनी तन्मय हो जाती हैं कि एक ही बैठक में ढेरों अनाज पीस डालती हैं। गीत के भाव एवं स्वर पिसाई के समय के कठिन श्रम को भी महसूस नहीं होने देते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत

गैले बिदेसवा ककस जिया बोधबि हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

बहेला बयार पुरवैया तो सिखचन डोलत हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

अंगुरिन मंगिया नकरबू नयन बिच काजर हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

अस कहि जियरा बोधैबू कि हरिघर बाटे हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

होतिऊ मैं जल की मछरिया जलहि बीच रहती हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

हरि अउते असननवा चरन छुई लेतिउ हो।
अरे रामा, मोरा प्रभु।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकिया गीत (चाचर)

स्थाई

ध	—	—	ध	—	सां	रें	नी॒	नी॒	—	ध	—	प	—
गै	ऽ	ऽ	लै	ऽ	बि	ऽ	दे	स	ऽ	वा	ऽ	क	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	—	म	—	म	—	म	प	—	ध	सां	नी॒	ध
क	स	ऽ	जि	ऽ	या	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ध	ऽ	बि	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	—	—	—	—	म	म	ग	रे	ग	सा	—
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रे	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	रे	—	रे	—							
मो	रा	ऽ	प्र	ऽ	भु	ऽ							
×			2										

• गीत की दूसरी पंक्ति भी इन्हीं स्वरों में गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	ग	—	सा	—	सा	—	रे	म	—	प	—	प	ध
अं	गु	ऽ	रि	ऽ	न	ऽ	मं	गि	ऽ	या	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
म	प	—	प	—	नी	—	नी	नी	ध	प	ध	म	—
क	र	ऽ	बू	ऽ	न	ऽ	य	न	ऽ	बि	ऽ	च	ऽ
×			2				0			3			
म	प	ऽ	ध	सां	नी	ध	प	—	—	नी	—	नी	—
का	ऽ	ऽ	ज	ऽ	र	ऽ	हो	ऽ	ऽ	हो	ऽ	न	ऽ
×				2			0			3			
नी	नी	ध	प	ध	म	—	म	प	ऽ	ध	सां	नी	ध
य	न	ऽ	बि	ऽ	च	ऽ	का	ऽ	ऽ	ज	ऽ	र	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	प	—	—	—	म	म	ग	रे	ग	सा	—
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रे	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	रे	—	रे	—							
मो	रा	ऽ	प्र	ऽ	भु	ऽ							
×			2										

नोट : गीत की अगली पंक्ति स्थाई के स्वरों में गायी जायेगी और शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत

यह एक प्रसिद्ध बुन्देलखण्डी लोकगीत है। पानी भरने के लिए पनघट को जाते और पनघट पर पानी भरते समय स्त्रियां इसे सामूहिक रूप से गाती हैं। गीत के शब्द एवं स्वरों में तन्मय स्त्रियां पानी भरने के समस्त श्रम को भुलाये रहती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (बुंदेलखंडी)

नदिया लौं हमारे संग चलौ।।

जा नदिया मैं चोरवा लगत है,
ढार तरवरिया बांधैं चलौ।। नदिया......

कंचन थार में जिउना परौसौ,
एजी तुम जैओ, हम ठाड़े रहैं।। नदिया......

झंझन गड़आ गंगाजल पानी,
एजी तुम पीवौ, हम ठाड़े रहैं।। नदिया......

फुलन की सेज, मौंती झल्लर को तकिया,
एजी तुम सोवौ, हम विजुना डोलैं॥ नदिया......

भोर भई परदेसिया भागौ,
एजी परदेसिया नहयां काहू को मीत॥ नदिया.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (बुंदेलखंडी) (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			न दि
रे रे – रे	रे – रे ग	सा रे – रे	सा – सा रे
या लौं ऽ ह	मा ऽ रे ऽ	सं ग ऽ च	लौ ऽ न दि
×	×	×	×
ऩी ऩी ऩी ऩी	सा रे ग सा		
या लौं ह मा	रे ऽ सं ग		
×	×		

अन्तरा

ऩी ऩी ऩी ऩी	सा – ऩी सा	गम रे – सा	रे रे सा –
जा ऽ न दि	या ऽ मैं ऽ	चोर वा ऽ ल	ग त है ऽ
×	×	×	×
म म म म	म म म ग	रे ग – रे	सा सा सा रे
ढा र त र	व रि या ऽ	बां धैं ऽ ऽ	च लौ न दि
×	×	×	×
नी नी नी नी	सा – नी सा	ग रे सा सा	
या लौं ऽ ह	मा ऽ रे ऽ	सं ग च लौ	
×	×	×	

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (बुंदेलखंडी)

ननद भौजइया दोऊ पनियां कौं निकरीं,
सिर गगरी हाथ लेज।। मोरी गुइयां।
सासू ने भर लई, ननदिया ने भर लई,
सो हमरी रही उतराय।। मोरी गुइयां।
सासू ने मारी ननदिया ने कूटी,
तो देवरा ने दई निकार।। मोरी गुइयां।
बे गयीं बे गयीं मैके की गलियां
तो बे गयीं पहड़िया की ओट।। मोरी गुइयां।
बारा बरस पाछे राजा पिया आये,
तो बैठें हैं पैर दुआर।। मोरी गुइयां।
पीलो हो पीलो मोरे राजा से बेटा,
सो रच देहौं दूजौ बियाहु।। मोरी गुइयां।
जेलो हो, जेलो मोरे राजा के भैया,
सो दूजी भौजइया ले आऊं।। मोरी गुइयां।
मांय जो फेंकी जो झन-झन झारी,
समुन्दर बहौ दूधौ भात।। मोरी गुइयां।
लैहों लैहों री मोरी नवल दोलइया,
सो लैहों कमल जैसो फूल।। मोरी गुइयां।
कौन बस तोरी नवल दुलैया,
सो कैसी परै पोसाक।। मोरी गुइयां।
सासूं ने डाली है चनन पलुकिया,
सो ससुरा पलट दोऊ पांव।। मोरी गुइयां।
कौना ने मारी भैना, कौना ने कूटी,
सौ कौना ने दई है निकार।। मोरी गुइयां।
मांय पठैदो मैके की गलियां,
सो बहना पठैओ ससुराल।। मोरी गुइयां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पनघट गीत (रूपक)

स्थाई

रे	ग	—	रे	—	ग	—	म	प	धप	म	—	ग	रे
न	न	ऽ	द	ऽ	भौ	ऽ	ज	इया	ऽऽ	दो	ऽ	ऊ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
रे	ग	—	म	—	ग	—	सा	—	—	सा	—	ऩी	—
प	नि	ऽ	यां	ऽ	कौं	ऽ	नि	क	ऽ	रीं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	रे	—	ग	—	म	—	ग	—	सा	रे	—	ऩी	—
सि	र	ऽ	ग	ऽ	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ	हा	ऽ	थ	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	—	—	—	—	—	—	—	सा	सा	रे	—	ऩी	सा
ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	मो	री	—	गुइ	यां
×			2		3		×			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

				सा	ग	—	रे	—	ग	—	म	प	—
				सा	ऽ	ऽ	सू	ऽ	ने	ऽ	भ	र	ऽ
				×			2		3		×		
म	—	ग	रे	रे	ग	—	म	—	ग	—	सा	—	—
ल	ऽ	ई	न	न	दि	ऽ	या	ऽ	ने	ऽ	भ	र	ऽ
2		3		×			2		3		×		
ऩी	—	—	—	सा	रे	—	ग	—	म	—	ग	रे	रे
ल	ऽ	ई	ऽ	ह	म	ऽ	री	ऽ	र	ऽ	ही	ऽ	उ
2		3		×			2		3		×		
नी	सा	—	—	सा	—	—	—	सा	रे	—	नी—	—	सा
त	रा	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री	ऽ	गुइ	ऽ	यां
2		3		×			2		3		×		

नोट : गीत की शेष पंक्तियां अंतरे के उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनना

खेत काटते समय अनाज की बाली एवं उसके दाने खेतों में गिर जाते हैं। अतः खेत कटने के बाद, गिरे हुए अनाज को महिलायें बीनने जाती हैं। इस अनाज बीनने को सीला बीनना कहते हैं। सीला बीनते समय उनका मन न ऊबे इसलिए सीला बीनने के साथ-साथ गाती भी जाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनने का गीत

सासू की बीनी डलरिया रे,
सीला बीनै जाऊं।।

अंगना मां बोले सौना चिरैया,
बन मा कुहुक रहे मोरवा रे।।
सीला बीनै जाऊं।।

अबकी सावन मां सतरंग चुनरी,
मैका रंगा दे संवरिया रे।।
सीला बीनै जाऊं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सीला बीनने का गीत (कहरवा)

स्थाई

ध़	सा	–	सा	सा	सा	सा	सा	रे	प	म	–	ग	–	सा	सा
सा	सू	ऽ	की	बी	नी	ऽ	ड	ल	रि	या	ऽ	रे	ऽ	सी	ऽ
×				×				×				×			
रे	ग॒	–	रे	सा	–	सा	–								
ला	बी	ऽ	नै	जा	ऽ	ऊं	ऽ								
×				×											

अन्तरा

म	म	–	गरे	रे	ग	ग	सा	सा	रे	–	नी	सा	–	सा	–
अंग	ना	ऽ	माऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	सौ	ना	चि	ऽ	रै	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
ध़	सा	–	सा	सा	सा	सा	सा	रे	प	म	–	ग	–	सा	सा
बन	मा	ऽ	कु	हु	क	र	हे	मो	र	वा	ऽ	रे	ऽ	सी	ऽ
×				×				×				×			
रे	ग॒	–	रे	सा	–	सा	–								
ला	बी	ऽ	नै	जा	ऽ	ऊं	ऽ								
×				×											

नोट : गीत की अन्य पंक्तियां अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

'कजरी' ऋतु गीत है। कजरी, मुख्यतया सावन मास का गीत है, यूं यह वर्षा ऋतु में कभी भी गायी जा सकती है और गायी भी जाती है। सावन के महीने में अधिकांश स्त्रियां अपने मैके में होती हैं। अपने मैके में होने के कारण वह पूर्ण स्वाधीनता का अनुभव करती हुई, सरस गीत गाती हैं।

कजरी गायन की अनेक शैलियां प्रचलित हैं, कुछ में ठुमरी अंग विशेष रूप से परिलक्षित होता है। शैली के साथ-साथ इसको गाये जाने के अवसरों में भी वैविध्य है। कजरी कभी झूले पर बैठकर गायी जाती हैं और कभी स्त्रियां मेले के लिए गोल बना कर चलते हुए गाती हैं। इस प्रकार की प्रथा मिर्ज़ापुर और बनारस के गांवों में अधिक है।

कजरियों में अधिकतर वर्षा ऋतु का ही वर्णन होता है। शृंगार इन गीतों का प्रधान रस है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (अवध की धुन पर)

अरे रामा सावन मास सुहावन,
सब सखी गावैं काजरी।।

झूला पड़ा कदम की डारी,
झूलैं सब बृज की नारी, रामा।
अरे रामा गावैं राग मल्हार,
सो दै तारी रे हारी।। सब सखी.........

घन उमड़ घुमड़ कर बरसै,
छबि देख देख जिया तरसै, रामा।
अरे रामा अजहु न आये श्याम,
हिये दुख भारी रे हारी। सब सखी......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

स्थाई

रे	नी़	सा	रे	ग	—	म	म	म	प	म	ग॒	रे	—	ग॒	ग॒
अ	रे	रा	मा	सा	ऽ	व	न	मा	ऽ	स	सु	हा	ऽ	व	न
×				×				×				×			
रे	रे	सा	सा	सा	रे	सारे	ग॒	रे	ध़	—	नी़	सा	—	—	—
स	ब	स	खी	गा	ऽ	बैंऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	ज	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

														सा	रे
														झू	ला
ग	म	—	म	रे	ग	सा	रे	ग	—	म	—	—	—	म	ग
प	ड़ा	ऽ	क	द	म	की	ऽ	डा	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	झू	ऽ
×				×				×				×			
म	प	प	प	म	प	ग	रे	रे	ग	म	ग	रे	—	सा	—
लैं	ऽ	स	ब	बृ	ज	की	ऽ	ना	ऽ	री	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×				×				×				×			
रे	नी़	सा	रे	ग	—	म	म	म	प	म	ग	रे	—	ग	ग
अ	रे	रा	मा	गा	ऽ	वैं	ऽ	रा	ऽ	ग	म	ल्हा	ऽ	र	सो
×				×				×				×			
रे	—	सा	सा	सा	रे	सारे	ग	रे	—	ध़	नी़	सा	—	—	—
दै	ऽ	दै	ऽ	ता	ऽ	रीऽ	ऽ	रे	ऽ	हा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी)

कान्हा तोरी बांकी चितवनियां,
ऐरे सांवरिया।

मदभरे सुरंग रसीले नैयनवां,
भौहैं तोरी तनल कमनियां,
ऐरे सांवरिया।।

मोर मुकुट और कानन कुंडल,
सिर सोहै लटकनियां,
ऐरे सांवरिया।।

अंग-अंग राजत आभूषण,
कटि सोहै करधनियां,
ऐरे सांवरिया।।

संग मा सोहै नवल नारि एक,
रुकमिन नाम बखनियां,
ऐरे सांवरिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी) (कहरवा)

स्थाई

रे	ग	म	पध	ग	म	रे	ग	ऩी	सा	ऩी	प़	ऩी	सा	रेग	म
का	न्हा	तो	रीऽ	बां	की	चि	त	व	नि	यां	ऽ	ऐ	रे	सांऽ	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	सा	—												
व	रि	या	ऽ												
×															

अन्तरा

रे	रे	म	म	प	प	प	प	म	—	प	प	मध	पध	मग	रे
म	द	भ	रे	सु	रं	ग	र	सी	ऽ	ले	नै	यऽ	नऽ	वां	ऽऽ
×				×				×				×			
रे	ग	म	पध	ग	म	रे	ग	ऩी	सा	ऩी	प़	ऩी	सा	रेग	म
भौं	हैं	तो	रीऽ	त	न	ल	क	म	नि	यां	ऽ	ऐ	रे	सांऽ	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	सा	—												
व	रि	या	ऽ												
×															

नोट : गीत की शेष पंक्तियां अन्तरे के ही स्वरों में गायी ज़ायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी)

कैसे खेलै जैबू सांवन मा कजरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी।।

तू तो जात हौ अकेली, केऊ संग ना सहेली,
कत्तौ भूलि जैहौ रहिया-डगरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी।।

एक तो सांवन की अंधेरी, बदरा घेरि बेरी-बेरी,
दूजै चमकै लागी बैरिन बिजुरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी।।

कयल्यू सोरहौ शृंगार बदरा दिहलिस बिगार,
भीज गैलै मोरी धानी रे चुनरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी।

कैसे खेलब हम कजरिया, मोरी भीजी रे चुनरिया,
ननदी ताना मारे कहिहै फुहुरिया,
बदरिया घेरि आयी ननदी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी) (कहरवा)

स्थाई

सा	–	सा	–	सा	रे	रे	प	प	–	म	–	ग	–	ग	ग
कै	ऽ	से	ऽ	खे	ऽ	लै	ऽ	जै	ऽ	बू	ऽ	सां	ऽ	व	न
×				×				×				×			
रे	–	सा	–	सा	रे	रे	ग	सा	–	ऩी	प़	प़	ऩी	ऩी	–
मा	ऽ	क	ऽ	ज	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ब	ऽ	द	रि	या	ऽ
×				×				×				×			
नी	सा	रे	ग	सा	रे	ग	म	ग	–	–	–	सा	–	–	–
घे	ऽ	रि	ऽ	आ	ऽ	यी	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

सा	–	सा	–	रे	–	–	रे	म	–	म	–	प	–	प	–
तू	ऽ	तो	ऽ	जा	ऽ	ऽ	त	हौ	ऽ	अ	ऽ	के	ऽ	ली	ऽ
×				×				×				×			

नोट : शेष गीत इसी प्रकार गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

कौन रंग मुंगवा कवन रंग मोतिया,
कवन हो रंगना ननदी तोर बिरना।।

लाल रंग मुंगवा, सबज रंग मोतियां,
सांवर हो रंगना, ननदी तोर बिरना।।

कहां सोहै मुंगवा कहां रे सोहै मोतिया,
कहां रे सोहै ना ननदी तोर बिरना।।

सीस सोहै मुंगवा, बेसर सोहै मोतिया,
सेजरिया सोहै ना ननदी तोर बिरना।।

टूटि जैहै मुंगवा, दरिक जैहैं मोतिया,
बिछुड़ि हो जैहै ना ननदी तोर बिरना।।

बीन लैंबै मुंगवा, बटोर लैबै मोतिया,
मनाय हो लैबै ना ननदी तोर बिरना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	ध	प	ध	ध	प	म	ग	रे	(सा
कौ	न	रं	ग	मुं	ग	वा	क	व	न	रं	ग	मो	ति	या	(क
×				×				×				×			
सारे	रेग	रे	सा	सारे	गम	—	मग	म	—	रे	रेग	रे	सा	सा)	—
वन	होऽ	रं	ग	नाऽ	ऽऽ	न	नऽ	दी	ऽ	तो	रेऽ	बि	र	ना)	
×				×				×				×			

नोट : कोष्ठक के भीतर वाली कड़ी दो बार गायी जायेगी। गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी)

घेरि घेरि आयी सावन की बदरिया ना।

पानी बरसै बड़ी जोर, सूझै नाहीं चारों ओर,
जिया कांपे मोरा, चमकैला बिजुरिया ना।।

एक तो सांवन की अंधेरी, बदरा घेरि बेरी-बेरी,
डर लागे मोहे, सूनी बा अटरिया ना।।

जब से गये बन माली, पतिया एकौ न डारी,
मोहे याद आवै निसदिन सांवरिया ना।।

जब से गैलै हो बिदेस, दीन्है एकौ न संदेस,
बेगी आवो, मोरी बीतेला उमरिया ना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी) (दादरा)

स्थाई

ग	रे	ग	सा	–	सा	रे	ग	रे	ग	–	ग
घे	ऽ	रि	घे	ऽ	रि	आ	ऽ	यी	सा	ऽ	वन
0			×			0			×		
सा	–	सा	रेऽ	–	रे	सा	–	–	सा	–	–
की	ऽ	ब	दरि	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		
ग	–	ग	ग	ग	ग	म	ग	म	रे	ग	–
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		
सा	–	रे	ग	म	ग	सा	रे	सा	सा	–	–
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		
ग	–	म	प	प	–	प	–	–	प	–	–
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		
ग	–	म	प	ध	–	म	–	–	म	ग	रे
हो	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	—	ग	गग	—	ग	ग	ग	—	म	—	म
पा	ऽ	नी	बर	ऽ	से	ब	ड़ी	ऽ	जो	ऽ	र
0			×			0			×		
ग	सा	रे	ग	—	म	रे	—	ग	सा	—	सा
सू	ऽ	झै	ना	ऽ	हीं	चा	ऽ	रों	ओ	ऽ	र
0			×			0			×		
ग	रे	ग	सा	—	सा	रे	ग	रे	गऽ	—	ग
जि	या	ऽऽ	कां	ऽ	पै	मो	ऽ	रा	चम	ऽ	के
0			×			0			×		
सा	—	सा	रे	—	—	सा	—	—	सा	—	—
ला	ऽ	बि	जु	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
0			×			0			×		

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी)

नहीं आये सजना हमार,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

सावन बहरिया छायी चहुं ओरिया,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

चुये मोरी मड़ई उसार,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

बोलेली कोयलिया अमवा की डरिया,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

हुलसेला जियरा हमार,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

बादर गरजे बिजुरी चमके,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

डरैला मनुआ हमार,
सांवनवां आइ गइले ननदी।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (मिर्ज़ापुरी) (कहरवा)

स्थाई

प़	प़ध़	ध़सा	सा	सा	सा	रेग	सारे	ग	गम	गरे	रेग	सा	सा	रेग	सारे
ना	हींऽ	आऽ	ये	स	ज	नाऽ	हऽ	मा	ऽऽ	रुऽ	सांऽ	व	न	वांऽ	ऽऽ
×				×				×				×			
ग	गम	गरे	रेग	सा	सा	सा	सा								
आ	इऽ	गैऽ	लैऽ	न	न	दी	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ध़ ध़ सा रे	म म म –	प ध पध म	म ग रे ग
सा व न ब	ह रि या ऽ	छा यी चंऽ हु	ओ रि या सां
×	×	×	×
सा सा रेग सारे	ग गम गरे रेग	सा सा सा प़	
व न वांऽ ऽऽ	आ इऽ गैऽ लैऽ	न न दी ऽ	
×	×	×	
प़ प़ध़ ध़सा सा	सा सा रेग सारे	ग गम गरे रेग	सा सा रेग सारे
चु येऽ मोऽ री	म ड़ ईऽ ऊऽ	सा ऽऽ रुऽ सांऽ	व न वांऽ ऽऽ
×	×	×	×
ग गम गरे रेग	सा सा सा प़		
आ इऽ गैऽ लैऽ	न न दी ऽ		
×	×		

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी

बदरिया बरसै रस कै बूंद,
किवरिया खोलो री सजनी।

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे, पवन चले झकझोर,
थर-थर कांप रहो अंग मोर।। किवरिया.........

बिरहिन रहिऊ, दुसह दुख काटेउ, लिख-लिख भेज्यो संदेस,
अब तो आवा बिदेसी तोर।। किवरिया........

लै आयेउं रस बैंदुली-टिकुली, झुलनी झोंकेदार,
मगही पान, बनारसी ईंगुर।। किवरिया..........

काहे खड़ीऊ किवरिया रोपे, चितहि-चितहि मुसकाहु,
झिंझरिन लखिऊ बतीसी तोर।। किवरिया.........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (कहरवा)

स्थाई

															म
															ब
ग	रे	सा	ऩी	सा	रे	रे	—	रे	ग	रे	ग	म	प	प	ध
द	रि	या	ऽ	ब	र	सै	ऽ	र	स	कै	ऽ	बूं	ऽ	द	कि
×				×				×				×			
म	ग	म	ग	म	रेग	—	पम	ग	—	सा	ऩी	सा	—	—	—
व	रि	या	ऽ	ऽ	खोऽ	ऽ	लोऽ	री	ऽ	स	ज	नी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे ग सा सा	रे ग – रे	रेग म म म	ग रे ग म
रि म झि म	रि म झि म	मेऽ ऽ हा ऽ	ब र से ऽ
×	×	×	×
प प प प	प – प ध	ग प – म	ग रे सा ऩी
प व न च	ले ऽ झ क	झो ऽ ऽ र	थ र थ र
×	×	×	×
सा रे रे रे	रे ग रे ग	म प प ध	म ग म ग
कां ऽ प र	हो ऽ अं ग	मो ऽ र कि	व रि या ऽ
×	×	×	×
म रेग – पम	ग – सा ऩी	सा – – –	
ऽ खोऽ ऽ लोऽ	री ऽ स ज	नी ऽ ऽ ऽ	
×	×	×	

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कजरी (बनारसी)

सखियां झूलन चलीं फुल बगियन,
घिर आयी कारी बदरिया ना।।

फुलवा बीनै हरवा गूधैं,
करे सिगरियां ना।।

उमड़ घटा घन चहुदिश छाये,
परत फुहरिया ना।।

कारी रैन भयावन लागै,
चमके बिजुरिया ना।।

कापर करूं शृंगार मोरी सजनी,
घर नाहीं संवरिया ना।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

कजरी (बनारसी) (कहरवा)

स्थाई

ग	ग	सा	रे	ग	ग	ग	म	मग	रेग	सा	सा	साग	रेग	सा	नी
स	खि	यां	ऽ	झू	ल	न	च	लींऽ	ऽऽ	फु	ल	बऽ	गिऽ	य	न
×				×				×				×			
प़	ऩी	सा	रेग	सारे	ग	ग	म	मग	रेग	सा	ऩी	सा	—	—	—
घि	र	आ	यीऽ	ऽऽ	का	री	ब	दऽ	रिऽ	या	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

रे	ग	सा	—	सारे	गम	ग	—	—	म	म	म	मध	पध़	म	ग
फु	ल	वा	ऽ	बीऽ	ऽऽ	नै	ऽ	ऽ	ह	र	वा	गूंऽ	ऽऽ	धैं	ऽ
×				×				×				×			
प	प	—	म	प	प	प	ध	ग	प	—	म	ग	ग	सा	रे
क	रै	ऽ	सिं	ग	रि	यां	ऽ	ना	ऽ	ऽ	हो	स	खि	यां	रे
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा

असाढ़, सावन, भादों, क्वांर—इन चार महीनों की प्राकृतिक सुषमा की पृष्ठभूमि में विरहिणी की मनोव्यथा का वर्णन 'चौमासा' गीतों का मुख्य विषय है। हिंडोला, कजरी, मल्हार और सावन की भांति, यह भी पावस ऋतु का बहुप्रचलित लोकगीत है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा

प्रथम मास असाढ़, हे सखी,
साज चलेलीं जलधार हो।
उमड़ घुमड़ मेहा बरसन लागे,
भींज गये लाम्बे केस हो।।

सावन हे सखी शब्द सुहावन,
चहुदिस बरसेला मेह हो।
दादुर की धुन चहु दिस छायी,
मोर पिया परदेस हो।।

भादों हे सखी रैन भयावन,
दुजै अंधेरिया रात हो।
दामिन दमक दमक डरपावै,
निसदिन सहू कलेस हो।।

क्वार हे सखी आस मिलन की,
नदिया निर्मल नीर हो।
मैं बैठी नित पंथ निहारूं,
श्याम रहे परदेस हो।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौमासा (कहरवा)

स्थाई

— रे रे सा	रे — सा सा	म रे रे सा	रे — सा सा
ऽ प्र थ म	मा ऽ स अ	ऽ सा ऽ ढ़	हे ऽ स खी
×	×	×	×
— म म ग	म प प प	— मप ध प	म ग — —
ऽ सा ज च	ले लीं ज ल	ऽ धाऽ ऽ र	हो ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×
— रे रे म	म पम म गरे	— रे रे ग	सा — नी —
ऽ उम ड़ घु	म ड़ऽ मे हाऽ	ऽ बर स न	ला ऽ गे ऽ
×	×	×	×

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली

यह बुंदेलखण्ड का एक अत्यन्त प्रचलित लोकगीत है। प्रसिद्ध 'चन्द्रावली' कथानक को लक्ष्य करके ही इस गीत की रचना की गयी है।

चन्द्रावली 'राछरौ' की धुन पर ही गाया जाता है। इसमें झांझ, झीका, चिकारा आदि वाद्यों द्वारा संगत की जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली राछौर

ननद भावज पानी कूं गयी रे।
अरे गयी सरवर ताल, लाग्यौ है सावन मास हो।।

भावज उचिकै चलि दई,
रे ननदी पल्ली हो पार।। लाग्यौ.......
डेरा तो पड़े हैं पठान के,
रे दै लई तम्बुअन बीच।। लाग्यौ........

सरग उड़ती चीलिया,
री जैयौ बाबुल के देश।। लाग्यौ..........
हमरे बाबुल तै यों कहौ,
रे बेटी तुमुआं बीचु।। लाग्यौ.......
हमरे बिरन ते यों कहौ,
रे मैना परी बंदीखान।। लाग्यौ........

बादुल सुनि के रोई परे,
रे मैया खात पछार।। लाग्यौ.....
बिरन सुनि कै रोई परे,
रे भावज खात पछार।। लाग्यौ...........

सरग उड़ते कागुला,
रे जइयो ब्याहै के देस।। लाग्यौ.........
हमरे ससुर ते यों कहौ,
रे बहुअल परी बंदीखान।। लाग्यौ.........
हमरे ब्याहे ते यों कहौ,
रे गोरी परी बंदीखान।। लाग्यौ........

ससुर तौ सुनि के रोई परे,
रे सासुल खात पछार।। लाग्यौ.......
ब्याहे बेदरदी हंसि रहे,
रे ऐसी लाऊं द्वै चारि।। लाग्यौ..........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबुल हतिया कसि दई,
रे वीरन घुड़िला पलान।। लाग्यौ........
ब्याहे बेदरदी पालकी,
रे चाबें नागर पान।। लाग्यौ........

बाबुल उतरे खेत में,
रे वीरन वर की हो छांह।। लाग्यौ.......
ब्याहे बेदरदी बाजार में,
रे चाबें नागर पान।। लाग्यौ........

हतिया तो लै लै डेढ़ सौ,
रे घुड़िला ओरू न छोरू। लाग्यौ......
बेटी ऐ हमारी छोड़ि दे,
रे कुल कू लगि जाइगौ दागु।। लाग्यौ.......
मैना ऐ हमारी छोड़ि दे,
रे कुल कू लगि जाइगौ दागु।। लाग्यौ........

ना लऊं हतिया डेढ़ सौ,
रे बुड़िला ओरू न छोरू।। लाग्यौ.......
बेटी तिहारी न 'छोड़ूं',
रे ऐसी मिलबे की नांई।। लाग्यौ........
मैना तिहारी न 'छोड़ूं',
रे ऐसी मिलबे की नांई।। लाग्यौ........

रुपिया तो ले लै ले डेढ़ सौ,
रे गिन्नी ओरू न छोरू।। लाग्यौ........
ब्याही तो ले लै डेढ़ सौ,
रे क्वांरी ओरू न छोरू।। लाग्यौ........
बहुअ ऐ हमारी छोड़ि दे,
रे ऐसी मिलबे की नांई।। लाग्यौ......
गोरी ऐ हमारी छोड़ि दे,
रे जाकी पतरी कमरि लंबे केस।। लाग्यौ..........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना लऊं रुपया डेढ़ सौ,
रे गिन्नी ओरू न छोरू।। लाग्यौ.......
ना लऊं ब्याही डेढ़ सौ,
रे क्वांरी ओरू न छोरू।। लाग्यौ..........
बहू तिहारी नांई दऊं,
रे ऐसी मिलबे की नांई।। लाग्यौ........
गोरी ऐ तिहारी नांई छोड़ूं,
रे जाकी पतरी कमरि, लंबे केस।। लाग्यौ.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रावली (रूपक)

प	प	—	नी	—	नी	—	सा	सा	—	सा	—	सा	—
न	न	ऽ	द	ऽ	भा	ऽ	व	ज	—	पा	ऽ	नी	ऽ
×			2		3		×			2		3	
नीसा रेग॒	—		ग॒	—	ग॒	—	ग॒	ग॒	—	ग॒	—	ग॒	—
कूंऽ ऽऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ग	ऽ	ई	ऽ	ऽ	रे	ऽ	अ	रे
×			2		3		×			2		3	
ग॒	ग॒	—	ग॒	—	ग॒	—	सा	सा	—	ग॒	रे	सा	—
ग	ऽ	ऽ	ई	ऽ	रे	ऽ	स	र	ऽ	व	ऽ	र	
×			2		3		×			2		3	
ऩी	—	—	—	—	ऩी	—	प़	—	—	ऩी	—	ऩी	—
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ग्यौ	ऽ	है	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	—	—	रे	—	प	—	ग॒	—	—	रे	ग॒	सा	—
सा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	स	हो	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	—	—	सा	—	—	—							
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			2		3								

नोट : सम्पूर्ण गीत उपरोक्त स्वरों में ही गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती

यह गीत विशेषतया चैत्र मास में ही गाया जाता है। चैती को स्त्री-पुरुष सामूहिक रूप से या अकेले भी गाते हैं।

'चैती' कुछ-कुछ ठुमरी की तरह ही गायी जाती है। इसे चाचर ताल में गाते हैं और बाद में कहरवा ताल में दौड़ होती है, फिर चाचर में आ जाते हैं। यही क्रम चलता रहता है।

ढोलक, सारंगी, मंजीरे आदि वाद्यों के साथ चैती गायी जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती

हथवा लगत कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा।।

बेला मैं तोड़ल्यूं, चमेली मैं तोड़ल्यूं,
तोड़त तोड़त कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा।।

बेला मैं गूंधल्यूं, चमेली मैं गूंधल्यूं,
गूंधत गूंधत कुम्हलाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा।।

हरबा पैहर कै गैल्यूं बजरिया,
सैयां का देखि सरमाय गैलो रामा,
जूही कै फुलवा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैती (चाचर)

स्थाई

ग	ग	—	ग	—	ग	म	ग	रे	—	ग	—	म	—
ह	थ	ऽ	वा	ऽ	ल	ऽ	ग	त	ऽ	कु	ऽ	म्ह	ऽ
×			2				0			3			
ग	—	ग	सा	—	ऩी	सा	ध़	नी	—	रे	—	—	—
ला	ऽ	य	गै	ऽ	लो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	सा	—	ग	—	प	(प)	म	ग	—	सा	—	नी	—
जू	ऽ	ऽ	ही	ऽ	कै	ऽ	फु	ल	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प़	ध़	—	सा	—	सा	—	रेग	सारे	—	ग	—	म	—
ह	थ	—	वा	ऽ	ल	ऽ	गऽ	तऽ	ऽ	कु	ऽ	म्ह	ऽ
×			2				0			3			
ग	—	ग	सा	सा	—	—	—	—	—	—	—	—	—
ला	ऽ	य	गै	लो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (बिना ताल वाद्य के)

रे – म – म प प प – – – म म – प – प –

बे ऽ ला ऽ मैं तो ड़ ल्यूं ऽ ऽ ऽ च मे ऽ ली ऽ मैं ऽ

मध पध (मं) रे

तोऽ ड़ऽ ल्यूं ऽ

कहरवा

ग	ग	ग	म	ग	रे	ग	म	ग	–	सा	नीसा	ध़	ऩी	रे	–
तो	ड़	त	तो	ड़	त	कु	म्ह	ला	य	गै	लोऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×				×				×				×			
ऩी	सा	ग	प	म	ग	सा	ऩी	प़	ध	सा	सा	ग	रे	ग	म
जू	ऽ	ही	कै	फु	ल	वा	ऽ	ह	थ	वा	ल	ग	त	कु	म्ह
×				×				×				×			

चाचर

ग	–	–	सा	–	ऩी	सा	ध़	नी	–	रे	–	–	–
ला	ऽ	य	गै	ऽ	लो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त स्वरों और प्रकार से गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार

'हिंडोला' और 'कजरी' की भांति 'मल्हार' भी वर्षा काल का प्रमुख लोकगीत है। इस लोकगीत में शृंगार के साथ ही प्रकृति के विभिन्न अंगों का भी बड़ा ही रोचक-काव्यात्मक वर्णन होता है। जिस समय वर्षा की फुहार पड़ रही होती है, उस समय मल्हार की धुन विशेष रूप से गायी जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार

अरी भैना उठी है घटा घनघोर,
बिजुरी तो चमके जोर से।।

अम्बर लरजे, बादल गरजे री,
अरी भैना मोर मचावे शोर।।
बिजुरी तो चमके.........

कौन की भीजै चूनरी अरी भैना,
कौन की भीजै सुई पाग।।
बिजुरी तो चमके..........

चम्पाकली की भीजै चूनरी अरी भैना,
नन्है बीरन की सुई पाग।।
बिजुरी तो चमके.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मल्हार (कहरवा)

स्थाई

—	मम	म	म	—	गग	ग	रेसा	सा	रे	सारे	ग	—	रेग	सा	सासा
ऽ	अरी	भै	ना	ऽ	उठी	है	घऽ	टा	ऽ	घऽ	न	ऽ	घोऽ	र	बिजु
×				×				×				×			
सा	रे	सारे	ग	—	रेसा	रे	सा	सा	मम	म	म	—	गग	ग	रेसा
री	तो	चम	के	ऽ	जोऽ	ऽ	र	से	अरी	भै	ना	ऽ	उठी	है	घऽ
×				×				×				×			
सा	रे	सारे	ग	—	रेग	सा	सासा	सा	रे	सारे	ग	—	रेसा	रे	सा
टा	ऽ	घऽ	न	ऽ	घोऽ	र	बिजु	री	तो	चम	के	ऽ	जोऽ	ऽ	र
×				×				×				×			
सा	—	—	—	—	—	—	—								
से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	ध़	सा	सा	सासा	रे-	सारे	ग—	—	रेसा	रे	सा	सा	मम	म	म
ऽ	अम्	ब	र	लर	जे	बाऽ	दल	ऽ	गर	ऽ	जे	री	अरी	भै	ना
×				×				×				×			
—	ग	ग	रेसा	सा	रे	सारे	ग	—	रेग	सा	सासा	सा	रे	सारे	ग
ऽ	मो	र	मऽ	चा	ऽ	वैऽ	ऽ	ऽ	शोऽ	र	बिजु	री	तो	चम	के
×				×				×				×			
—	रेसा	रे	सा	सा											
ऽ	जोऽ	ऽ	र	से											
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राछौर

यह बुंदेलखण्ड का बहुत ही लोकप्रिय गीत है। अवकाश के क्षणों में, विशेषकर पावस की सावनी फुहारों में मस्ती से भरे हुए लोग इसे सामूहिक रूप से गाते हैं। इसमें भी झांझ, झीका, चिकारा आदि वाद्यों द्वारा संगत की जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राछौर

कहां से उमही रे कारी बदरिया,
अरे कहां बरस गये मेंह,
बरसौ बीरन के देस में।।

ससुरे से उमही है कारी बदरिया,
अरे मायकै बरस रहे मेंह।। बरस गये मेंह

कौना से भरि गये हैं नदिया और नारे,
कौना से भरे बेला ताल।। बरस गये मेंह

ससुरे के भरि गये हैं नदिया और नारे,
बाबुल के भरे बेला ताल।। बरस गये मेंह

कौना ने छोड़ी है मैली रे कांचरी,
अरे कौना ने छोड़ी है कगार।। बरस गये मेंह

सांपन छोड़ी है मैली रे कांचरी,
अरे नदियन छोड़े हैं कगार ।। बरस गये मेंह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राछौर (रूपक)

प़	प़	—	ऩी	—	ऩी	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
क	ऽ	ऽ	हां	ऽ	से	ऽ	उ	म	ऽ	ही	ऽ	है	ऽ
×			2		3		×			2		3	
ऩीसा	रेग॒	—	ग॒	—	ग॒	—	ग॒	ग	—	ग॒	—	ग॒	ग॒
काऽ	ऽऽ	ऽ	री	ऽ	ब	ऽ	द	रि	ऽ	या	ऽ	अ	रे
×			2		3		×			2		3	
ग॒	—	—	ग॒	—	ग॒	—	सा	सा	—	ग	रे	सा	—
क	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ब	ऽ	र	स	ऽ	ग	ऽ	ये	ऽ
×			2		3		×			2		3	
ऩी	—	—	—	—	ऩी	—	प़	प़	—	ऩी	—	ऩी	—
में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ह	ऽ	ब	र	ऽ	सौ	ऽ	बी	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	सा	—	रे	—	प	—	ग	—	—	रे	ग॒	सा	—
र	न	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	स	में	ऽ
×			2		3		×			2		3	
सा	—	—	—	—	—	—							
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×			2		3								

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। यह गीत मध्यम को स्वर मानकर गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन

'सावन' एक ऋतु गीत है। वर्षा काल में इसे कभी भी गा सकते हैं। शास्त्रीय संगीत में 'पीलू सावन' एक राग भी है जो इससे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। यह दो तरह से गाया जाता है। कुछ लोग पूरे गीत को चाचर ताल में गाते हैं और कुछ लोग अन्तरे के दूसरे भाग को कहरवे में गाकर, फिर चाचर में आ जाते हैं। इसकी धुन चाचर और कहरवा, दोनों तालों में एक सी रहती है, केवल लय का अन्तर होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन

अबकी सावन सैंया घर से न निकसो,
ना जाओ मोरे महराज रे।।

घन की चोट अस बदरा जै लागै,
बिजुरी लगै जैसे गाज रे।। ना जाओ.....

नागिन फूल सेजरिया जै लागै,
तुम बिन मोरे महराज रे।। ना जाओ.....

नैना हुइरहे दून्हौं सावन भादों,
घन सम बिन गुहे केस रे।। ना जाओ.....

देखबै न बोलबै बिरह जल डूबी,
घर ही मा होयी बरसात रे।। ना जाओ.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन (चाचर)

स्थाई

ग	ग	—	म	—	प	—	ग	म	—	ग़	रे	ग़	सा
अ	ब	ऽ	की	ऽ	सा	ऽ	व	न	ऽ	सैं	ऽ	या	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	सारे	गम	म	—	मग	रेग	—	सा	—	—	—
घ	र	ऽ	सेऽ	ऽऽ	न	ऽ	निऽ	कऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ऩीसा	ग़	—	सा	—	ऩी	—	सा	सा	—	रे	ग़	सा	रे
नाऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ओ	ऽ	मो	रे	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	रेम	पध	नी़	धप	(ग)	—	—	ग	—	—	सा
रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	रे	—	म	—	म	—	प	प	—	प	—	प	—
घ	न	ऽ	की	ऽ	चो	ऽ	ऽ	ट	ऽ	अ	ऽ	स	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	—	ध	—	म	—	प	ध	—	पध	नीसां	—	—
ब	द	ऽ	रा	ऽ	जै	ऽ	ला	ऽ	ऽ	गैऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
नी	नी	—	नी	—	नी	—	ध	—	—	म	—	म	—
बि	जु	ऽ	री	ऽ	ल	ऽ	गै	ऽ	ऽ	जै	ऽ	से	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	रेंम	पध	नी	धप	(म)	—	—	ग	—	—	सा
गा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ग	—	—	म	—	प	—	ग	म	—	ग	रे	ग	सा
ना	ऽ	ऽ	गि	ऽ	न	ऽ	फू	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	से
×			2				0			3			
सा	रे	—	सारे	गम	म	—	मग	रेंग	—	सा	—	—	—
ज	रि	ऽ	याऽ	ऽऽ	जै	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऩीसा	ग॒	—	सा	—	ऩी	सा	सा	सा	—	रे	ग॒	सा	रे
तुऽ	म	ऽ	बि	ऽ	न	ऽ	मो	रे	ऽ	म	ऽ	ह	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	रेम	पध	नी॒	धप	(म)	—	—	ग	—	—	सा
रा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वर में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी

यह प्रमुखतः एक विरह गीत है। यह वर्षा काल में, विशेषकर सावन के महीने में गाया जाता है जब ग्राम बालायें सज-धजकर बागों में झूला झूलने को एकत्र होती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी

एक सुधि आइ गैले नैहर की रे,
मोरा बिरना गैइल परदेस हो।।

सुधि आइ गैलै सांवरे सिपैहरा की रे,
एक सुधि आइ गैलै फुलवा की रे।।

सुधि आइ गैलै बाबा के बगैचा की रे,
एक सुधि आइ गैलै पनघट की रे।।

सुधि आइ गैलै सखियां सहिलियां की रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोहनी (कहरवा)

स्थाई

		म	—	प़	नी़	—	नी़	सा	—	—	—	रे	ग	सा	रे
		ए	ऽ	क	सु	ऽ	धि	आ	ऽ	इ़	ऽ	गै	ऽ	लै	ऽ
				×				×				×			
—	ग	म	ग	रे	—	सा	सा	—	—	—	ध़	नी़	प	—	—
ऽ	नै	ऽ	ऽ	हर	ऽ	की	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
—	—	म	—	प़	नी़	—	नी़	सा	—	—	—	रे	ग	सा	रे
ऽ	ऽ	ए	ऽ	क	सु	ऽ	धि	आ	ऽ	इ	ऽ	गै	ऽ	लै	ऽ
×				×				×				×			
—	ग	म	ग	रे	—	सा	सा	—	—	—	—	प	—	प	—
ऽ	नै	ऽ	ऽ	हर	ऽ	की	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—	—	प	ध	—	प	—	म	ग	—	सा	रे	—	ग	—	ग
ऽ	ऽ	बि	र	ऽ	ना	ऽ	ग	इ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	प	ऽ	र
×				×				×				×			
म	—	ग	—	—	सा	—	नी़	सा	—	—	—	ध़	नी़	प़	—
दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	हो	रे	ऽ	ऽ	ऽ	सु	ऽ	धि	ऽ
×				×				×				×			
—	—	म़	—	प़	नी़	—	नी़	सा	—	सा	—	रे	ग	सा	रे
ऽ	ऽ	आ	ऽ	इ	गै	ऽ	लै	सां	ऽ	व	ऽ	रे	ऽ	सि	ऽ
×				×				×				×			
—	—	ग	म	ग	रे	—	सा	सा	—	—	—				
ऽ	ऽ	पै	ऽ	ऽ	या	ऽ	की	रे	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

नोट : इस गीत में अन्तरा नहीं होता है, इसलिए अन्य कड़ियां भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

'हिंडोला' पछांह (मेरठ और बुलंदशहर की ओर) के ज़िलों में गाया जाता है। कहीं-कहीं इसे मल्हार भी कहते हैं। इसको अधिकतर औरतें झूला झूलते समय गाती हैं और किसी वाद्य-यंत्र से इसकी संगत नहीं होती है। इसमें 'ऐजी कोई' या 'अम्बे कोई' टेक का प्रयोग होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

झूला धीरे से झुलावो, सुकुमारी सिया हैं।।

झूला कंचन संजोय,
लागी रेशम की डोर,
झोका धीरे से लगावो,
सुकुमारी सिया हैं।।

छायी घटा घनघोर,
बोले पपीहा औ' मोर,
झूलें अवध किशोर,
सुकुमारी सिया हैं॥

झूलें सरयू के तीर,
पहिरें रेशम के चीर,
छवि हियरे बसावो,
सुकुमारी सिया हैं।।

झूलैं अवध बिहारी,
और संग पिया प्यारी,
तन-मन बलिहारी,
सुकुमारी सिया हैं।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला) (कहरवा)

स्थाई

		ऩी	सा	–	रे	गरे	ऽग	सा	रे	ग	म	गरे	ग	ऽसा	ऽऩी
		झू	ला	ऽ	धी	रेसे	ऽझु	ला	वो	सु	कु	माऽ	री	ऽसि	ऽया
				×				×				×			
सा	–	ग	म	प	प	–प	ऽध	(प)	–	–ग	–म	रे	ग	म	(प)
हैं	ऽ	सु	कु	मा	री	ऽसि	ऽया	हैं	ऽ	ऽसु	ऽकु	मा	री	सि	या
×				×				×				×			
म	ग	ऩी	सा												
हैं	ऽ	झू	ला												
×															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

		ऩी	सा	–	ग	गग	–म	ग	ग–	ग	मग	म	रेग	-म	-प
		झू	ला	ऽ	कं	चन	ऽसं	जो	ऽय	ला	गीऽ	ऽ	रेऽ	ऽशम	ऽकी
×				×				×				×			
म	गरे	ऩी	सा	–	रे	गुरे	ऽगु	सा	रे	ग	म	गरे	ग	-म	-नी
डो	ऽर	झों	का	ऽ	धी	रेसे	ऽल	गा	वो	सु	कु	माऽ	री	ऽसि	ऽया
×				×				×				×			
सा	–	ऩी	सा												
हैं	ऽ	झू	ला												
×															

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (झूला)

पड़े रे हिंडोले नौलख बाग में जी।
ऐजी कोई झूलें रानी राज कुंवर।। पड़ेरे हिंडोले......

इत मेघवा दल भैना मेरी लै चढ़ौजी।
ऐजी कोई उत दल पृथवी राजा।। पड़ेरे हिंडोले......

उत घन बरसैं बड़ी-बड़ी बूंद सैं जी।
ऐजी कोई उत गोलिन बौछार।। पड़ेरे हिंडोले........

इत घन गरजै भैना मेरी धूम सैं जी।
ऐजी कोई उत तोपन धधकार।। पड़ेरे हिंडोले.......

इत बागन मैं गावै कामिनी जी।
ऐजी कोई उत सूरन हुंकार।। पड़ेरे हिंडोले.......

इत घन चमके भैना मेरी दामिनी जी।
ऐजी कोई उत चमकै तलवार।। पड़ेरे हिंडोले......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोला (कहरवा)

स्थाई

सा	रे	सा	ऩी	ऩी	सा	सा	—	ऩी	सा	रे	ग॒	—	सा	—	रे
प	ड़े	रे	हिं	डो	ऽ	ले	ऽ	नौ	ऽ	ल	ख	ऽ	बा	ऽ	ग
×				×				×				×			
ऩी	सा	सा	—	रे	म	म	म	मग	रेग	सा	सा	रे	प	म	म
में	ऽ	जी	ऽ	ऐ	जी	को	ई	झूऽ	ऽऽ	लैं	ऽ	अम्	बे	को	ई
×				×				×				×			
मग	रेग	सा	—	ऩीसा	रेग॒	रे	—	—	ग॒	—	रेसा	सा	रे	सा	ऩी
झूऽ	ऽऽ	लैं	ऽ	राऽ	ऽऽ	नी	ऽ	ऽ	रा	ऽ	जऽ	कुं	व	र	हिं
×				×				×				×			
ऩी	सा	सा	—	ऩी	सा	रे	ग॒	—	सा	—	रे	ऩी	सा	सा	—
डो	ऽ	ले	ऽ	नौ	ऽ	ल	ख	ऽ	बा	ऽ	ग	में	ऽ	जी	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	रे	सा	ऩी	ऩी	सा	सा	–	ऩी	सा	रे	ग॒	–	सा	–	रे
इ	त	मे	घ	वा	ऽ	द	ल	भै	ना	मे	री	ऽ	लै	ऽ	च
×				×				×				×			
ऩी	सा	सा	–	रे	म	म	म	मग	रेग	सा	सा	रे	प	म	म
ढ़ौं	ऽ	जी	ऽ	ऐ	जी	को	ई	ऊऽ	तऽ	द	ल	अम्	बे	को	ई
×				×				×				×			
मग	रेग	सा	सा	ऩीसा	रेग॒	रे	–	–	ग॒	–	रेसा	सा	रे	सा	नी
ऊऽ	तऽ	द	ल	पृऽ	थऽ	वी	ऽ	ऽ	रा	ऽ	जऽ	प	ड़े	रे	हिं
×				×				×				×			
ऩी	सा	सा	–	ऩी	सा	रे	ग॒	–	सा	–	रे	ऩी	–	सा	–
डो	ऽ	ले	ऽ	नौ	ऽ	ल	ख	ऽ	बा	ऽ	ग	में	ऽ	जी	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत के शेष अन्तरे उपरोक्त स्वरों में गाये जायेंगे। यह अन्तरे बिलकुल स्थाई की तरह ही हैं। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलारा

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इसकी विशेषता यह है कि यह समूह गान है, अकेला कभी नहीं गाया जाता। हमेशा 'चौताल' अथवा 'डेढ़ताल' के तुरन्त बाद गाया जाता है। 'उलारा' का अर्थ है उछालना। इसीलिए 'चौताल' अथवा 'डेढ़ताल' गाने के बाद बहुत उल्लास एवं आवेग के साथ यह गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलारा

गिरधारी लाल, गिरधारी लाल,
नखपै गिरधर गिरा धरे।।

कंचनपुर है एक ठाऊं,
हो कंचनपुर है एक ठाऊं।।

बरई की दुकान, बरई की दुकान,
पान लगावै तमोलिन।।

हो कूंचै भगवान, कूंचै भगवान,
नखपै गिरवर गिरा धरे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उलारा (कहरवा)

स्थाई

														म	म
														गि	र
म	—	म	म	—	म	म	म	ग	—	सा	—	ग	—	—	ग
धा	ऽ	री	ला	ऽ	ल	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ल
×				×				×				×			
रे	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग	सा	सा	—	सा	सा	—	—	—
न	ख	पै	ऽ	गि	र	व	र	गि	रा	ऽ	ध	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त स्थाई को कई बार दोहराया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

			म –
			कं ऽ
म म म म	म – म ग	रे ग ग रे	ग प प ध
च न पु र	है ऽ ए क	ठा ऽ ऊं ऽ	हो ऽ कं ऽ
×	×	×	×
म म म म	म – म ग	रे ग ग रे	– – म म
च न पु र	है ऽ ए क	ठा ऽ ऊं ऽ	ऽ ऽ ब र
×	×	×	×
म म – म	म – म म	ग ग सा सा	ग – – ग
ई की ऽ दु	का न ब र	ई की ऽ दु	का ऽ ऽ न
×	×	×	×
रे – रे रे	रे रे रे ग	सा – सा सा	– – म म
पा ऽ न ल	गा वै ऽ त	मो ऽ लि न	ऽ ऽ कूं ऽ
×	×	×	×
म – म म	म ऽम म म	ग – सा सा	ग – – ग
चै ऽ भ ग	वा ऽन कूं ऽ	चै ऽ भ ग	वा ऽ ऽ न
×	×	×	×
रे रे रे –	रे रे रे ग	सा सा – सा	सा –
न ख पै ऽ	गि र व र	गि रा ऽ ध	रे ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

'कहरा' गीत कहार लोग गाते हैं। इसके गीतों में श्रृंगार रस का भाव प्रमुख रहता है। कोई-कोई 'कहरा' 'निर्गुन' की तरह का भी होता है। इसमें झांझ, झीका, हुड़ुक, चिकारा इत्यादि वाद्य बजाये जाते हैं।

मशाल जलाकर कहरा गीत के साथ नृत्य भी होता है, जिसे 'करिंगा' नृत्य कहा जाता है। इस नृत्य में अधिकतर समाज पर व्यंग्य होते हैं या अश्लील भावों का प्रदर्शन होता है। इसको पहले दादरा और फिर कहरवा ताल में गाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (निर्गुन)

पिया ऊंची रे अटरिया तोरी देखन चली।।
ऊंची अटरिया, जरद किनरिया,
लागी नाम की डुरिया।।
चांद सुरुज सम दियना बरत है,
ता बिच भूली रे डगरिया।। पिया ऊंची रे.....

आठ मरातिब, दस दरवाजा,
नौ मैं लाग किवरिया।।
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी,
उपरा झांप झुपड़िया।। पिया ऊंची रे......

कहत कबीर सुनौ भई साधो,
हरि चरनन बलिहरिया।।
साधु संत मिल सौदा करिहैं,
झींखै मूरख अनरिया।। पिया ऊंची रे......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (कहरवा)

स्थाई

														सा	रे
														पि	या
रेम	मप	ग़	रे	सा	ग़	सा	ऩी	सा	सा	ग़	रे	ग़	—	सा	—
ऊंऽ	चीऽ	रे	अ	टरि	या	तो	री	दे	ख	न	च	ली	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
प	प	प	ध	पध	सांनी़	नी़ध	धप	ग	ग	म	प	गम	गम	रेग़	सारे
दे	ख	न	च	लीऽ	ऽऽ	पिऽ	याऽ	दे	ख	न	च	लीऽ	ऽऽ	पिऽ	याऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (दुगुन में)

नी़	–	नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	सा	सा	सा	सा	सा	सा	सा	–
ऊं	ऽ	ची	अ	ट	रि	या	ऽ	ज	र	द	कि	न	रि	या	ऽ
×				×				×				×			
रे	म	म	म	ग॒	ग॒	रे	ग॒	सा	सा	सा	–	–	–	–	–
ला	ऽ	गी	ना	ऽ	म	की	ऽ	डु	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

रे	–	रे	रे	म	म	म	म	प	प	प	प	प	प	प	ऽप
चां	ऽ	द	सु	रु	ज	स	म	दि	य	ना	ब	र	त	है	ऽऽ
×				×				×				×			

• यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

–	प	प	प	प	नी॒ध	पम	मग॒	रेग॒	ग॒सा	साग॒	रे	रेम	मप	ग॒	रे
ऽ	ता	बि	च	भू	लीऽ	रेऽ	डऽ	गरि	याऽ	पिऽ	या	ऊंऽ	चीऽ	रे	अ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त स्वरों (धुन) में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

बालू रेतिया डगरिया चलब कैसे।

वाही पनघटवा पै सखिया सहेलरी,
रसरिया बाटै छोट, भरब कैसे।।
बालू रेतिया........

वाही पनघटवा पै, कान्हा ठाड़े,
बासुरिया तान मारै, जियब कैसे।।
बालू रेतिया........

वाही पनघटवा पै, सास ननदिया,
पायल छनकारै, जाइब कैसे।।
बालू रेतिया...........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (दादरा)

स्थाई

									सां	—	नी
									बा	ऽ	लू
रे	—	रे	सा	—	सानी	ध	—	ध	प़	—	प
रे	ऽ	ति	या	ऽ	ड़ऽ	ग	ऽ	रि	या	ऽ	च
×			0			×			0		
ध़	—	ध़	सा	—	ऩी	सा	—	—	ग	—	ग
ल	ऽ	ब	कै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	हां	ऽ	च
×			0			×			0		
ग	ग	ग	ग	—	—	रेग	म	—	ग	रे	ग
ल	ब	ऽ	कै	ऽ	ऽ	सेऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	च
×			0			×			0		
सा	ऩी	—	सा ग	रे	ग	सा	—	—	सा	—	नी
ल	ब	ऽ	कैऽ	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	बा	ऽ	लू
×			0			×			0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

अन्तरे की पहली कड़ी बिना ताल के गायी जायेगी और दूसरी कड़ी कहरवा ताल में। यही क्रम बराबर चलता रहेगा।

ग – ग ग ग ग म रे – रे – रे रे रे रे रे ग सा
वा ऽ ही प न घ ट वा ऽ पै ऽ स खी रे स हे ल री

कहरवा

			सा ऩी
			रे ऽ
रेरे रे सा सानी	धृ – पृ पृ	धृ धृ सा ऩी	सा – सा ऩी
सरि या बा टेऽ	छो ऽ ट भ	र ब कै ऽ	से ऽ बा लू
×	×	×	×
रे रे सा साऩी	धृ धृ पृ पृ	ध ध सा ऩी	सा – सा नी
रे ति या डऽ	ग रि या च	ल ब कै ऽ	से ऽ बा लू
×	×	×	×

नोट : इसके पश्चात पुनः सम से दादरा शुरू हो जाएगा। गीत की शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

मोरे मालिक श्री भगवान, सोच मन काहे का करी।।

जहां रहै नितरात बसेरा, बधिक लगावत फांस रे।
कूद काद कै हरिनी निकस गयी,
हरिन कै परिगवा फांस रे।। मोरे मालिक..........

ओही पार ते हरिना बोलै, सुन हरिनी मोरी बात रे,
बिधना के घर खरच खुटानै,
बैंच खात मोरा मास रे।। मोरे मालिक.......

एही पार ते हरिनी पुकारे, सुन बधिका मोरी बात रे,
हमहू का बांध पिया संग मोरे,
खोजिन मोर अहि बात रे।। मोरे मालिक........

इतनै वचन जब सुनै बधिकवा, काट दिहिस गल फांस रे,
हरिनी बचन जब सुनै बधिकवा,
अपनी धना की सुधि आय रे।। मोरे मालिक.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (कहरवा)

स्थाई

														सा	रे
														मो	रे
ध़	सा	सां	सा	रे	प़	म	ग	रे	—	रें	सा	रे	प	म	ग
मा	लि	ऽक	सि	री	भ	ऽ	ग	वा	ऽ	न	सो	ऽ	च	म	न
×				×				×				×			
रे	ग॒	रे	सा	सा	—	सा	रे								
का	हे	का	क	री	ऽ	मो	रे								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	ग	–	ग	ग	–	ग	ग	सा	रे	रे	ग	सा	–	सा	रे
ज	हाँ	ऽ	र	है	ऽ	नि	त	रा	ऽ	त	ब	से	ऽ	रा	ऽ
×				×				×				×			
म	म	म	म	म	ग	ग	रे	रे	–	–	सा	सा	–	–	–
ब	धि	क	ल	गा	ऽ	व	त	फां	ऽ	ऽ	स	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
रे	–	रे	रे	म	म	म	–	म	प	प	प	प	प	प	धप
कू	ऽ	द	का	ऽ	द	कै	ऽ	ह	रि	नी	नि	क	स	ग	यीऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त कड़ियां दो-दो बार गायी जायेंगी।

–	सां	सां	सां	सां	सां	<u>नी</u>	धप	–	प	ध	प	म	ग	सा	रे
ऽ	हरि	ना	के	प	रि	ग	वाऽ	ऽ	फां	ऽ	स	रे	ऽ	मो	रे
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा

हो कजरवा काहे दिये हो,
नैना कजरारे।।

तोहरी धानी रे चुनरिया,
हथवा सोनै की मुंदरिया,
नयनवा रतनारे हो।। नैना कजरारे.......
हो कजरवा......

तोहरी रे लांबी लांबी केसिया,
दंतवा सोहै तोहरी मिसिया,
जियरवा काहे जारे हो। नैना कजरारे,
हो कजरवा.........

तोहरी बारी रे उमरिया,
तोहरी पतरी रे कमरिया,
पायल झनकोर हो।। नैना कजरारे,
हो कजरवा.........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरा (दादरा)

स्थाई

									सारे	गम	म
									होऽ	ऽऽ	क
									0		
म	म	मप	ग	—	म	ग	—	सा	गरे	मग	ग
ज	र	वाऽ	का	ऽ	हे	दि	ऽ	ये	होऽ	ऽऽ	ऽ
×			0			×			0		
ग	—	म	गरे	ग	सा	सा	—	सा	सारे	गम	म
नै	ऽ	ना	कऽ	ऽ	ज	रा	ऽ	रे	होऽ	ऽऽ	क
×			0			×			0		

अन्तरा

									म	म	मग
									तो	ह	रीऽ
									0		
गरे	ग	सा	गरे	ग	सा	सा	सा	सा	प	प	प
धाऽ	ऽ	नी	रेऽ	ऽ	चु	न	रि	या	ह	थ	वा
×			0			×			0		
प	—	प	ध	नी	ध	प	प	प	—	—	
सो	ऽ	नै	की	ऽ	मुं	द	रि	या	ऽ	ऽ	
×			0			×			0		

• उपरोक्त कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरवा

															म
															न
मम	म	म	म	ग	सा	ग	–	ग	मग	सा	सा	सा	सा	–	म
यन	वा	र	त	ना	रे	हो	ऽ	नै	नाऽ	क	ज	रा	रे	ऽ	न
×				×				×				×			
म	म	–	म	म	म	–	म	म	म	म	म	ग	सा	ग	–
यन	वा	ऽ	न	यन	वा	ऽ	न	यन	वा	र	त	ना	रे	हो	ऽ
×				×				×				×			
ग	मग	सा	सा	सा	सा	–	म	म	म	म	म	ग	सा	ग	–
नै	नाऽ	क	ज	रा	रे	ऽ	क	जर	वा	का	हे	दि	ये	हो	ऽ
×				×				×				×			
ग	मग	सा	सा	सा	–	सा									
नै	नाऽ	क	ज	रा	ऽ	रे									
×				×											

नोट : यहां से फिर दादरा शुरू हो जाता है। गीत की शेष पंक्तियां अन्तरे की ही तरह गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ

यह लोकगीत चैत मास में गाया जाता है, विशेषतया रामजन्म पर। घाटौ शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद के समान है। इसमें ध्रुपद का गाम्भीर्य है। इसका तीनों सप्तकों (मंद्र, मध्य एवं तार) में विस्तार होता है। इस लोक गीत को जब शत-शत स्त्री-पुरुष मिलकर गाते हैं, तब इसका रस माधुर्य और भी बढ़ जाता है; साथ ही बार-बार सुनने की ललक भी बढ़ती है।

'घाटौ' लोकगीत के अन्दर 'उटियां' यानी ऊंचे स्वरों में 'हो रामा' का जब उच्चारण होता है, तब यह बहुत अच्छा मालूम देता है। इस लोक धुन (गीत) के साथ सौ-सौ जोड़ी झांझ और दस-दस, बीस-बीस ढोलकें बजती हैं। यह पहले चाचर, बाद में कहरवा ताल में गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ

रामा चैइत अयोध्या।
रामजी जनमि लैं हो रामा।
घरे घरे बाजैला रे बधैया।। हो रामा

रामा हां, रामा सौने की चवकिया,
राम निहवावै हो रामा,
सखी सबै डालै ली हो निछावर।। हो रामा

रामा हां, रामा की सखी डालैली
अंगुठी मुदरिया हो रामा,
कोइ सखी डालैली रतन पदारथ।। हो रामा

रामा हां, रामा केकई जी डालैली
अंगुठी मुदरिया हो रामा,
कौसिला जी डालैली रतन पदारथ।। हो रामा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ (चाचर)

स्थाई

सा	–	सा	–	रे	ग	–	म	–	–	–	रे	–	–
रा	ऽ	मा	ऽ	चै	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
सा	–	सा	–	रे	म	–	म	–	–	–	रे	–	–
त	ऽ	अ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
म	–	म	–	प	–	–	म	–	–	–	म	प	–
रा	ऽ	मा	ऽ	चै	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
म	–	ग	–	रे	–	–	सा	–	–	–	रें	रें	–
त	ऽ	अ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	रा	म	ऽ
3				×			2				0		
रें	–	रें	–	रें	रें	–	सां	–	नी	–	ध	–	–
जी	ऽ	ज	ऽ	न	मि	ऽ	लैं	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ
3				×			2				0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	—	—	—	प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	रे	ऽ	घ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
म	—	—	—	ग॒	—	—	ग॒	—	—	—	ग॒	—	—
रे	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
रे	—	ग	—	सा	रे	—	सा	—	सां	—	नी॒	ध	—
रे	ऽ	ब	ऽ	धै	ऽ	ऽ	या	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
प	—	—	—	प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ऽ	रे	ऽ	घ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
म	—	—	—	ग॒	—	—	ग॒	—	—	—	ग॒	—	—
रे	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
रे	—	ग॒	—	सा	रे	—	सा	—	—	—	—	—	—
रे	ऽ	ब	ऽ	धै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
3				×			2				0		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

• इसका अन्तरा हमेशा सम से और रामा कह कर उठेगा।

प	—	—	प	—	—	—	—	—	—	—	—	—	रे
रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
म	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	म	—
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			
प	—	—	म	—	—	—	—	—	—	रे	—	सा	—
सो	ऽ	ऽ	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	की	ऽ	च	ऽ
×			2				0			3			
रे	म	—	म	—	—	—	रें	—	—	म	—	म	—
व	कि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऐ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	—	—	म	—	—	—	म	प	—	म	—	ग	—
सो	ऽ	ऽ	नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	की	ऽ	च	ऽ
×			2				0			3			
रे	रे	—	सा	—	—	—	रें	रे	—	रें	—	रें	—
व	कि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	रा	म	ऽ	नि	ऽ	ह	ऽ
×			2				0			3			
रें	—	—	सा	—	नी̲	—	ध	—	—	प	—	—	—
वा	ऽ	ऽ	वै	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	—	प	—	म	—	म	—	—	म	—	—	—
ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	स	ऽ	ऽ	बै	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ग	—	—	ग̲	—	—	—	ग̲	—	—	रे	—	ग̲	—
डा	ऽ	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	हो	ऽ	नि	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	—	सा सा	—	सां	—	नी̲	ध	—	प	—	—	—
छा	ऽ	ऽ	वर	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ध	–	प	–	म	–	म	–	–	म	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ	स	ऽ	ऽ	बै	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ग॒	–	–	ग॒	–	–	–	ग॒	–	–	रे	–	ग	–
डा	ऽ	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	हो	ऽ	नि	ऽ
×			2				0			3			
सा	रे	–	सा सा	–	–	–							
छा	ऽ	ऽ	वर	ऽ	ऽ	ऽ							
×			2										

नोट : गीत के शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे। बाद में पूरा गीत कहरवा में भी गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घाटौ (क्रमशः) कहरवा

स्थाई

प	–	प	–	–	–	प	रे	म	–	–	–	–	–	म	म
रा	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	मा
×				×				×				×			
प	–	म	–	–	–	रे	सा	रे	म	म	–	रे	–	म	म
चै	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	यो	ऽ	ध्या	ऽ	ऐ	ऽ	रा	मा
×				×				×				×			
प	–	म	–	म	प	म	ग	रे	–	सा	–	रें	रें	रें	रें
चै	ऽ	इ	ऽ	ऽ	ऽ	त	अ	यो	ऽ	ध्या	ऽ	रा	म	जी	ज
×				×				×				×			
रें	रें	रें	सा	नी	ध	प	–	प	ध	प	म	म	–	म	–
न	मि	लैं	हो	रा	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	घ	रे	घ	ऽ	रे	ऽ
×				×				×				×			
ग	–	ग	–	ग	–	रे	ग	सा	रे	सा	सां	नी	ध	प	–
बा	ऽ	जै	ऽ	ला	ऽ	रे	ब	धै	ऽ	या	हो	रा	ऽ	मा	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत के शेष अन्तरे भी कहरवा ताल में इसी प्रकार गाये जायेंगे। कहरवे में भी 'रामा' कह कर ही अन्तरा बदलेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल

'चौताल' गीत भी फागुन में ही गाया जाता है। इस गीत का जैसा नाम है वैसा ही इसमें गुण भी है। इसे चार अलग-अलग लयों में गाया जाता है। पहले चाचर में और फिर कहरवे की तीन लय बरती जाती हैं।

चौताल के अधिक प्रकार नहीं मिलते हैं। केवल एक धुन और है, वह भी अधिक अलग नहीं है। लगभग पहली धुन से ही मिलती-जुलती है।

चौताल को सहगान के रूप में गाया जाता है। इसमें ढोल, मंजीरा, झांझ, चिकारा आदि वाद्य बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल

दृग रेख कजर धोइ डारौ बिना मदुराई।

श्याम सुन्दर कुबरी के रस बस,
हमरी सुरत बिसरायी।।
गुन गुन बिरह अगिन डर उपजत,
मनुआ मोरा बौरायी।। बिना मदुराई.......

छिन आंगन, छिन जात अटा पै,
श्याम श्याम रट लायी।।
ऐसे निठुर भये मनमोहन,
निसदिन हमै रहै हो सतायी।। बिना मदुराई........

सांझ सकारे जाय बंसी बट,
नयी-नयी तान सुनायी,
धुन-सुन बिसर जात, गृह कारज,
जियरा मोरा अकुलायी।। बिना मदुराई......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताल (चाचर)

स्थाई

										सा	—	सा	—
										दृ	ऽ	ग	ऽ
										3			
रे	ग	—	म	—	प	—	म	ग	—	रे	—	सा	—
रे	ऽ	ऽ	ख	ऽ	क	ऽ	ज	र	ऽ	धो	ऽ	य	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	—	—	सा	—	रे	—	रे	—	—	सा	—	सा	—
डा	ऽ	ऽ	रौ	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ	म	ऽ	दु	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	—	—	—	—	—	—	सा	—	—	सा	—	सा	—
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	दृ	ऽ	ग	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (कहरवा)

म	–	म	म	म	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	ऩी	सा	रे	रे
श्या	ऽ	म	सुं	द	र	कु	ब	री	ऽ	के	ऽ	र	स	ब	स
×				×				×				×			
रे	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे	नी	–	–	–	सा	–	–	–
ह	म	री	सु	र	त	बि	स	रा	ऽ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त कड़ियाँ दो बार गायी जाएँगी।

–	रेरे	रे	ग	म	मप	प	प	प	पध	प	म	मग	रेग	रे	रे
ऽ	गुन	गु	न	बि	रऽ	ह	अ	गि	नऽ	ड	र	उऽ	पऽ	ज	त
×				×				×				×			

• यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

कहरवा

–	रेरे	रे	ग	म	मप	प	प	प	पध	प	म	मग	रेग	रे	रे
ऽ	गुन	गु	न	बि	रऽ	ह	अ	गि	नऽ	ड	र	उऽ	पऽ	ज	त
×				×				×				×			

• यह कड़ी भी दो बार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाचर

सा	–	सा	–	रे	ग	–	म	–	प	ध	म	ग	–
म	ऽ	नु	ऽ	वा	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
रे	–	सा	–	ऩी	–	–	सा	–	रे	–	रे	–	–
बौ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
सा	–	सा	–	ऩी	–	–	सा	–	प	–	प	–	–
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
प	–	प	–	प	–	–	प	–	प	–	प	–	–
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	बि	ऽ	ना	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
प	–	म	–	प	नी॒	नी॒	ध	–	प	–	म	ग	–
म	ऽ	दु	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ
3				×			2				0		
ग॒	–	सा	–										
दृ	ऽ	ग	ऽ										
3													

नोट : गीत के शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इसमें बसंत ऋतु तथा होली की उमंग में राधाकृष्ण अथवा सीताराम के होली खेलने का वर्णन होता है। इसका एक ही प्रकार और मिलता है। इसमें अधिक विविधता नहीं है। इसको कहरवा ताल में गाते हैं। इसे सामूहिक रूप से या अकेले भी गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर

कंहवां ते आवैलै कुंवर कन्हैया।। ऐ झूमर हो।
कंहवां ते आवै मोरा छैया।। झूमर हो।

गोकुला ते आवैलै कुंवर कन्हैया।। ऐ झूमर हो
मथुरा ते आवै मोरा छैया।। झूमर हो

कंहवां जे बाजैलै आनन्द बधैया।। ऐ झूमर हो
कंहवां जे बाजै शैहनैया।। झूमर हो

गोकुला मै बाजैलै आनन्द बधैया।। ऐ झूमर हो
मथुरा मै बाजै पैजनिया।। झूमर हो

केहिके जे सोहैला अधर बंसुरिया।। ऐ झूमर हो
केहिके जे सोहैला पैजनियां।। झूमर हो

कान्हा के सोहेलै अधर बंसुरिया।। ऐ झूमर हो
राधा जी के सोहैलै पैजनिया।। झूमर हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (कहरवा)

स्थाई

—	सा	सा	सा	रे	म	प	ध	—	प	ध	प	म	ग	रे	सा
ऽ	कह	वां	ते	आ	ऽ	वै	लै	ऽ	कुंव	र	क	न्है	या	ऐ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा
म	र	हौ	ऽ	ऽ	कंह	वां	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	—
म	र	हो	ऽ	ऽ	कंह	वां	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	सां	सां	सांनी	धनी	रेंसां	नी	ध	—	प	ध	प	म	ग	रे	सा
ऽ	गो	कुला	तेऽ	आऽ	ऽऽ	वै	लै	ऽ	कुंव	र	क	न्है	या	ऐ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	सा
म	र	हो	ऽ	ऽ	मथु	रा	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	झू
×				×				×				×			
ग	रे	ग	—	—	रे	रे	सा	रेग	मग	रे	रे	सा	सा	—	—
म	र	हो	ऽ	ऽ	मथु	रा	ते	आऽ	वैऽ	मो	रा	छै	या	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में इसी प्रकार गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (स्वरचित)

मचौ फाग घनघोर आज होरी झूमरी।
अब चलत रंग चहु ओर।। आज होरी झूमरी
गलियन गलियन होत शोर।। आज होरी झूमरी
रंग डारत है बरजोर।। आज होरी झूमरी
इत सै सखि संग जनक दुलारी।। आज होरी झूमरी
और उत सै अवध किशोर।। आज होरी झूमरी
बाजत बीन मृदंग झांझ।। आज होरी झूमरी
जैसे घन गरजत घन-घोर।। आज होरी झूमरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमर (कहरवा)

प	प	—	प	—	प	ग	म	पध	सांनी̲	ध	प	ग	म	प	ध
म	चौ	ऽ	फा	ऽ	ग	घ	न	घोऽ	ऽऽ	र	आ	ऽ	ज	हो	री
×				×				×				×			
ग̲	—	सा	—	सा	—	सा	सा	प़	प़	नी़̲	नी़̲	सा	सा	रे	रे
झू	ऽ	म	ऽ	री	ऽ	अ	ब	च	ल	त	रं	ऽ	ग	च	हु
×				×				×				×			
ग̲	ग̲	रे	सा	ध̲	सा	रे	म	ग̲	—	सा	—	सा	—	—	—
ओ	ऽ	र	आ	ऽ	ज	हो	री	झू	ऽ	म	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

भारत की अधिकांश जनता धार्मिक निष्ठा वाली है। प्रायः सभी मांगलिक अवसरों पर देवी गीत गाये जाते हैं। इस गीत के गाते समय भक्तजन श्रद्धा और विश्वास के साथ मनौतियां मनाते हैं। देवी की शरण में सब अपने को सुरक्षित समझते हैं। देवी के प्रताप का वर्णन भी इन गीतों में रहता है।

पूजन के समय नवरात्रि के दिनों में 'देवीगीत' विशेषरूप से गाया जाता है। मेले में जाते समय, पूजन की भावना के साथ औरतें झुण्ड में चलती हुई इसे गाती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

उड़ि जाऊ रे सुगनवां गंगा पार, खबर लाउ देबिन का।।

सौनै की थारी मा जिउना परोसल्यो,
उड़ि जाउ रे सुगनवां गंगा पार, जिवांय आउ देबिन का।।

कंचन गड़ुआ गंगाजल पानी,
उड़ि जाउ रे सुगनवां गंगा पार, पियाइ आउ देबिन का।।

पांच पान पचबीरी बनायेउ,
उड़ि जाउ रे सुगनवां गंगा पार, खवाय आउ देबिन का।।

चुन चुन कलियां मैं सेजा बिछायेऊ,
उड़ि जाउ रे सुगनवां गंगा पार, सुवाय आउ देबिन का।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

														सा	रे
														उ	ड़ि
नी	नी	नी	ऩी	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	—	सा	रे	प	म	ग
जा	उ	रे	सु	गन	वां	गं	गा	पा	ऽ	ऽर	ख	ब	र	ला	उ
×				×				×				×			
रे	ग॒	रे	रे	सा	—	सा	रे								
दे	ऽ	बि	न	का	ऽ	उ	ड़ि								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म म – गरे	ग ग – रेसा	रे रे – सानी	सा सा सा रे
सो नै ऽ कीऽ	था री ऽ माऽ	जिउ ना ऽ फऽ	रोस ल्यो उ ड़ि
×	×	×	×
ऩी ऩी ऩी ऩी	ऩी सा रे ग॒	रे – – सा	रे प म ग
जा उ रे सु	गन वां गं गा	पा ऽ ऽर जि	वां य ला उ
×	×	×	×
रे ग॒ रे सा	सा – सा रे		
दे ऽ बि न	का ऽ उ ड़ि		
×	×		

नोट : मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए। गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

कामना पुरन करौ माई।। कि ऐरी देवा
काहे का तोरा भवन बना रे माई,
काहे के चार खम्भे लगेरी माई।। कि ऐरी देवा
सोनै का तोरा भवन बना रे माई,
रूपे के चार खम्भे लगेरी माई।। कि ऐरी देवा
काहे की तोरी लुइया डुलैया माई,
काहे के फूलन भरी री माई।। कि ऐरी देवा
बांसे की मोरी लुइया डुलैया माई,
चमेली के फूलन भरे री माई।। कि ऐरी देवा
जायी ठाड़े दुआर माई,
दरश देऊ घर का चली माई।। कि ऐरी देवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

															ध
															का
नी़	ग॒	रे	ग॒	सा	रे	रे	म	ग	—	रे	—	सा	—	—	
ऽ	म	ना	ऽ	पू	र	न	क	रो	ऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	
×				×				×				×			

अन्तरा

															प
															कि
प	ध	प	—	म	—	—	म	ग	म	रे	ग	सा	रे	रे	म
ऐ	री	दे	ऽ	वा	ऽ	ऽ	का	हे	का	तो	रा	भ	व	न	ब
×				×				×				×			
ग	ग	रे	—	सा	—	—	ध़	नी़	ग॒	रे	ग॒	सा	रे	—	म
ना	रे	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	का	हे	के	चा	ऽर	ख	म्भे	ऽ	ल
×				×				×				×			
ग	ग	रे	—	सा	—	—	—								
गे	री	मा	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

कैसे के दरशन पाऊं री, माई संकरी दुअरिया।

माई के दुआरे अंधा पुकारे
देऊ नैन घर जाऊं री।। माई संकरी.......

माई के दुआरे एक कोढ़ी पुकारे,
देऊ काया घर जाऊं री।। माई संकरी.......

माई के दुआरे एक भूखा पुकारे,
देऊ अन्न घर जाऊं री।। माई संकरी......

माई के दुआरे एक बांझ पुकारे,
देऊ पूत घर जाऊं री।। माई संकरी.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

देवीगीत (कहरवा)

स्थाई

									प						।
प	ऩी	–	ऩी	ऩी	सा	रे	ग	रेग	म	ग	–	रे	–	प	म
कै	से	ऽ	के	द	र	श	न	पाऽ	ऽ	ऊं	ऽ	री	ऽ	मा	ई
×				×				×				×			
पध	प	–	म	ग	म	रे	–								
संक	री	ऽ	दु	अ	रि	या	ऽ								
×				×											

अन्तरा

।	।	।	।	।											
म	म	म	म	म	प	प	ध	म	म	–	म	मग	रेग	रे	–
मा	ई	के	दु	आ	रे	ए	क	अ	न्धा	ऽ	पु	काऽ	ऽऽ	रे	ऽ
×				×				×				×			
															।
प़	ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	सा	रे	ग	रेग	म	ग	–	रे	–	प	म
दे	ऽ	ऊ	नै	ऽ	न	घ	र	जाऽ	ऽ	ऊं	ऽ	री	ऽ	मा	ई
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (भोजपुरी)

झूमत झूमत मैया अयली देव घरवा,
चलि भैली मलिया दुआर।। ऐ मैया

सूतल बाड़ूकि जागिले मालिन,
हमरो के पनिया पियाऊ।। ऐ मैया

एक हाथ लीन्है मैया ढाल तरवरिया,
एक हाथ लीन्है महाखान।। ऐ मैया

लड़त लड़त मैया मठ मै समैली,
असुरा कै करली संघार।। ऐ मैया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

म	म	म	म	म	म	म	ग	म	प	प	प	मप	मग	रे	—
झू	म	त	झू	म	त	मै	या	अय	ली	दे	व	घऽ	रऽ	वा	ऽ
×				×				×				×			
म	प	प	प	मप	मग	रे	रे	सा	—	—	सा	रे	—	प़	प
च	लि	भै	ली	मऽ	लिऽ	या	दु	आ	ऽ	ऽ	र	ऐ	ऽ	मै	या
×				×				×				×			
रे	म	म	म												
ऐ	ऽ	मै	या												
×															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	ध	ध	ध	मप	पध	म	म	—	ध	ध	ध	मप	पध	म	म
ऽ	सू	त	ल	बाऽ	ऽऽ	डू	कि	ऽ	जा	गि	लै	माऽ	ऽऽ	लि	न
×				×				×				×			
म	प	प	प	मप	मग	रे	रे	सा	—	—	सा	रे	—	प़	प़
ह	म	रो	के	पऽ	निऽ	या	पि	या	ऽ	ऽ	ऊ	ऐ	ऽ	मै	या
×				×				×				×			
रे	म	म	म												
ऐ	ऽ	मै	या												
×															

नोट : गीत के शेष अन्तरे उपरोक्त प्रकार से ही गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत

निबिया कै डार मैया डालैली हिंडोलवा से
झूली झूली ना,
मैया गावै ली गीतिया-से
झूली झूली ना।।

सूतल बाड़ूकि जागिलै मालिन,
बूंदा भरी ना मैका पनिया पियाऊ से
बूंदा भरी ना।।

कैसे के पनिया पियाऊ रे सीतल मैया मोरे बलका,
मैया अजर अमर करो मोरे बलका।।

दूध पूत होय मालिक मोरे बरदनवा से,
तोरे बलका, मालिन अजर अमर होवै तोरे बलका।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

–	–	सा	रे	रे	म	म	–	प	–	–	प	प	–	प	म
ऽ	ऽ	नि	बि	या	ऽ	कै	ऽ	डा	ऽ	ऽ	र	मै	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
प	ध	ध	–	ध	–	प	म	प	–	–	प	प	–	प	म
डा	ऽ	लै	ऽ	ली	ऽ	हिं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	वा	ऽ	अ	रे
×				×				×				×			
प	ध	ध	–	ध	–	प	म	प	–	–	म	ग	–	सा	रे
डा	ऽ	लै	ऽ	ली	ऽ	हिं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ल	वा	ऽ	ऽ	से
×				×				×				×			
ग	–	म	ग	रे	–	सा	सा	सा	–	रे	–	रे	–	रे	ग॒
झू	ऽ	ली	ऽ	झू	ऽ	ली	ऽ	ना	ऽ	मै	ऽ	या	ऽ	गा	ऽ
×				×				×				×			
रे	ग॒	रे	सा	ध़	–	सा	–	–	सा	रे	ग	ग	–	ग	–
ऽ	ऽ	वै	ऽ	ली	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ति	या	ऽ	से	ऽ	झू	ऽ
×				×				×				×			
म	ग	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–				
ली	ऽ	झू	ऽ	ली	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	सां	सां	सां	सां	—	नीध	प	प	ध	ध	म	म	प	प	प
ऽ	सू	त	ल	बा	ऽ	ड़ूऽ	कि	जा	ऽ	गि	ले	मा	ऽ	लि	न
×				×				×				×			
प	ध	ध	म	म	प	प	प	ग	मग	रे	सा	सा	—	रे	रे
जा	ऽ	गि	ले	मा	ऽ	लि	न	बूं	दाऽ	भ	री	ना	ऽ	मै	का
×				×				×				×			
रे	रेग	रे	ध़	सा	सा	ग	ग	ग	मग	रे	सा	सा	—	—	—
प	नि	या	पि	या	ऊ	मा	लिन	बूं	दाऽ	भ	री	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
—	—	सा	रे												
ऽ	ऽ	नि	बि												
×															

नोट : गीत के शेष अन्तरे उपरोक्त प्रकार से गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत

भुइयां मनाबन चली मलिनियां,
लैके हो डलिया भर फूल।

काहै की तोरी लुइया डुलैया,
काहे के मालिन तोरे फूल।। काहे के.......

बांसे की मोरी लुइया डुलैया,
बेला और चमेली के फूल।। बेला........

मांगना होय सो मांग ले मालिन,
जो तेरे मन ही ना समाय। जो तेरे........

दूध पूत मोहे सब कछु दीन्हौ,
मलिया का अम्बार के देऊ।। मलिया......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

म	म	—	म	म	—	म	म	प	ध	प	म	म	म	ग	—
भुई	यां	ऽ	म	ना	ऽ	ब	न	च	ली	ऽ	म	लि	नि	यां	ऽ
×				×				×				×			
ग	म	ग	म	रे	ग	सा	रे	ध	सा	—	रे	ग	—	—	मग
लै	ऽ	के	ऽ	हो	ऽ	ड	लि	या	भ	ऽ	र	फू	ऽ	ऽ	लऽ
×				×				×				×			
रे	—	सा	—	—	—	सा	रे	ध	सा	—	रे	ग	—	—	मग
लै	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	ड	लि	या	भ	ऽ	र	फू	ऽ	ऽ	लऽ
×				×				×				×			
रे	—	सा	—												
लै	ऽ	के	ऽ												
×															

नोट : पूरा गीत उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गाया जायेगा। इस गीत में अन्तरा नहीं है, गायक चाहे तो बना सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (बुंदेलखंडी) (अचरी)

मैया के गढ़ पै बेला,
अकेली मैं तो सेवा को ठाड़ी।।

सौनै की थारी मै भोजन परोसौ,
जैऔ मोरी आदि भवानी।। अकेली.....

कंचन झारी मैं जल भरी लायरी,
पियौ मोरी आदि भवानी।। अकेली.......

चुन-चुन कलियन सेज बिछायी,
पौढ़ो मोरी आदि भवानी।। अकेली.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (बुंदेलखंडी) (कहरवा)

स्थाई

ध़ सा – सा	सा रे ग म	ग सा – सा	सा रे ग म
मै या ऽ के	ग ढ़ पै ऽ	बे ला ऽ अ	के ली मैं तो
×	×	×	×
ग सा – सा	रे – सा –		
से वा ऽ को	ठा ऽ ड़ी ऽ		
×	×		

अन्तरा

ग सा – सा	रेग म – म	गम प – म	ग रे ग –
सौ नै ऽ की	थाऽ री ऽ मै	भोऽ जन ऽ प	रो ऽ सौ ऽ
×	×	×	×
ध सा – सा	सा रे ग म	ग सा – सा	सा रे ग म
जै औ मो री	आ ऽ दि भ	वा नी ऽ अ	के ली मैं तो
×	×	×	×
ग सा – सा	रे – सा –		
से वा ऽ को	ठा ऽ ड़ी ऽ		
×	×		

नोट : गीत के शेष अन्तरे उपरोक्त स्वरों में इसी प्रकार गाये जायेंगे। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत (अवधी)

मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मै झूलै पालना।। मोर महरानी

सोनै की थरिया मा जिवना परौस्यौं।
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मै जेवै जैवना।। मोर महरानी.......

कंचन गड़ुआ मै जल भर लायौ,
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मै पीवै पीवना।। मोर महरानी......

फूल नेवारी कै सेजां बिछायेउ,
मोर महरानी विंध्याचल की रानी,
कड़े मै सोवै सेजिया।। मोर महरानी.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

म	—	म	म	म	म	—	म	पध	प	—	म	ग	ग	—	ग
मो	र	म	ह	रा	नी	ऽ	विं	ध्याऽ	चल	ऽ	की	रा	नी	ऽ	क
×				×				×				×			
रे	ग	रे	सा	सा	—	रे	—	ग	मग	सा	सा	सा	सा	—	—
ड़े	मै	झू	लै	पा	ऽल	ना	ऽ	मो	रऽ	म	ह	रा	नी	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

सा	—	सा	सा	रे	म	म	म	ग	म	प	म	ग	रे	ग	—
सौ	ऽ	नै	की	थ	रि	या	मा	जि	उ	ना	प	रो	ऽ	स्यों	ऽ
×				×				×				×			

नोट : अन्तरे की दूसरी कड़ी स्थाई की तरह गायी जायेगी। शेष गीत उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गाया जायेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवीगीत

लिख लिख चिठिया जे असुरा पठावै,
ऐ भवानी रे देबिया।।
सीतला से करबै बियाहु,
भवानी रे देबिया।।

लिख लिख चिठिया सीतला पठावै,
ऐ भवानी रे देबिया।।
असुरा कै करबै संघार,
ऐ भवानी रे देबिया।।

हथिया उन्चास आवै घुड़वा पचास,
ऐ भवानी रे देबिया।।
पैदल खेह उड़ियाय,
ऐ भवानी रे देबिया।।

एक हाथ लीन्हैं मैया ढार तरवरिया,
ऐ भवानी रे देबिया।।
एक हाथ लीन्है महाखान,
ऐ भवानी रे देबिया।।

लड़त लड़त मैया मठ मै समैली,
ऐ भवानी रे देबिया।।
असुरा कै करली संघार,
ऐ भवानी रे देबिया।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवी गीत (कहरवा)

स्थाई

—	सारे	रेम	म	म	प	प	प	—	पध	ध	म	म	प	पसां	सांध
ऽ	लिख	लिऽ	ख	चि	ठि	या	जे	ऽ	असु	रा	प	ठा	वै	देऽ	बीऽ
×				×				×				×			
—	पध	ध	म	मप	पध	ग	सा	सारे	ग	सारे	ग,मग	सा	सा	सा	—
ऽ	असु	रा	प	ठाऽ	वैऽ	हो	भ	वाऽ	ऽ	नीऽ	रेऽऽ	दे	बि	या	ऽ
×				×				×				×			
—	ध़	सा	सा	रेग	सारे	म	म	मप	गम	रेग	सा	सारे	ग	सारे	ग,मग
ऽ	सीत	ला	से	कऽ	रिऽ	बै	बि	याऽ	ऽऽ	हुऽ	भ	वाऽ	ऽ	नीऽ	रे,ऽऽ
×				×				×				×			
सा	सा	सा	सा												
दे	बि	या	ऽ												
×															

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	सां	सां	सां	धनी	रेंसां	नीध	प	—	पध	ध	म	म	प	पसां	सांध
ऽ	लिख	लि	ख	चिऽ	ठिऽ	याऽ	जे	ऽ	सीत	ला	प	ठा	वै	देऽ	बीऽ
×				×				×				×			
—	पध	ध	म	मप	पध	ग	सा	सारे	ग	सारे	ग,गम	सा	सा	सा	—
ऽ	सीत	ला	प	ठाऽ	वैऽ	हो	भ	वाऽ	ऽ	नीऽ	रे,ऽऽ	दे	बि	या	ऽ
×				×				×				×			
—	ध़	सा	सा	रेग	सारे	म	म	मप	गम	रेग	सा	सारे	ग	सारे	ग,मग
ऽ	असु	रा	के	कऽ	रऽ	बै	सं	घाऽ	ऽऽ	रऽ	भ	वाऽ	ऽ	नीऽ	रे,ऽऽ
×				×				×				×			
सा	सा	सा	सा												
दे	बि	या	ऽ												
×															

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

यह गीत होली के अवसर पर गाया जाता है। इस गीत की लय अधिकतर द्रुत ही रहती है और बड़ी धूमधाम से यह गाया जाता है। इसको सौ-सौ, पचास-पचास स्त्री-पुरुष मिलकर गाते हैं। ढोल, मंजीरा, झांझ, झीका, चिकारा इत्यादि वाद्ययंत्र इस धुन के साथ बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (अवधी)

आयो रे रितुराज, आज ये होरी खेलन आयो।

बन बन बाग बाग गलियन में,
मधुर सुगंध उड़ायो,
हरियर पात, पिछौरी ऊपर, अमित रंग ढरकायो।। आज ये......

मधुर सुरन या कोयल बोलै, पन्छिन फगुआ गायो,
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर कीच मचायो।। आज ये.....

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, ढफ, मंजीरा ठनकायो,
गावत फाग औ' ढोल बजावत, अति आनन्द मनायौ।। आज ये....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

ऩी	–	ऩी	–	ऩी	–	ऩी	ऩी	सा	रे	रे	रे	रे	रे	सा	ऩी
आ	ऽ	यो	ऽ	रे	ऽ	रि	तु	रा	ऽ	ज	आ	ऽ	ज	ये	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	–	रे	म	म	रे
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	आ	ऽ	यो	ऽ
×				×				×				×			
रे	–	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	–	–	–	–	–
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	—	ऩी	ऩी	सा	रे	रे	रे	रे	रे	सा	ऩी
ब	न	ब	न	बा	ऽ	ग	बा	ऽ	ग	ग	लि	य	न	मै	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	—	रे	म	म	रे
म	धु	र	सु	गं	ऽ	ध	उ	ड़ा	यो	अ	रे	हां	ऽ	हां	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग॒	रे	सा	सा	रे	ऩी	सा	सा	—	—	—	—	—
म	धु	र	सु	गं	ऽ	ध	उ	ड़ा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	रे	रे	रे	म	म	म	म	प	प	—	प	—	प	प
ह	रि	य	र	पा	ऽ	त	पि	छौ	ऽ	री	ऽ	ऊ	ऽ	प	र
×				×				×				×			

• यह कड़ी दो बार गायी जायेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ध	ध	ध	–	ध	प	प	म	रे	रे	रे	रे	प	प	म
अ	मि	त	रं	ऽ	ग	ढ	र	का	ऽ	यो	आ	ऽ	ज	ये	ऽ
×				×				×				×			
म	रे	रे	–	रे	–	सा	रे	ऩी	सा	सा	–	–	–	–	–
हो	ऽ	री	ऽ	खे	ऽ	ल	न	आ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

जमुना तट श्याम खिलैं होरी।। जमुना तट........

जमुना तीर भीर सखियन की,
कोई सांवर कोई है गोरी।। जमुना तट.......

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, ढफ,
नाचत कृष्ण राधे गोरी।। जमुना तट........

चंदन, कुम-कुम, कीच मची है,
कृश पाग केसर बोरी।। जमुना तट........

ताकि ताकि पिचकारी चलावत,
अबीर गुलाल भरे झोरी। जमुना तट........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

														ऩी	ऩी
														ज	मु
प़	—	ऩी	ऩी	सा	—	सा	सा	रे	सा	रे	प	म	ग	रे	सा
ना	ऽ	त	ट	श्या	ऽ	म	खि	लैं	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	ज	मु
×				×				×				×			
रे	—	सा	सा	—	—	म	म	म	—	म	म	म	—	म	ग
ना	ऽ	त	ट	ऽ	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	त	ट	श्या	ऽ	म	खि
×				×				×				×			
रे	सा	रे	प	म	ग	रे	सा	रे	—	सा	सा	—	—	ऩी	ऩी
लैं	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	त	ट	ऽ	ऽ	ज	मु
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	रे	म	—	प	—	प	प	म	म	प	प	प	प	म	गरे
ज	मु	ना	ऽ	ती	ऽ	र	भी	ऽ	र	स	खि	य	न	की	ऽ
×				×				×				×			
नी̲	नी̲	नी̲	नी̲	नी̲	नी̲	ध	प	रे	—	रे	प	म	ग	रे	सा
को	ई	सां	ऽ	व	र	को	ई	है	ऽ	गो	ऽ	री	ऽ	ज	मु
×				×				×				×			
रे	—	सा	सा	—	—	ऩी	ऩी								
ना	ऽ	त	ट	ऽ	ऽ	ज	मु								
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (अवधी)

बाजै बाजै बंसी, मुरचंग संख–
धुन छाय रही वृन्दावन मैं।।

काहे की तोरी बांसुरी रे बांसुरी,
काहे की मुरचंग संख।। धुन छाय रही.......

सौनै की मोरी बांसुरी रे बांसुरी,
रूपे की मुरचंग संख।। धुन छाय रही.......

का मुख सोहै बांसुरी रे बांसुरी,
औ' काके मुख मुरचंग संख।। धुन छाय रही........

कान्हा मुख सोहै बांसुरी रे बांसुरी,
औ' राधे मुख मुरचंग संख।। धुन छाय रही.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार (कहरवा)

स्थाई

														प	प
														बा	जै
प	प	प	—	नी	म	प	नी	सां	—	सां	नी	—	प	म	प
बा	जै	बं	ऽ	सी	ऽ	मु	र	चं	ऽ	ग	सं	ऽ	ख	धु	न
×				×				×				×			
रे	—	रे	म	म	नी	प	—	रे	म	रे	रे	सा	—	—	—
छा	ऽ	य	र	ही	ऽ	वृं	ऽ	दा	ऽ	ब	न	मैं	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	—	प	—	नी	—	नी	नी	—	सां	—	नी	सां	रें	रें	—
का	ऽ	हे	ऽ	की	ऽ	तो	री	ऽ	बां	ऽ	सु	री	ऽ	रे	ऽ
×				×				×				×			
—	सां	रें	नी	सां	मं	रे	—	—	सां	रे	नी	सां	—	—	—
ऽ	बां	ऽ	सु	री	ऽ	रे	ऽ	ऽ	बां	ऽ	सु	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त कड़ी दो बार गायी जायेगी।

<u>नी</u>	—	प	—	<u>नी</u>	म	प	नी	सां	—	सां	<u>नी</u>	—	प	म	प
का	ऽ	हे	ऽ	की	ऽ	मु	र	चं	ऽ	ग	सं	ऽ	ख	धु	न
×				×				×				×			
रे	—	रे	म	म	<u>नी</u>	प	—	रे	म	रे	रे	सा	—	—	—
छा	ऽ	य	र	ही	ऽ	बृं	ऽ	दा	ऽ	ब	न	मैं	ऽ	बा	जै
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल (स्वनिर्मित)

यह गीत भी 'चौताल' की तरह होता है, और होली के अवसर पर ही गाया जाता है। धुन 'चौताल' से कुछ अलग है, मगर गाने का ढंग बहुत कुछ चौताल से मिलता है, अतः इसे 'चौताल' का ही एक रूप कहा जा सकता है। इसका छन्द 'चौताल' से बड़ा है। इसमें मात्राएं भी ज़्यादा होती हैं।

डेढ़ताल गीत सहगान के रूप में गाया जाता है। इसे स्त्री-पुरुष मिलकर गाते हैं। इसमें ढफ, ढोल, झांझ, मंजीरा, चिकारा, बांसुरी इत्यादि वाद्य-यंत्र बजाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल (स्वनिर्मित)

सखी फागुन मास नियराये,
अरे, मोरे प्रियतम नाहीं घर आये, हमै तरसाये।।

टेसू फूल आम बौराने, गैंदा फूल फूल हरसाने,
सरसों फूल सुहाये।। अरे, मोरे प्रियतम.......

सीतल मन्द सुगन्ध बयरिया, मनमा हूक उठावै कोयलिया,
मोहे पलछिन बिरह सताये। अरे, मोरे प्रियतम....

सब सखियां मिल रास रचावैं, प्रियतम संग मिल फगुवा गावैं,
मोर जिया अकुलाये।। अरे, मोरे प्रियतम........

मैं कहिके संग होरी खेलौं, नित अपनैं मनमा बिस घोलौं,
मोहे निसदिन बिरह सताये। अरे, मोरे प्रियतम....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डेढ़ताल (चाचर)

स्थाई

										सा	–	ऩी	–
										स	ऽ	खी	ऽ
										3			
										सा			
सा	–	–	रे	–	रे	–	ग	म	ग	रे	–	सा	सा
फा	ऽ	ऽ	गु	ऽ	न	ऽ	मा	ऽ	ऽ	स	ऽ	नि	य
×			2				0			3			
सा	–	–	सा	–	ग	–	ग	–	–	ग	–	ग	रे
रा	ऽ	ऽ	ये	ऽ	अ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	मो	ऽ	रे	ऽ
×			2				0			3			
म	म	–	म	–	म	पम	ग	ग	रे	सा	–	रे	–
प्रि	य	ऽ	त	ऽ	म	ऽऽ	ना	हीं	ऽ	घ	ऽ	र	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	–	–	सा	–	म	–	ग	ग	रे	सा	–	रे	–
आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ह	ऽ	मै	ऽ	ऽ	त	ऽ	र	ऽ
×			2				0			3			
ऩी	–	–	–	–	–	–	सा	–	–	सा	–	ऩी	–
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	स	ऽ	खी	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा (कहरवा)

म	–	म	–	म	–	म	ग	–	ग	ग	रे	सा	–	रे	–
टे	ऽ	सू	ऽ	फू	ऽ	ल	आ	ऽ	म	बौ	ऽ	रा	ऽ	ने	ऽ
×				×				×				×			
म	–	म	–	म	–	म	ग	–	ग	ग	रे	सा	–	रे	–
गैं	ऽ	दा	ऽ	फू	ऽ	ल	फू	ऽ	ल	ह	र	सा	ऽ	ने	ऽ
×				×				×				×			

• उपरोक्त दोनों कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

रे	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे	ऩी	–	–	–	सा	–	–	–
स	र	सों	ऽ	फू	ऽ	ल	सु	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

चाचर

ऩी	सा	–	रे	–	ग	–	सा	रे	–	म	–	म	–
सी	ऽ	ऽ	त	ऽ	ल	ऽ	मं	ऽ	ऽ	द	ऽ	सु	ऽ
×			2				0			3			
म	ग	–	रे	–	ग	–ग	सा	सा	–	सा	–	–	–
गं	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ब	ऽऽ	य	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ऩी	सा	—	रे	—	ग	—	सा	रे	—	म	—	म	—
म	न	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	हू	ऽ	ऽ	क	ऽ	उ	ऽ
×			2				0			3			
म	ग	—	रे	—	ग	मग	सा	सा	—	सा	—	—	—
ठ	ऽ	ऽ	वै	ऽ	को	ऽऽ	य	लि	—	या	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

• उपरोक्त दोनों कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

सा	—	नी	—	सा	सा	—	रे	—	रे	—	ग	म	ग
मो	ऽ	हे	ऽ	प	ल	ऽ	छि	ऽ	न	ऽ	चै	ऽ	ऽ
2				0			3				×		
रे	—	सा	—	सा	—	—	सा	—	ग	—	ग	—	—
न	ऽ	न	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	अ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
2				0			3				×		
ग	—	ग	रे	म	म	—	म	—	म	मप	ग	ग	रे
मो	ऽ	रे	ऽ	प्रि	य	ऽ	त	ऽ	म	ऽऽ	ना	ही	ऽ
2				0			3				×		

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	—	रे	—	ऩी	—	—	सा	—	म	—	ग	ग	रे
ध	ऽ	र	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ह	ऽ	मै	ऽ	ऽ
2				0			3				×		
सा	—	रे	—	ऩी	—	—	—	—	—	—	सा	—	—
त	ऽ	र	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ
2				0			3				×		

नोट : शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे। मध्यम को स्वर मान कर यह गीत गाना चाहिये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

जब स्त्रियां गंगा स्नान को अथवा किसी मेले में जाती हैं, तब राह काटने एवं श्रम भुलाने के लिए, झुण्ड के झुण्ड आपस में मिलकर, समवेत स्वर में इन गीतों को गाती हैं। ये गीत ढोलक-मंजीरे के साथ अथवा उनके बिना भी राह चलते गाये जाते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

आज मोहे रघुबर की सुधि आयी।

घर के रथवा रामघर ही छोड़त है,
पायन चलत हुइहैं दोऊ भाई।।

घर के जेउना रामघर ही छोड़त है।
भूखन रहुत हुइहैं दोऊ भाई।।

घर के गड़ुआ रामघर ही छोड़त है।
प्यासन रहुत हुइहैं दोऊ भाई।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत (कहरवा)

स्थाई

सा	सा	रे	ग॒	रे	सा	रे	ग॒	रे	ग॒	रे	सा	सा	—	सा	—
आ	ज	मो	हे	र	घु	ब	र	की	ऽ	सु	धि	आ	ऽ	यी	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा

ग	म	—	म	म	म	म	म	ग॒ग॒	रे	—	ग॒	रे	रे	सा	—
घर	के	ऽ	र	थ	वा	रा	ऽम	घर	ही	ऽ	छो	ड़	त	है	ऽ
×				×				×				×			
सा	सा	रे	ग॒	रे	सा	रे	ग॒	रे	ग॒	रे	सा	सा	—	सा	—
पा	य	न	च	ल	त	हु	इ	हैं	ऽ	दो	ऊ	भा	ऽ	ई	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

मैया की ऊंची नीची सुन्दर लहरिया।। चलौ री सखी ना
करै गंगा असननवा। चलो री सखी ना
करि असनान हम करबै पुजनिया।। चलो री सखी ना
भोले बाबा से अरजिया।। चलो री सखी ना
ऐ भोले बाबा तोहका जलवा चढ़ैबै।। चलो री सखी ना
कैदै पिया ते मिलनवां।। चलो री सखी ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत (कहरवा)

—	सा	सा	प	प	प	प	धप	म	म	ग	रे	रे	ग	म	म
ऽ	मै	या	की	ऊं	ची	नी	चीऽ	सु	न्द	र	ल	ह	रि	या	च
×				×				×				×			
ग	मग	रे	सा	सा	सा	सा	सा	ग	ग	ग	सा	रे	ग	म	म
लो	रीऽ	स	खी	ना	ऽ	क	रै	गं	गा	अ	स	न	न	वा	च
×				×				×				×			
ग	मग	रे	सा	सा	—	—	—								
लो	रीऽ	स	खी	ना	ऽ	ऽ	ऽ								
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

मैं तो चली बद्रीनाथ,
डुरिया लगैयो भगवान जी।

पैहली चढ़ाई चन्डी देवी की।
जहां बसै मोरी माय।। डुरिया....

एक तो चलत पग थाके।।
दुजै नाहीं कोऊ साथ,
अब तो मैं शरण तिहारी,
मोरा धर लेऊ हाथ।। डुरिया.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत (कहरवा)

स्थाई

ऩी सा	रे ग॒ सा रे	— ग॒ — रे	सा सा ऩी ऩी
मैं तो	च ली ब द्री	ऽ ना ऽ थ	डु रि या ल
×	×	×	×
सा सा रे ग॒	रे — सा —	— — ऩी सा	
गै यो भ ग	वा न जी ऽ	ऽ ऽ मैं तो	
×	×	×	

अन्तरा

— — ग ग	म — — म	ग सारे ग गम	ग — सा सा
ऽ ऽ पै ह	ली ऽ ऽ च	ढ़ा ईऽ च न्डी	दे वी की च
×	×	×	×
रेग सारे ग म	ग ग सा —	— — ऩी सा	रे ग॒ सा रे
ढ़ाऽ ईऽ च न्डी	दे वी की ऽ	ऽ ऽ ज हां	ब सै मो री
×	×	×	×
— ग॒ — रे			
ऽ मा ऽ य	डुरिया लगैयो भगवान जी		
×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर इस गाने को गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेला गीत

रघुबर संग जाब, हम ना अवध मा रहिबै।

जो रघुबर रथ चढ़ जैहैं,
पैदल चलि जाब।। हम ना अवध मा रहिबै

जो रघुबर पात बिछैहैं,
भुइयां हम सोई जाब।। हम ना अवध मा रहिबै

जो रघुबर बन फल खैहैं,
फोकली बिन खाब।। हम ना अवध मा रहिबै

जो रघुबर कै लगि है पियसिया,
हम जल भर लाब।। हम ना अवध मा रहिबै

जो रघुबर कै लगिहै गरिमिया,
हम बेनिया डुलाब।। हम ना अवध मा रहिबै

जो रघुबर करिहैं सैनियां,
हम चरण दबाब।। हम ना अवध मा रहिबै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेलागीत (कहरवा)

स्थाई

														ऩी	सा
														र	घु
	म														
रे	ग॒	सा	रे	–	ग॒	–	रे	सारे	ऩी	–	ऩी	सा	सा	रे	ग॒
ब	र	सं	ग	ऽ	जा	ऽ	ब	हम	ना	ऽ	अ	व	ध	मा	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	सा	–	–	–										
र	हि	बै	ऽ	ऽ	ऽ										
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

														ग	—
														जो	ऽ
म	म	म	म	ग	सा	रे	गम	ग	सा	—	सा	रेग	सारे	ग	म
र	घु	ब	र	र	थ	च	ढ़ऽ	जै	हैं	ऽ	हां	रऽ	थऽ	च	ढ़
×				×				×				×			
ग	—	सा	—	—	—	ऩी	सा	रे	(म)ग	सा	रे	—	ग॒	ऽ	रे
जै	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ	पै	ऽ	द	ल	च	लि	ऽ	जा	ऽ	ब
×				×				×				×			
सारे	ऩी	—	ऩी	सा	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा	—	—	—		
हम	ना	ऽ	अ	व	ध	मा	ऽ	र	हि	बै	ऽ	ऽ	ऽ		
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

'रसिया' ब्रजभूमि का सबसे अधिक लोकप्रिय गीत है। यों तो ब्रज में और भी लोकगीत गाये जाते हैं जैसे ढोला, मल्हार, हिंडोला, फाग इत्यादि। परन्तु, 'रसिया' की लोकप्रियता ने उन सबको ढक लिया है। शायद, इसीलिए ब्रज में रसिया बारहों महीने गाया जाता है।

रसिया अनेक धुनों में गाया जाता है और अनेकानेक कथानक इसमें जुड़े हुए हैं। जैसे दधिलीला, लिलिहारी लीला, गोवर्धन लीला इत्यादि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

अपनौं बृज देखन कौ आय जैयो,
गिरधारी कुंवर कन्हैया।
गिरधारी कुंवर कन्हैया,
ओ बलदाऊ के भैया।। अपनौं......

अब गांव गांव मैं कुंजै,
कुंजन मैं भंवरा गुंजै।
अरे नैक बिन मैं रास रचाय जैयौ।।
गिरधारी कुंवर कन्हैया।। अपनौं......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

म	म	म	प	ग॒	ग॒	ग॒	रे	सा	सा	सा	नी़	सा	सा	रे	—
अ	प	नौं	ऽ	बृ	ज	दे	ऽ	ख	न	कौ	ऽ	आ	य	जै	ऽ
×				×				×				×			
ग॒	—	ग॒	रे	सा	—	सा	रे	नी़	नी़	नी़	नी़	सा	—	सा	—
यौ	ऽ	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	कुं	व	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
—	—	सा	सा	रे	—	रे	—	म	म	म	म	प	—	प	—
ऽ	ऽ	गि	र	धा	ऽ	री	ऽ	कुं	व	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			
—	—	प	—	प	ग	ध	नीध॒	म	—	प	धप	ग॒	—	ग॒	रे
ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ब	ल	दा	ऽऽ	ऊ	ऽ	के	ऽऽ	भै	ऽ	या	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

														सा	सा
														अ	ब
रे	—	रे	रे	म	म	म	—	प	—	प	—	—	—	प	—
गां	ऽ	व	गां	ऽ	व	मैं	ऽ	कुं	ऽ	जै	ऽ	ऽ	ऽ	कुं	ऽ
×				×				×				×			
प	प	ध	नी॒ध	म	म	प	धप	ग॒	—	ग॒	रे	रे	म	म	म
ज	न	मैं	ऽऽ	भं	व	रा	ऽऽ	गुं	ऽ	जै	ऽ	अ	रे	नै	क
×				×				×				×			
ग॒	ग॒	ग॒	रे	सा	—	सा	ऩी	सा	—	रे	—	ग॒	—	ग॒	रे
बि	न	मैं	ऽ	रा	ऽ	स	र	चा	ऽ	जै	ऽ	यौ	ऽ	गि	र
×				×				×				×			
सा	—	सा	रे	ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	सा	—	सा	—				
धा	ऽ	री	ऽ	कुं	व	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ				
×				×				×							

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

आज बिरज मै होरी है, रे रसिया।
होरी है रे रसिया, बरजोरी है रे रसिया।। आज......

इत सै श्याम सखा संग निकसे,
उत ब्रखभानु दुलारी है रे रसिया।। आज......

उड़त गुलाल लाल भये बादर।
केसर की पिचकारी है रे रसिया।। आज.......

बाजत बीन, मृदंग, पखावज।
गावत दै दै तारी है रे रसिया।। आज........

श्याम श्याम मिल होरी खैलैं,
तन मन धन बलिहारी है रे रसिया।। आज........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

– ध़ ध़ नी़	सा सा सा –	सारे रेम म मग	रे रे सा –
ऽ आ ज बि	र ज मै ऽ	होऽ रीऽ है रेऽ	र सि या ऽ
×	×	×	×
म म म म	म म म मग	सा रे म ग	रे रे सा –
हो री है रे	र सि या बर	जो री है रे	र सि या ऽ
×	×	×	×

- उपरोक्त दोनों कड़ियां हमेशा साथ-साथ गायी जायेंगी।

अन्तरा

– प प धप	म – म मग	सा रे म ग	रे रे सा –
ऽ इ त सैऽ	श्या ऽ म सऽ	खा ऽ सं ग	नि क से ऽ
×	×	×	×
– ध़ ध़ नी़	सा – सा सा	सारे रेम म मग	रे रे – सा
ऽ उत ब्र ख	भा ऽ नु दु	लांऽ रीऽ है रेऽ	र सि या ऽ
×	×	×	×

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (बाल लीला)

छूम छूम छन नन छन नन ननन,
प्यारै की पैजनिया बाजै रे।
लाला की पैजनिया बाजै रे।।

जसुमति सुत कौ नचन सिखावत,
अंगुरी पकर बिचकनिया।। प्यारै की......

अंग अंग राजत आभूषण,
कटि सोहै करधनिया।। प्यारै की.........

पीत झंगुलिया कटि पै सोहै,
सिर टोपी लटकनिया।। प्यारै की.......

तीन लोक जाके उदर बसत हैं,
ताहि नचावै नंदरनिया।। प्यारै की.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

ऩी	–	ऩी	ऩी	सा	सा	रे	म	ग॒	ग॒	सा	ऩी	सा	सा	सा	रे
छू	ऽम	छू	ऽम	छ	न	न	न	छ	न	न	न	न	न	न	प्या
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग॒	सा	रे	सा	ऩी	सा	–	रे	ग॒	रे	–	–	रे
रै	की	पै	ऽ	ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ला
×				×				×				×			
रे	रे	रे	ग॒	सा	रे	सा	ऩी	सा	–	रे	ग॒	रे	–	–	–
ला	की	पै	ऽ	ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

रे	रे	म	प	प	प	प	—	म	म	प	प	मप	धप	म	गरे
ज	सु	म	ति	सु	त	कौ	ऽ	न	च	न	सि	खाऽ	ऽऽ	व	तऽ
×				×				×				×			
म	म	म	म	म	म	म	मग	रेग	ग	—	रे	रे	रे	रे	ग
अं	गु	री	प	क	र	बि	चऽ	कनि	या	ऽ	ला	ला	की	पै	ऽ
×				×				×				×			
सा	रे	सा	ऩी	ऩी	सा	रे	ग॒	रे	—	—	—				
ज	नि	या	ऽ	बा	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ				
×					×			×							

नोट : गीत की शेष पंक्तियां अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

जसोदा तेरे लाला नै माटी खायी।।
अद्भुत खेल सखिन संग खेलौ,
छोटौ सौ बृजरज कौ डेलौ,
तुरत श्याम नै मुख मै मैलौ,
मटक-मटक मटकायी।। जसोदा......

चौ लाला तैने खायी माटी,
माखन कूं, कबहूं नही नाटी,
धमकावै जसुदा लै सांटी,
नैक दया नहिं लायी।। जसोदा.......

मुख के माहि आंगुरी मेली,
निकर परी बृजरज की डेली,
भीर बड़ी सखियन की मेली,
देखो लोग लुगायी।। जसोदा......

मोहन कौ मुखड़ौ खुलवायो,
तब बिस्वास जसोदे आयौ,
तीनौ लोक भुवन दिखरायौ,
पूरण ब्रह्म कहायी।। जसोदा........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

															ग
															ज
गम	प,धप	म	गम	गम	ऱेग	ग	गम	रेग	सा	सारे	गम	ग	ग	—	—
सोऽ	दा,ऽऽ	ते	रेऽ	ऽऽ	लाऽ	ला	नैऽ	माऽ	ऽ	टीऽ	ऽऽ	खा	यी	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
मप	मग	रे	गम	प	प	प	पध	मप	मग	रे	गम	पप	प	प	पध
अद्‌	भुत	खे	लस	खिन	संग	खेऽ	लौऽ	छोऽ	टौऽ	सौ	बृज	रज	कौऽ	डेऽ	लौऽ
×				×				×				×			
मप	मग	रे	गम	पप	प	प	प	—	पसां	सां	सांरे	नी	धप	प	धप
तुर	तश्या	ऽम	नैऽ	मुख	मै	मैऽ	लौ	ऽ	मट	क	मऽ	ट	कऽ	म	टऽ
×				×				×				×			
म	गरे	ग	ग												
का	यीऽ	ऽ	ज												
×															

नोट : गीत की शेष पंक्तियां भी उपरोक्त स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

तेरी अधिक अनोखी चाल, नंद के छल बलिया।।

जा दिन जनम्यौ कारागृह मै, ता दिन पड़ौ अकाल,
राधे रानी के प्रताप सै, है गयो मालामाल।। नंद के.......

राजा ओढ़ै साल दुसाला और मुतियन की माल,
कारी कावर देई है माय नै, समुझ बिरानौ लाल।। नंद के......

राजघरन की रीत न जानै, तू गैयन को ग्वाल,
आप मरे पै, कंस राजा कौ, पूत भयो भूपाल।। नंद के........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			ते री
नी़ नी़ ध़ प़	प़ध़ नी़सा नी़ नी़	सा — सा सा	सा ग॒ ग॒ रे
अ धि क अ	नोऽ ऽऽ खी ऽ	चा ऽ ल नं	ऽ द के ऽ
×	×	×	×
रे म॒ ग रे	सा — सा रे	अधिक अनोखी चाल	
छ ल ब लि	या ऽ ते री		
×	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	सा	सा	नीसा	ग	ग	ग	गरे	म	म	मम	मप	ग	–	रेग	सा
जा	दिन	जन	मौऽ	का	रा	गृह	मैऽ	ता	दिन	पड़ौ	ऽअ	का	ऽ	ऽऽ	ल
×				×				×				×			
प	प	प	प	प	धुप	म	म	–	म	म	म	म	ध	प	म
रा	धे	रा	नी	के	प्रता	ऽप	सै	ऽ	है	ग	यो	मा	ऽ	ला	ऽ
×				×				×				×			
ग	–	सा	सा	–	ग	ग	रे	रे	म	ग	रे	सा	–	सा	रे
मा	ऽ	ल	नं	ऽ	द	के	ऽ	छ	ल	ब	लि	या	ऽ	ते	री
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (लिलहारी लीला)

बन गये नंदलाल लिलहारी, लीला गुदवालेउ प्यारी,
जाय गलियन मै करि पुकार,
गोदना गुदवा लेउ बृज नार,
गुदना लेउ गुदाय, नयी आयी गोदनहारी।। बन गये.....

शीश पै शीश फूल गहना,
लगाय लियो काजर दोऊ नैना,
पैहर लिये नख-शिख से,
हाथ मै फूलन के कंगना।।
नख शिख गहना पैहर, कर सोलह श्रृंगार,
बलिहारी नंद नंद के नर से बन गये नार।।
कि झोली कांधे पै डाली।। बन गये.......

माथे पै लिख दै मदन मुरारि,
कपोलन लिख दै कान कुंआरि,
श्रवण पै लिख दै श्री बृजलाल,
नासिका पै लिख दै नये लाल,
ठौड़ी पै ठाकर लिखो, रोम रोम पै राम।।
धन्य धन्य धनश्याम कै हो जाऊं बलिहार,
कि मुरली अधर धरी प्यारी।। बन गये......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (लिलहारी लीला) (कहरवा)

स्थाई

प	ध	म	—	ग	—	ग	सा	—	रे	ऩी	ऩी	सा	—	सा	—
ब	न	ग	ये	नं	ऽ	द	ला	ऽ	ल	लि	ल	हा	ऽ	री	ऽ
×				×				×				×			
रे	प	म	—	ग	—	ग	सा	सा	रे	ऩी	—	सा	—	—	—
ली	ऽ	ला	ऽ	गु	द	वा	ऽ	ले	ऊ	प्या	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

अन्तरा-1

															सा
															जा
—	सा	ऩी	सा	ग	ग	ग	—	ग	ग	—	सा	रे	—	—	सा
ऽ	य	ग	लि	य	न	मै	ऽ	क	री	ऽ	पु	का	ऽ	र	गो
×				×				×				×			
—	सा	ऩी	सा	ग	ग	ग	—	ग	ग	—	सा	रे	—	—	रे
ऽ	द	ना	ऽ	गु	द	वा	ऽ	ले	उ	बृ	ज	ना	ऽ	ऽ	र
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे	रे	रे	—	म	—	म	म	प	—	प	प	धनी̱	पध	सा	(सां)
गु	द	ना	ऽ	ले	ऽ	उ	गु	दा	ऽ	य	न	यीऽ	ऽऽ	आ	ऽ
×				×				×				×			
नी̱	—	ध	प	प	ध	म	—	म	ग	रे	—				
यी	ऽ	गो	ऽ	द	न	हा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

अन्तरा-2

															सा
															शी
—	सा	ऩी	सा	ग̱	ग̱	ग̱	ग̱	ग̱	ग̱	सा	—	रे	—	—	—
ऽ	श	पै	ऽ	शी	ऽ	श	फू	ऽ	ल	ग	ह	ना	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

- इस अन्तरे की शेष कड़ियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

रे	रे	रे	रे	म	म	म	—	—	प	प	प	प	—	—	—
न	ख	शि	ख	ग	ह	ना	ऽ	ऽ	पै	ह	र	कै	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
ध	ध	ध	—	ध	ध	म	—	म	प	—	—	—	—		प
क	र	सो	ऽ	ल	ह	शृं	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ध	ध	—	ध	—	प	प	—	प	ध	प	म	ग	रे	—
ब	लि	हा	ऽ	री	ऽ	नं	द	ऽ	नं	ऽ	द	के	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			
रे	प	म	ग	रे	ग	सा	सा	सा	—	सा	सा	सा	—	ऩी	सा
न	र	से	ऽ	ब	न	ग	ये	ना	ऽ	ऽर	कि	झो	ऽ	ली	ऽ
×				×				×				×			
ग़	—	ग़	—	रे	ग़	सा	—	रे	—	—	—				
कां	ऽ	धे	ऽ	पै	ऽ	डा	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ				
×				×				×							

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

बिन विद्या भारत देस,
लुटि गयो सुन सजनी।।

विद्या गयी अविद्या आयी जब सै भारत देस,
घर घर मै भाई भाई मै नित उठि होय कलेस।। बिन......

रहौ न कोई विद्या कौ धनी,
हेल मेल के पौधा कटि गये।। बिन......

घर घर उपजी फूट,
फूट खाय कै भय बाबरे।। बिन........

लै गये बिदेसी धन लूट,
रहौ न कोई विद्या कौ धनी।। बिन.......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

														म	म
														बि	न
गम	सारे	म	–	गम	गरे	रेग	गरे	सा	–	नीध	प	धसा	सा	रेग	गरे
बिऽ	ऽऽ	द्या	ऽ	भाऽ	ऽऽ	रऽ	तऽ	दे	ऽ	ऽऽ	स	लुऽ	टि	गऽ	योऽ
×				×				×				×			
सारे	मग	गरे	रेसा	सा	–	म	म								
सुऽ	नऽ	सऽ	जऽ	नी	ऽ	बि	न								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी़	नी़	ध़ध़	ध़प़	ध़सा	सा	रेग॒	ग॒सा	सारे	मग॒	रे	रेसा	सा	–	–	सा
वि	द्या	गयी	ऽअ	विऽ	द्या	आऽ	यीऽ	जब	सैऽ	भा	रत	दे	ऽ	ऽ	स
×				×				×				×			
रेरे	रेम	म	म	रे	रेम	म	म	–	रेम	म	म	म	मप	प	पम
घर	घर	मै	भा	ई	भाऽ	ई	मै	ऽ	नित	उ	ठि	हो	ऽऽ	य	कऽ
×				×				×				×			
ग॒	–	सा	सा	सा	साग॒	ग॒	गरे	रे	रेम	मग॒	ग॒रे	सा	–	म	म
ले	ऽ	स	र	हौ	नऽ	को	ईऽ	वि	द्याऽ	कौऽ	धऽ	नी	ऽ	बि	न
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (नारायण स्वामी)

मति मारौ दृगन की चोट रसिया,
होरी मै मैरै लगि जायेगी।।

अबकी चोट बचाय गयी हूं लाला,
करि घुंघटा की ओट रसिया।। मति....

मैं तो लाज भरी, भरे घर की,
तुम हो बड़े निगोट रसिया।। मति......

नारायण तुम वहीं जाय खेलौ,
जहां मिले तिहारो जोट रसिया।। मति....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			म ति
ऩी सा – सा	सा सा सा रे	ऩी सा – सा	सा ग॒ रे सा
मा रै ऽ ल	ला जी म ति	मा रै ऽ दृ	ग न की ऽ
×	×	×	×
सारे ऩीसा ध़ऩी ऩी	ऩी सा ऩीसा रेग॒	– ग॒ – ग	ग॒ – ग॒ ग॒रे
चोऽ ऽऽ ऽऽ ट	र सि याऽ ऽऽ	ऽ हो ऽ री	मै ऽ मे रेऽ
×	×	×	×
सा म ग॒ रे	सा – सा रे		
ल ग जा ये	गी ऽ म ति		
×	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

–	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	ग॒रे	म	–	म	पम	ग॒	ग॒	रे	सा
ऽ	अ	ब	की	चो	ऽ	ट	बऽ	चा	ऽ	य	गऽ	यी	हूं	ला	ला
×				×				×				×			
ऩी	ऩी	सा	सा	सा	म	ग॒	रेसा	सारे	ऩीसा	धऩी	ऩी	ऩी	सा	ऩीसा	रेग॒
क	र	घुं	घ	टा	ऽ	की	ऽऽ	ओऽ	ऽऽ	ऽऽ	ट	र	सि	याऽ	ऽऽ
×				×				×				×			
–	ग॒	–	ग॒	ग	–	ग	ग॒रे	सा	म	ग॒	रे	सा	–	सा	रे
ऽ	हो	ऽ	री	मै	ऽ	मे	रेऽ	ल	ग	जा	य	गी	ऽ	म	ति
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

मोसौं मोहन प्यारे बोल, खोल मुख धीरे-धीरे से।
खोल मुख धीरे-धीरे से, खोल मुख धीरे-धीरे से।।

टटकौ माखन तोहि खबाऊं,
मधुबन के मीठे फल लाऊं,
अपने हाथन भोग लगाऊं, धीरे-धीरे से।। मोसौं

तोकू लैकै गोद गुदैयां,
जमुना तट लौं जाऊं कन्हैया,
हंस दै नैक नंद के छोरा, धीरे-धीरे से।। मोसौं

फूले-फूले फूल बीन के,
सुन्दर माला गूंध गूंध के,
अपने हाथन सै पहराऊं, धीरे-धीरे से।। मोसौं,

कुंवर कान्ह तुम़ बुरा न मानौ,
हम सब कूं अपनौ करि जानौं,
प्रीत पुरानी नयी बनैगी, धीरे-धीरे से।। मोसौं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

	म		
ऩी सा रे –	ग – ग गसा	सा रे सा ऩी	सा – सा सा
मो ऽ सौं ऽ	मो ऽ ह नऽ	प्या ऽ रे ऽ	बो ऽ ल खो
×	×	×	×
ऩी सा रे रे	ग – ग गसा	सा रे सा ऩी	सा – – प
ऽ ल मु ख	धी ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ खो
×	×	×	×
प प प ध	पध नी नी धप	प ध म ग	म – – ग
ऽ ल मु ख	धीऽ ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ खो
×	×	×	×
रे ग सा रे	ग – ग गसा	सा रे सा ऩी	सा – – –
ऽ ल मु ख	धी ऽ रे ऽऽ	धी ऽ रे ऽ	से ऽ ऽ ऽ
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ऩी	ऩी	ऩी	–	ऩी	–	ऩी	ऩी	सा	–	सा	सा	सा	–	सा	–
ट	ट	कौ	ऽ	मा	ऽ	ख	न	तो	ऽ	हि	ख	बा	ऽ	ऊं	ऽ
×				×				×				×			
ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	–	ग॒	–	रे	ग॒	रे	सा	सा	ग॒	रे	–
म	धु	ब	न	के	ऽ	मी	ऽ	ठे	ऽ	फ	ल	ला	ऽ	ऊं	ऽ
×				×				×				×			
म	म	म	–	म	–	म	ग	रे	ग	ग	म	रे	–	सा	रे
अ	प	ने	ऽ	हा	ऽ	थ	न	भो	ऽ	ग	ल	गा	ऽ	ऊं	ऽ
×				×				×				×			
ग॒	–	ग॒	ग॒सा	सा	रे	सा	ऩी	सा	–	–	–	ऩी	सा	रे	–
धी	ऽ	रे	ऽऽ	धी	ऽ	रे	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	मो	ऽ	सौं	ऽ
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अंतरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

मोपै कैसी रे मोहनी डारी रे,
चितचोर छैल गिरधारी नै।।

गृह कारज मै जी न लगत है,
खान पान लगै खारी,
रही न लाज सकुच गुरुजन की,
तन मन सुरति बिसारी बनवारी। मोपै कैसी...

नारायण मोह समझ बावरी,
हंसत सकल ब्रजनारी।
चैन न आवै बिरह सतावै,
सूरत देखि तिहारी बनवारी। मोपै कैसी....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

सारे गम म म	गम सारे म म	गम गुरे रेग गुरे	सा – नी़ –
हांऽ ऽऽ मौ पै	कैऽ सीऽ रे मो	ऽऽ हऽ नीऽ ऽऽ	डा ऽ री ऽ
×	×	×	×
ध़ ध़नी़ प़ प़	प़ध़ ध़सा सा सा	रे ग रे (ग)	सा – सा –
रे ऽऽ चि त	चोऽ ऽऽ र छै	ऽ ल गि र	धा ऽ री ऽ
×	×	×	×
सारे गम म म			
नैऽ ऽऽ मो पै			
×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नी़	नी़	नी़	—	ध़	ध़	प़	—	ध़	सा	सा	सा	रे	ग	ग	रे
गृ	ह	का	ऽ	र	ज	मै	ऽ	जी	ऽ	न	ल	ग	त	है	ऽ
×				×				×				×			
रे	म	म	म	ग	ग	रे	ग	सा	—	सा	—	रे	म	म	म
खा	ऽ	न	पा	ऽ	न	ल	गै	खा	ऽ	री	ऽ	अ	रे	मौ	कौं
×				×				×				×			
म	ग	ग	ग	रे	रे	रे	ग	सा	—	—	—	सा	—	—	—
खा	ऽ	न	पा	ऽ	न	ल	गै	खा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				×				×				×			

∘ उपरोक्त कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

रे	रे	—	रे	म	—	म	म	प	प	प	प	प	प	प	—
र	ही	—	न	ला	ऽ	ज	स	कु	च	गु	रु	ज	न	की	ऽ
×				×				×				×			
—	—	प	सां	सां	—	सां	—	नी	—	ध	—	प	—	म	—
ऽ	ऽ	त	न	म	ऽ	न	ऽ	सु	ऽ	र	ऽ	त	ऽ	बि	ऽ
×				×				×				×			
ग	—	ग	रे	म	—	म	—	ग	—	ग	रे	म	—	म	—
सा	ऽ	री	ऽ	ब	ऽ	न	ऽ	वा	ऽ	री	ऽ	मो	ऽ	पै	—
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी और दुगुन में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया

राधा की छवि देख मचल गयौ सांवरिया।।

हंस मुसकाय प्रेम रस चाखूं,
तोय नैनन बिच ऐसै राखूं।
ज्यौं काजर की रेख परैगी तोतैं भांवरिया।। राधा

मैं राधा तेरे घट आऊं,
अंगना मैं बांसुरी बजाऊं।
नृत्य करूं मन खोल कंवल पर पांवरिया।। राधा

बरसानै की राधा प्यारी,
वृन्दावन के कृष्ण मुरारी।
सुख सागर मै खेल तू राधे बावरिया।। राधा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिया (कहरवा)

स्थाई

—	रे	—	रे	रे	म	ग॒	रे	सा	—	सा	म	ग॒	रे	सा	ऩी
ऽ	रा	ऽ	धा	की	ऽ	छ	वि	दे	ऽ	ख	म	च	ल	ग	यौ
×				×				×				×			
सा	—	रे	रे	सारे	ग॒	रे	ग॒	सा	रे	—	रे	रे	म	ग	रे
सां	ऽ	व	रि	याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	धा	की	ऽ	छ	वि
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

—	रे	म	म	प	—	प	प	म	म	प	प	मप	धप	म	गरे
ऽ	हंस	मु	स	का	ऽ	य	प्रे	ऽ	म	र	स	चाऽ	ऽऽ	खूं	ऽऽ
×				×				×				×			
—	रे	म	म	प	—	प	प	म	—	प	प	मप	धप	म	गरे
ऽ	तोय	नै	ऽ	न	न	बि	च	ऐ	ऽ	सै	ऽ	राऽ	ऽऽ	खूं	ऽऽ
×				×				×				×			
—	रे	—	रे	रे	म	ग॒	रे	सा	—	सा	म	ग॒	रे	सा	ऩी
ऽ	ज्यौं	ऽ	का	ज	र	की	ऽ	रे	ऽ	ख	प	रै	गी	तो	तैं
×				×				×				×			
सा	—	रे	रे	सारे	ग॒	रे	ग	सा							
भां	ऽ	व	रि	याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
×				×				×							

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंगुरिया

'लंगुरिया' भी 'रसिया' का ही एक प्रकार है। यह ब्रज और बुंदेलखण्ड में गाया जाता है। इसकी और धुनें उपलब्ध नहीं हैं। केवल यही धुन प्रचलित है। 'लंगुरिया' में विभिन्न प्रकार के विषय समाहित रहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंगुरिया

फिर कबहू न मैली होय लंगुरिया,
ऐसे रंग रंग दै चुनरी।।

अरे हां रे लंगुरिया, कौन घाट चुनरी धुई,
और कौन रंग दई बोर।। लंगुरिया ऐसे.......

अरे हां रे लंगुरिया, रामघाट चुनरी धुई,
और श्याम रंग दी बोर।। लंगुरिया ऐसे........

अरे हां रे लंगुरिया, काहै को कलफ लगायो,
और रंगी कौन बिध बोर।। लंगुरिया ऐसे......

अरे हां रे लंगुरिया, नेह कौ कलफ लगायो,
और खूब रंगी झकझोर।। लंगुरिया ऐसे......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंगुरिया (कहरवा)

स्थाई

														सा	सा
														फि	र
प़	ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	सा	सा	—	सा	ग॒रे	सा	ऩी	सा	ग॒	रे	—
क	ब	हूं	न	मै	ऽ	ली	ऽ	हो	ऽऽ	य	लं	गु	रि	या	ऽ
×				×				×				×			
रे	रे	रे	म	ग॒	रे	सा	रे	ऩी	सा	—	सा	सा	—	सा	सा
ऐ	से	रं	ग	रं	ग	दै	ऽ	चू	ऽ	ऽ	न	री	ऽ	फि	र
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

														ग	ग
														अ	रे
ग̲	–	सा	नी	सा	ग̲	रे	–	रे	–	रे	म	ग̲	रे	सा	रे
हां	ऽ	रे	लं	गु	रि	या	ऽ	कौ	ऽ	न	घा	ऽ	ट	चु	न
×				×				×				×			
ऩी	सा	–	सा	सा	–	सा	सा	प	ऩी	ऩी	ऩी	सा	सा	सा	सा
री	ऽ	ऽ	धु	ई	ऽ	औ	र	कौ	ऽ	न	रं	ऽ	ग	द	ई
×				×				×				×			
सा	(ग̲ुरे)	सा	ऩी	सा	ग̲	रे	–	रे	रे	रे	म	ग̲	रे	सा	रे
बो	(ऽऽ)	र	लं	गु	रि	या	ऽ	ऐ	से	रं	ग	रं	ग	दै	ऽ
×				×				×				×			
ऩी	सा	–	सा	सा	–	सा	सा								
चु	ऽ	ऽ	न	री	ऽ	फि	र								
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर यह गीत गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

'होली' एक उत्सव गीत है। हिन्दुओं के प्रमुख त्योहार होली के अवसर पर यह गाया जाता है। रंग खेलती, घूमती टोलियों में लोग मस्त होकर इस गीत को गाते हैं। इसमें रंग खेलने की विभिन्न भंगिमाओं का रोचक वर्णन मिलता है। ब्रज की 'होली' में कृष्ण और गोपियों की रास-लीला का भी वर्णन मिलता है। प्रायः सभी स्थानों के 'होली' गीतों में झांझ, मृदंग, मंजीरा, ढफ आदि वाद्यों का प्रयोग होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

डगर मोरी छोड़ो श्याम,
बिंध जाउगे नैनन मै।।

जो तेरे मन मै होरी खेलन की,
तौ चले चलौ कुंजन मै।। डगर.....

भूल जाउगे सब चतुराई,
मारूंगी सैनन मै।। डगर......

चोवा चंदन अतर अरगला,
छिड़कोंगी आंगन मै।। डगर.....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (रूपक)

स्थाई

												सा	—
												ड	ऽ
												3	
ध़नी़	प़ध़	—	सा	—	रे	—	ग	म	—	ग	—	सा	—
गऽ	रऽ	ऽ	मो	ऽ	री	ऽ	छो	ऽ	ऽ	ड़ो	ऽ	श्या	ऽ
×			2		3		×			2		3	
ध़नी़	प़ध़	—	सा	—	रे	—	ग	—	—	ग	—	म	—
ऽऽ	मऽ	ऽ	बिं	ऽ	ध	ऽ	जा	ऽ	ऽ	उ	ऽ	गे	ऽ
×			2		3		×			2		3	
ग	ग	रे	रे	ग	सा	—	रे	—	—	—	—	सा	—
नै	ऽ	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	मै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड	ऽ
×			2		3		×			2		3	

अन्तरा

नोट : अन्तरे की पहली कड़ी ताल रहित होगी और दूसरी कहरवा ताल में गायी जायेगी। सम आने पर फिर रूपक ताल में आ जायेंगे। यही क्रम शेष अन्तरों में भी चलता रहेगा।

सा — ग म॑ प म॑ प - - — ग — प ध पनी धनी प———

जो ऽ ते रे म न मै ऽ ऽ ऽ हो ऽ री खे लऽ नऽ की ऽऽऽ

म॑ ग

ऽ ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरवा

															ग
															तो
ग	ग	ग	म	ग	रे	ग	सा	रे	—	—	सा	ध़नी़	प़ध़	सा	रे
च	ले	च	लौ	कुं	ऽ	ज	न	मै	ऽ	ऽ	श्या	ऽऽ	मऽ	तु	म
×				×				×				×			
ग	ग	ग	म	ग	रे	ग	सा	रे	—	—	सा	ध़नी़	प़ध़	सा	रे
च	ले	च	लौ	कुं	ऽ	ज	न	मै	ऽ	ऽ	ड	गऽ	रऽ	मो	री
×				×				×				×			
ग	म	ग	सा	ध़नी़	प़ध़	सा	रे								
छो	ऽ	ड़ो	श्या	ऽऽ	मऽ	बिं	ध								
×				×											

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (भोजपुरी धुन में)

बृज मै हरि होरी मचायी।।
राधे सैन दयी सखियन कौं झुण्ड झुण्ड मिल धायीं।। बृज.......

लपट झपट गयीं श्याम सुन्दर सौं,
करि गहि पकर मंगायी, लाला जी कौ नाच नचायी।। बृज.....

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, ढफ, मजीरा, शहनाई,
उड़त गुलाल लाल भये बादर,
रहे सकल बृज छायी, मनौ मेघवा झर लायी।। बृज........

छीन लियो मुख मुरली पीताम्बर, सिर से चुनरी उढ़ायी,
बिंदी भाल, नैन बिच काजर, नक बेसर पैहरायी,
लाला जी को नार बनायी।। बृज में......

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (चाचर)

स्थाई

										म	—	ग	—
										बृ	ऽ	ज	ऽ
										3			
रे	ग	—	म	—	म	—	प	—	—	प	—	म	ग
मै	ऽ	ऽ	ह	ऽ	रि	ऽ	हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	म	ऽ
×			2				0			3			
म	नी̲	नी̲	ध	—	नी̲	नी	प	ध	—	म	—	ग	—
चा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बृ	ऽ	ज	ऽ
×			2				0			3			
रे	ग	—	म	—	म	—	प	—	—	प	—	—	—
मै	ऽ	ऽ	ह	ऽ	रि	ऽ	हो	ऽ	ऽ	री	—	—	—
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	—	—	रे	—	—	—	रे	ग	—	म	—	प	—
रा	ऽ	ऽ	धे	ऽ	ऽ	ऽ	सै	ऽ	ऽ	न	ऽ	द	ऽ
×			2				0			3			
प	प	ध	ग	—	म	—	रे	ग॒	—	रे	—	ग॒	रे
यी	ऽ	ऽ	स	ऽ	खि	ऽ	य	न	ऽ	कौं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

• उपरोक्त दोनों कड़ियां दो बार गायी जायेंगी।

सा	—	—	रे	—	रे	—	रे	ग॒	—	म	—	प	—
झुं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	झुं	ऽ	ऽ	ड	ऽ	मि	ऽ	ल	ऽ
×			2				0			3			
मं	—	—	प	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
धां	ऽ	ऽ	यीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प	प	—	प	—	प	ध	नी	नी	—	सां	—	सां	—
ल	प	ऽ	ट	ऽ	झ	ऽ	प	ट	ऽ	ग	ऽ	यीं	ऽ
×			2				0			3			
रें	गं॒	—	रें	—	सां	—	नीं	(सां)	—	नी॒	नी॒	ध	नी॒
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	न्द	र	ऽ	सौं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	प	—	प	—	प	ध	नी	नी	—	सा	—	नी	—
ल	प	ऽ	ट	ऽ	झ	ऽ	प	ट	ऽ	ग	ऽ	यीं	ऽ
×			2				0			3			
सां	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	नी	सां
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ
×			2				0			3			
रे	गं	—	रें	—	सां	—	नी	सां	—	नी	—	प	ध
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	सु	ऽ	न्द	र	ऽ	सौं	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
नी	नी	—	नी	—	नी	—	सां	सां	—	ध	नी	प	ध
क	रि	ऽ	ग	ऽ	हि	ऽ	प	क	ऽ	र	ऽ	मं	ऽ
×			2				0			3			
नी	—	—	ध	—	—	प	प	प	—	सां	—	सां	—
गा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽ	जी	ऽ	कौ	ऽ
×			2				0			3			
सां	—	—	सां	—	नी	—	ध	—	—	प	—	—	—
ना	ऽ	ऽ	च	ऽ	न	ऽ	चा	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	—											
ऽ	ऽ	ऽ											
×													

नोट : इस गीत की स्थाई और पहला अन्तरा चाचर ताल में गाये जायेंगे। शेष अन्तरे कहरवा ताल में गाये जायेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

मैं तो खेलूंगी, मैं तो खेलूंगी,
मैं तो खेलूंगी कान्हा तोसैं होरी बरजोरी।। मैं तो......

हम घनश्याम बनब मथुरा मा,
तोहि नवल ब्रज बनिता बनायी।
क्रीट मुकुट कुण्डल हम पहिरब,
तोहका लाल बेनुली पहिरायी।। मैं तो......

मुरली मधुर लेबि हम हथवा,
चूड़ी पहिराइब कान्हा तोहरी कलाई,
विश्वनाथ धर मुरली अधर पै,
लेहु विपिन कान्हा गरवा लगायी।। मैं तो........

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (कहरवा)

स्थाई

			सा रे
			मैं तो
ऩी सा सा –	– – सा रे	ऩी सा सा –	सा प़ म़ प
खे लूं गी ऽ	ऽ ऽ मैं तो	खे लूं गी ऽ	ऽ ऽ मैं तो
×	×	×	×
ऩी ऩी ऩी ऩी	सा – सा सा	रे रेम म मग	रे रे सा रे
खे लूं गी का	न्हा ऽ तो सैं	हो रीऽ ब रऽ	जो री मैं तो
×	×	×	×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	प	प	ध	म	म	म	मग	सा	रे	म	ग	रे	–	सा	–
ह	म	घ	न	श्या	ऽ	म	बऽ	न	ब	म	थु	रा	ऽ	मा	ऽ
×				×				×				×			
–	म	म	म	म	म	म	मग	सा	रे	म	ग	रे	–	सा	–
ऽ	तो	हि	न	व	ल	ब्र	जऽ	ब	नि	ता	ब	ना	ऽ	यी	ऽ
×				×				×				×			
–	प़	नी़	नी़	नी़	नी़	नी़	–	सा	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा	सा
ऽ	क्री	ट	मु	कु	ट	कुं	ऽ	ड	ल	ह	म	प	हि	र	ब
×				×				×				×			
–	म	म	म	म	म	म	मग	सा	रे	म	ग	रे	रे	सा	रे
ऽ	तोह	का	ला	ऽ	ल	बे	नुऽ	ली	ऽ	प	हि	रा	यी	मैं	तो
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी। मध्यम को स्वर मानकर इस गाने को गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

मोरी भीजै रेशम चूनर हो,
मैं कैसे खेलौं होरी।।

जाऔ जाऔ मोरी लतपथ सारी,
रंग डारी मोरी चूनर सारी।
सास रिसैहै जब जैहौं घर, मति करौ बाराजोरी रे।
मति करौ बाराजोरी रे।।

श्याम सखा संग खेल मचावत,
बुक्क अबीर गुलाल उड़ावत।
बातन बात भूली ब्रज नागरि, बिहंसि खोरी खोरी रे।
हां बिहंसत खोरी खोरी रे।।

हर्षित नर नारी सब गावत,
श्याम सलौने खूब नचावत।
देब, दनुज, मुनि, किन्नर, हरि के मुख मण्डित है रोरी रे।
हां मुख मंडित है रोरी रे।।

राधा श्याम, श्याम भये राधा,
हो गये एक, एक कै आधा।
सराबोर भये आनन्द रंग में, जीवै जोरी जोरी रे।
हां जीवै जोरी जोरी रे।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (कहरवा)

स्थाई

														ऩी	सा
														मो	री
ग॒	—	ग॒	—	ग॒	—	रे	ग॒	सा	—	सा	रे	सारे	गम	ग	म
भी	ऽ	जै	ऽ	रे	ऽ	श	म	चू	ऽ	न	र	होऽ	ऽऽ	मैं	ऽ
×				×				×				×			
ग॒	—	ग॒	—	रे	ग॒	सा	—	सा	—	सा	—	—	—	ऩी	सा
कै	ऽ	से	ऽ	खे	ऽ	लौं	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री
×				×				×				×			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	–	ग	ग	–	ग	ग	रे	सा	सा	ग	रे	सा	ऩी	सा	–
जा	ऽ	ओ	जा	ऽ	ओ	मो	री	ल	त	प	थ	सा	ऽ	री	ऽ
×				×				×				×			
रे	ग	ग	रे	रे	म	म	ग	रे	ग	ग	रे	सा	ऩी	सा	–
रं	ग	डा	ऽ	री	ऽ	मो	री	चू	ऽ	न	र	सा	ऽ	री	ऽ
×				×				×				×			
प	नी	नी	नी	नी	–	नी	ध	ध	सां	सां	–	सां	–	सां	सां
सा	ऽ	स	रि	सै	ऽ	है	ऽ	ज	ब	जै	ऽ	हौं	ऽ	घ	र
×				×				×				×			
सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	–
म	ति	क	रै	बा	ऽ	रा	ऽ	जो	ऽ	री	ऽ	रे	ऽ	हो	ऽ
×				×				×				×			
प	ध	ध	प	म	प	प	म	रे	म	ग	रे	सा	–	ऩी	सा
म	ति	क	रै	बा	ऽ	रा	ऽ	जो	ऽ	री	ऽ	रे	ऽ	मो	री
×				×				×				×			

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त अन्तरे के स्वरों में गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

रंग डारी गिरधारी चुनरिया।
भीज गयी मोरी सारी, चुनरिया।। रंग डारी

बाराजोरी कर रंग डार दियो है,
ऐसौ निपट अनारी, संवरिया।। रंग डारी

उड़त गुलाल लाल भये बादर,
केसर की पिचकारी, चुनरिया।। रंग डारी

बाजत बीन, मृदंग, झांझ, ढफ,
गावत दै दै तारी, चुनरिया।। रंग डारी

श्यामा श्याम मिल होरी खेलैं,
तन मन धन बलिहारी, चुनरिया।। रंग डारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (दादरा)

स्थाई

ग	म	ग॒	रे	म	म	प	प	धप	म	ग	म
रं	ग	डा	री	गि	र	धा	री	चुऽ	न	रि	या
×			×			×			×		
ध	ध	ध	नी॒	प	ध	(सां)	नी॒	धप	म	ग	म
भी	ज	ग	यी	मो	री	सा	री	चुऽ	न	रि	या
×			×			×			×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

नोट : अन्तरे की प्रथम कड़ी ताल में नहीं गायी जायेगी। दूसरी कड़ी कहरवे में गायी जायेगी। यही क्रम सब अन्तरों में होगा।

ग	म	प	ध	नी	सां	नी	सां	–	–	–	–
बा	रा	जो	री	क	र	रं	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

नी	–	नी	सां	सां	(सां)	नी	ध	–	–	–	–
डा	ऽ	र	दि	यो	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

कहरवा

–	ध	–	ध	ध	नी	प	ध	पध	नी	ध	प	म	ग	म	–
ऽ	ऐ	ऽ	सौ	नि	प	ट	अ	नाऽ	ऽ	री	सं	व	रि	या	ऽ
×				×				×				×			
–	ग	म	ग	रे	रे	म	म								
ऽ	रं	ग	डा	ऽ	री	गि	र		धारी				चुनरिया		
×				×											

नोट : गीत की शेष पंक्तियां उपरोक्त प्रकार से ही गायी जायेंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली

लाला तुम रोको न बाट हमारी।

बरबस मत तकरार मचाओ,
पिचकारी हम पर न चलाओ।
हम ब्रज की ब्रजनारी, हो नारी।। लाला

बात सुनौ मोर मन बसिया,
हमका गाय सुनाओ रसिया।
हम तुम पर बलिहारी, हो वारी।। लाला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होली (चाचर)

स्थाई

												ग	—
												ला	ऽ
गम	रेग	—	म	—	प	ध	म	—	—	ग	—	सा	—
लाऽ	ऽऽ	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ	रो	ऽ	ऽ	को	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
सा	—	—	$^{\text{ग}}$रे	—	ग	—	म	—	—	म	—	ग	—
बा	ऽ	ऽ	ट	ऽ	ह	ऽ	मा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	–	रे	–	ग॒	–	सा	रे	–	ऩी	–	सा	–
ब	र	ऽ	ब	ऽ	स	ऽ	म	त	ऽ	त	ऽ	क	ऽ
×			2				0			3			
रे	ग	–	म	–	प	ध	म	ग	–	म	–	–	–
रा	ऽ	ऽ	र	ऽ	म	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
ग	म	–	रे	–	ग॒	–	सा	रे	–	ऩी	–	सा	–
पि	च	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ह	ऽ	म	ऽ
×			2				0			3			
रे	ग	–	म	–	प	ध	म	ग	–	म	–	–	–
प	र	ऽ	न	ऽ	च	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
नी	नी	–	नी	–	नी	–	सां	(सां)	–	नी॒	ध	प	ध
ह	म	ऽ	ब्र	ऽ	ज	ऽ	की	ऽ	ऽ	ब्र	ऽ	ज	ऽ
×			2				0			3			
म	ग	–	ग	म	रे	ग	म	धप	ध	म	–	ग	–
ना	ऽ	ऽ	री	ऽ	हो	ऽ	ना	ऽऽ	ऽ	री	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			

नोट : गीत का दूसरा अन्तरा भी इसी प्रकार गाया जायेगा।

●●●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित्रों में जीवन

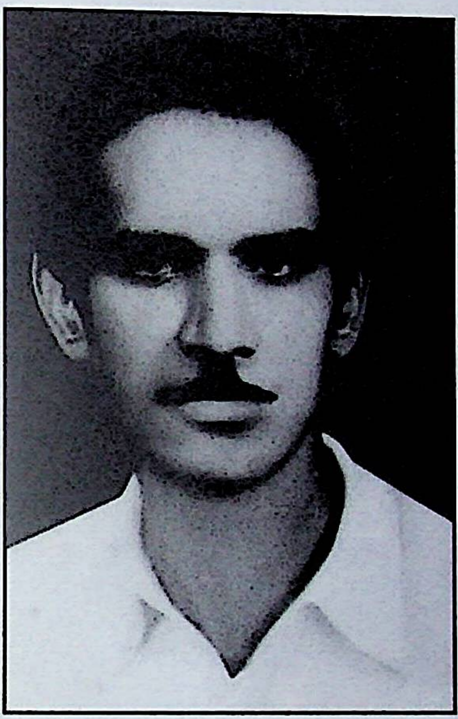

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

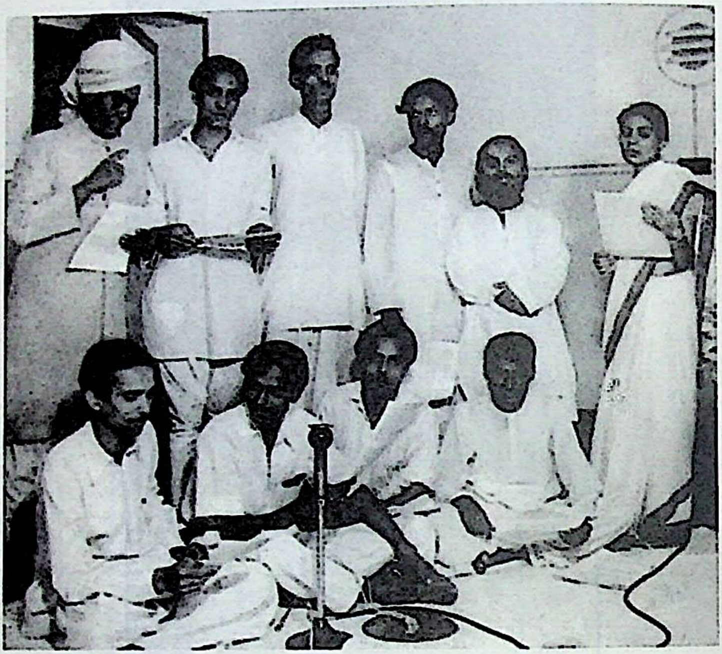

आकाशवाणी लखनऊ के स्टूडियो से 'पंचायतघर' का प्रसारण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संगीत की महफ़िल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

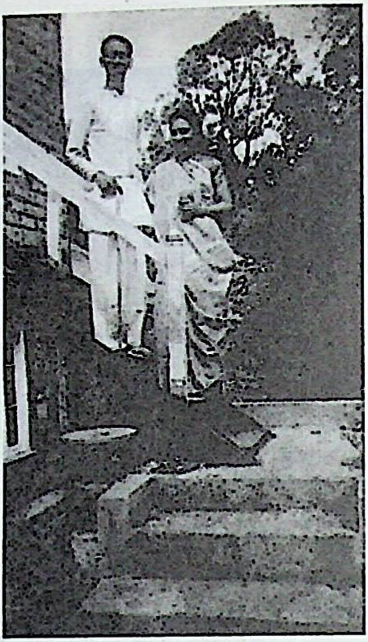

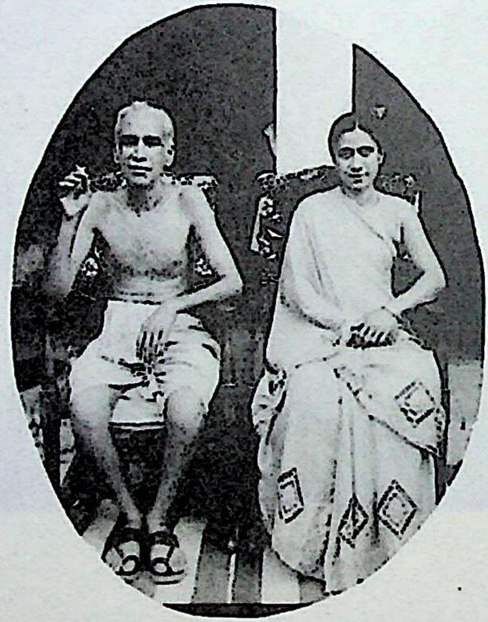

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी एवं पत्नी श्रीमती रम्भा चतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

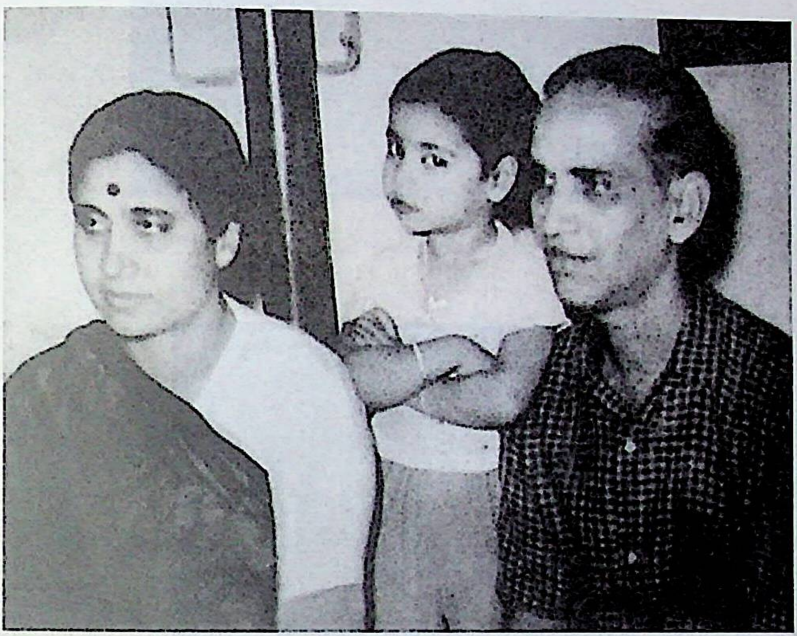

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी अपनी पत्नी श्रीमती रम्भा चतुर्वेदी
एवं बेटी नीलम के साथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

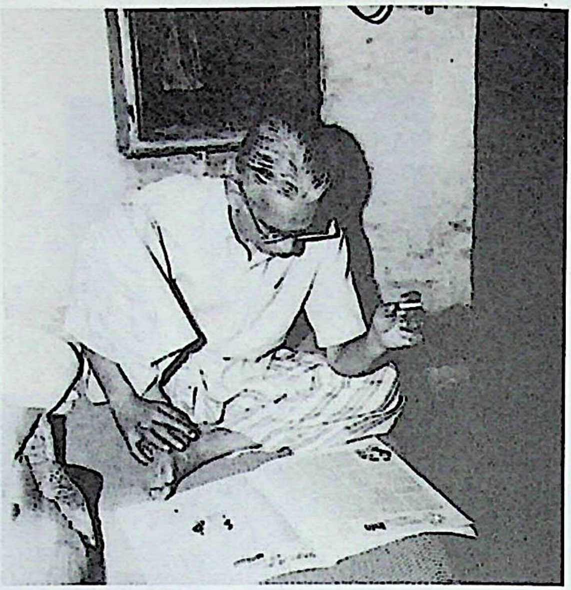

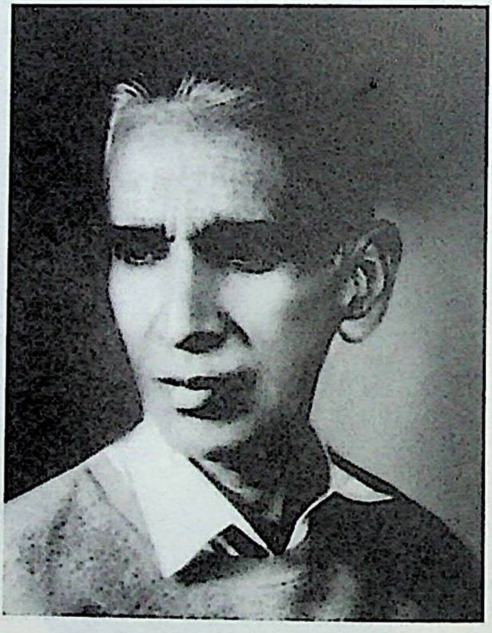

संगीत के लिए समर्पित जीवन
पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Di

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ध्रुपद, धमार, ख़याल, ठुमरी, ग़ज़ल आदि सभी शैलियों के निष्णात गायक रहे, लेकिन लोकगीतों के क्षेत्र में उनका एकाधिकार सर्वमान्य एवं निर्विवाद है।

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी कृत 'ऊंची अटरिया रंग भरी' पुस्तक में सरिया, सोहर, मूड़न, जनेऊ, टोना, जेवनार, विदाई, चकिया, पनघट, कजरी, झूला, चौमासा, चैती, सोहनी, झूमर, रसिया, देवीगीत, धमार आदि कई प्रकार के 106 लोकगीत स्वरलिपि एवं परिचय सहित मुद्रित हैं।

इसके अतिरिक्त संगीत के सिद्धांत पक्ष पर एक सर्वजन सुलभ एवं प्रामाणिक ग्रंथ 'सा रे ग म' लिखकर पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने स्तुत्य प्रयास किया। पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी संगीत की शास्त्रीयता और उसकी जटिलता की खराद पर हमेशा ख़ुद को तराशते रहे। लोकगीतों को रागबद्ध करने में शास्त्रीय निपुणता की एक बड़ी आवश्यकता को उन्होंने पूरा किया।

Dr. Urmila Sharm

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पारम्परिक लोकगीतों को संकलित व स्वरलिपिबद्ध करके संगीत शिल्पी पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी ने शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत के मध्य सेतु बांधकर उन्हें भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

— शेखर सेन
अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादेमी

'ऊंची अटरिया रंग भरी' में सरिया, सोहर, अन्नप्राशन, मूड़न, जनेऊ, विवाह, द्वारचार, कलेवा, जेवनार, विदाई, चकिया, पनघट, कजरी, चौमासा, चैती, सोहनी, झूला, झूमर, रसिया इत्यादि कई प्रकार के गीत स्वरलिपि में प्रकाशित किये जा रहे हैं। प्रत्येक प्रकार के गीत का पहले संक्षिप्त वर्णन किया गया है, उसके बाद वह गीत स्वर और लय में मुद्रित किया गया है।

— जयदेव सिंह
पूर्व अध्यक्ष, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी

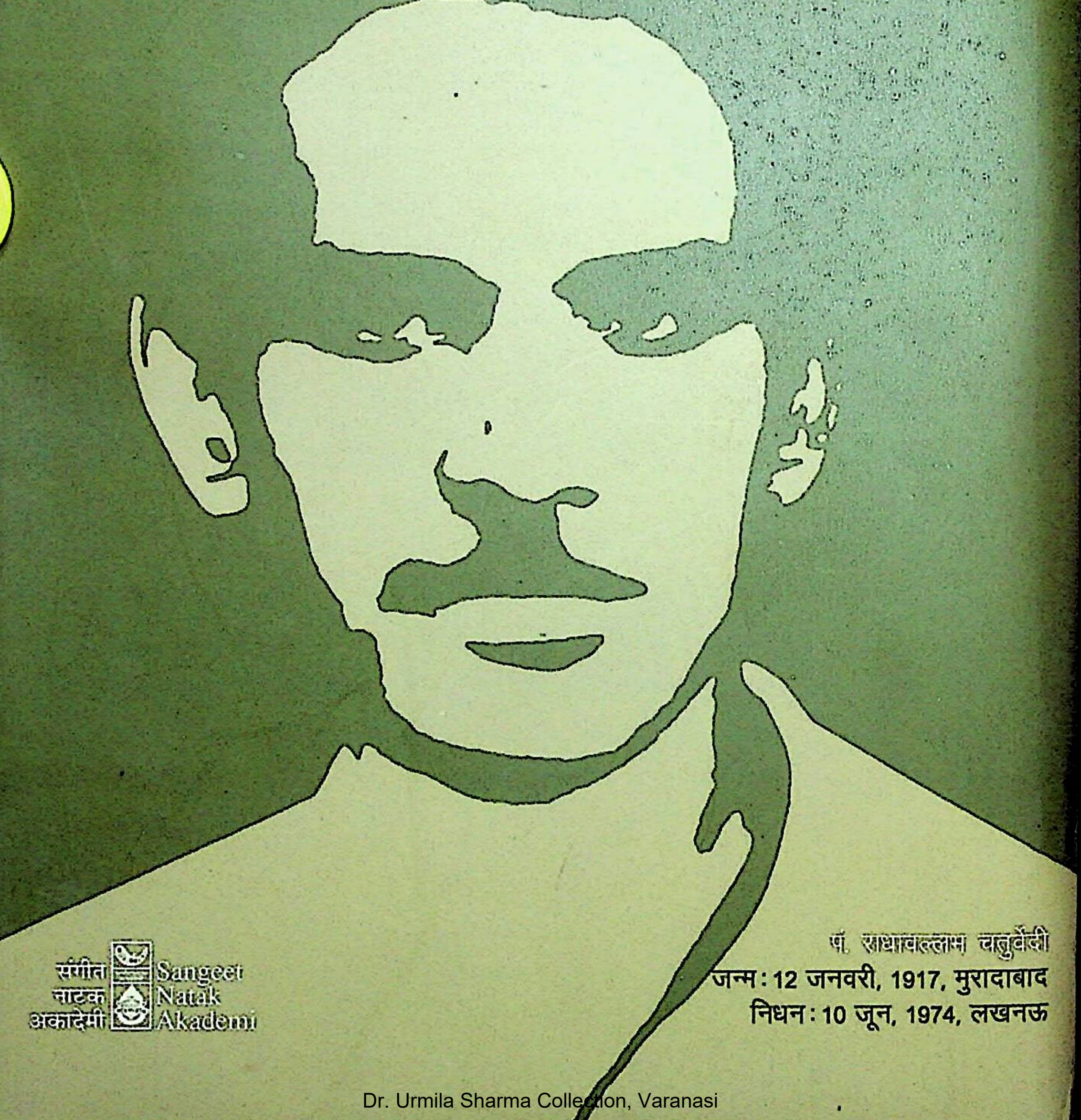

पं. राधावल्लभ चतुर्वेदी
जन्म : 12 जनवरी, 1917, मुरादाबाद
निधन : 10 जून, 1974, लखनऊ

संगीत नाटक अकादेमी
Sangeet Natak Akademi

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi